उड़िया कालजयी कृति

छओ बिगहा आठ कट्ठा

फकीर मोहन सेनापति

MT
891.451 3
Se 55 C

साहित्य अकादेमी

MT
891.4513
Se55C

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कए रहल छथि। हिनकालोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिवद्ध कए रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

छओ बिगहा आठ कट्ठा

(उड़िया उपन्यास)

लेखक

फकीर मोहन सेनापति

अनुवादक

रमानन्द झा 'रमण'

साहित्य अकादेमी

Chhao Bighha Aath Kattha : Maithili translation by Ramanand Jha 'Raman' of Fakir Mohan Senapati's Oriya novel *Chhaman Atha Guntha*. Sahitya Akademi, New Delhi (1999), Rs. 60.

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९९

Library IIAS, Shimla
MT 891.451 3 Se 55 C
00117079

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा भवन, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२
३०४-३०५, अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई ६०० ०१८

मूल्य : साठि टाका

MT
891.451 3
Se 55 C
117079
9.12.04
SHIMLA

ISBN 81-260-0622-6

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली ११० ०३२

पूर्विका

गत शदीक उत्तरार्द्धमे भारतक प्राय: समस्त भाषाक साहित्यमे एक उत्थान सन आएल छल । साहित्यिक गतिविधिक सक्रियता सभठाम देखल जाए लागल छल । मुख्य कारण छलैक पश्चिमी विद्या आ नव भौतिक चेतनाक प्रभाव । ई प्रभाव एहि सक्रियताकेँ धक्का सन मारि आगू ससारब शुरू कए देने छल । मध्य कालक कविता पर संस्कृतक विधाक विधि सभक जे राज छल, से समाप्त भए गेल । अंग्रेजी साहित्यसँ प्रेरित नव प्रयोग ओकर स्थान ग्रहण करब शुरू कए देलक । जीवनक प्रति साहित्यक दृष्टिकोण पूर्वक अपेक्षा विशेष प्रत्यक्ष आ यथार्थवादी भए गेल । प्रिंटिंग प्रेसक आगमनसँ पोथीक बजारमे एक क्रन्तिए आबि गेल । गद्य आ विशेषत: कथा साहित्य, कवितासँ कतेको वेशी प्रमुख स्थान प्राप्त कए लेलक ।

एहि नवयुवक संग जाहि उड़िया गद्यक आ कथा साहित्यक जन्म भेल, तकर जनक फकीर मोहन सेनापति मानल जाइत छथि । १८५७ ई. मे भारतक स्वाधीनताक हेतु जे प्रथम संग्राम भेल, ताहि समय ओ चौदह वर्षक छलाह । गद्यकेँ हुनक जे देन अछि, ताहि मे प्रमुख अछि हुनक चारिटा उपन्यास, कथाक एक संग्रह आ एक अपूर्ण आत्मकथा जाहि मे आदिम जातिक कोनो विद्रोहकेँ सफलतापूर्वक समाधान कएनिहार शासन अधिकारीक साहसिक कृत्य आ मनोरंजनक दाओ-पेंचक विवरण भरल अछि ।

छओ बिगहा आठ कट्ठा फकीर मोहन सेनापतिक सर्वोत्तम कृति थिक । एहि उपन्यासकेँ ओ पचपन वर्षक पूर्ण परिपक्व अवस्थामे लिखने छलाह आ तकर बाद बीस वर्ष धरि औरो जीवैत रहलाह । अंग्रेजीक अत्यन्त स्वल्प आ सामान्य शिक्षा प्राप्त कए ओ उड़ीसाक विभिन्न क्षेत्रमे शासन-कार्यक भार सम्हारैत रहलाह । ताहिसँ सामान्य लोकक दशाक प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कए लेने छलाह । एहि प्रकारेँ पर्याप्त आ विविध रंगक अनुभवकेँ आत्मसात् कएलाक पश्चात्, जे फल भेल अछि से थिक *छओ बिगहा आठ कट्ठा* ।

एहि कथाक ध्यान-धारणा, एकर भाषा आ एहि मे चित्रित चरित्र सभक जड़ि देशक माटिमे बहुत नीचा धरि गेल अछि । शेख दिलदार मिदनापुरक एक पैघ जमीनदार छल । ओकर जमीनदारी उड़ीसामे छलैक । रामचन्द्र मंगराज ओही जमीनदारीक सेवा करैत छल । लगानक ओसूलीमे तँ ओ सवा सोलह आना यमदूत छल । परंच ओसूलीक उपरान्त ओकर अधिकांश राशि ओ स्वयं पचा लेल करैत छल । अपन मालिक दिलदारकेँ ई कहि कहि ओ ठकैत छल जे जजात मारल जाइत अछि, तेँ कृषक लगान देबा मे असमर्थ रहैत अछि ।

दिलदार अपन कर्मचारीक कथनक सत्यता-असत्यताक पता लगेबाक चिन्ता कहियो

नहि कएल । हेतु जे ओ पीयाक छल । रामचन्द्र मंगराजसँ ऋण लए-लए पीयब आ पीवि कए मत्त रहब, बस एहीसँ ओकरा पूर्ण सन्तोष छलैक । एकर अतिरिक्त आओर कोनो बातक ओकरा चिन्ता नहि छलैक । की ओकरा ई बूझल छलैक, जे रुपैया ओ ऋण लैत अछि से वस्तुतः ओकरे जमीनदारीक कर थिकैक ? मंगराज अपन मालिकक मूर्खता कारणेँ फड़ैत-फुलाइत रहल ।

ओही गाम गोविन्दपुरमे एक तांती परिवार रहैत छल । दुइए प्राणी छल । पति भगिया आ पत्नी सारिया । संयोगवश ओकरा किछु जमीन एहन छलैक जकर उपजा गामक आन समस्त खेतसँ नीक होइत छलैक । ओकरे नाम पर एहि उपन्यासक नाम अछि *'छअ माण आठ गुंठ'* माने *छओ बिगहा आठ कट्ठा* । उर्वरा भूमिक ओहि छोट सन कोला पर राम चन्द्र मंगराजक लोभ दृष्टि पड़ि गेल । ओ एकरा कब्जा करबाक संकल्प कए लेल । भगिया आ सारिया सन्तानहीन छल, जे एकर उत्तराधिकारी होइतैक । सन्तानक आकांक्षा होएब स्वाभाविके छल । धूर्त मंगराज एहि विषयकेँ नीक जकाँ बुझैत छल । ग्राम्य देवीक पूजेगरीक संग प्रपंच रचि ओ भगिया आ सारियाकेँ ठकबाक षड्यंत्र कएलक । एहि काजक भार ओ चम्पा नामक पथभ्रष्टा स्त्रीकेँ देल । चम्पा ओकर पाप संगिनी छल ।

ओहि सुधंग तांती केँ ई भरोस दिएबामे चम्पाकेँ कोनो असुविधा नहि भेलैक । ओ पूजेगरीक माध्यमे ग्राम्य देवीक ई इच्छा प्रकट करओल जे उचित पूचा अर्चना कएला पर पुत्रवान होएत । एहि प्रस्तावकेँ सारिया आतुरतापूर्वक स्वीकार कए लेलक । देवीक पिंडाक नीचा गुप्त रूपसँ पैघ-सन एक खाधि खूनि लेल गेल । मंगराजक एक पापसंगी ओहिमे नुका रहल । पूजाक उपरान्त जखन भगिया आ सारिया दम्पति पुत्र प्राप्ति हेतु गोहारि करए लागल तँ खाधिमे नुका कए बैसल व्यक्ति चिचिया उठल, 'हमर एकटा मन्दिर बना देला सँ तोरा धन आ सोनाक कोनो अभाव नहि रहतौक । तीनटा बेटा होएतौक । आ हमर आदेश नहि मानबें तँ हम भगियाकेँ उठा लेबौक ।'

चम्पाक विचारसँ भगिया मंगराजक ओहिठाम गेल । मंदिर बनएबाक हेतु अपन एक मात्र खेत भरना राखि ऋण लए लेलक । फल भेलैक मंगराजक ओहि खेत पर अपन कब्जा । अत्यन्त दरिद्रता आ निराशाक कारणेँ भगिया बताह भए गेल । ओ पकड़ि लेल गेल । ओकर अभागलि पत्नी सारिया मंगराजक साध्वी पत्नीक भीख पर कोनो प्रकारेँ दिन खेपैत रहलि । दुख आ असहायताक आघातकेँ सहबामे असमर्थ भए गेलि । अन्ततः ओहो नहि रहलि ।

एहि अर्जित धनक भोग मंगराज सेहो वेशी दिन धरि नहि कए सकल । गामक चौकीदार पुलिसकेँ ई खबरि दए देने छल जे भगियाक पत्नीक मृत्युक कारण मंगराजे थिक, ओएह मारैत-मारैत ओकर जान लए लेने छलैक । मंगराज पकड़ि लेल गेल । मुदा गवाही नहि भेटलैक । भगियाक गाय चोरा लेबाक अपराधमे ओकरा मात्र छओ मासक सश्रम जहलक सजाय भेटलैक ।

जहलमे किछु बन्दी एहन छल जकरा मनमे मंगराजक प्रति वैरभाव छलैक । एहि हेतु जे ओहि बन्दी सभक दुर्भाग्यक कारण मंगराजे छल । आब मंगराज ओकरेसभ जकाँ

मात्र एक बन्दी छल । तँ ओसभ मंगराजकेँ चुटकी लेब अथवा कूटब-पीसबक कोनो अवसर केँ जाए नहि दैत छल । ओम्हर ओकर पाप-संगिनी चम्पा आ ओकर टहलू गोविन्द ओकर शेष बचल टाका आ गहना-गुड़िया बाहर कए चंपत भए गेल । लूटिसक एहि मालक बखरा-बांटकेँ लए दूनू गोटेमे झंझट भए गेलैक । सुतलमे चम्पाक हत्या गोविन्द कए देलक । फेर पकड़ल जएबाक आतंकसँ अपनहु धारमे कूदि डूबि मरल ।

मंगराजक जीवन जहलमे अत्यन्त दयनीय भए गेल छल । बन्दी सभ जखन-तखन ओकरा धोपिते रहैत छलैक । बताह भगिया ओकर नाक हबकि लेने छलैक । मंगराज जखन मरणासन्न भए गेल तँ छोड़ि देल गेल । ग्राम अएला पर देखलक जे घर मे किछु नहि अछि । शून्य आ भकोभन्न अछि । मृत्यु-शय्या पर पड़ल-पड़ल पश्चात्ताप करैत छल । ओ अपन ओहि धर्मात्मा पत्नीक स्वप्न देखैत रहैत छल जे ओकर उपेक्षासँ पहिने मरि गेलि छलथिन । मरैत काल पत्नीकेँ मोन पाड़ि ओ त्राण आ शान्ति ताकि रहल छल ।

कथानक अत्यन्ते करुण अछि । तथापि एकरा कुशल हाथ आ हास्य-व्यंग्य शैलीमे निबाहल गेल अछि । भाषा सहज-सरल आ गप्प-शप्पक अछि । एहने अछि ई *छओ बिगहा आठ कट्ठा*-जीवन आ समाज पर एक सशक्त व्यंग्य । कथाक परिधानमे ई एक गम्भीर अध्ययन थिक । ई एहि प्रकारेँ लिखल गेल अछि जे जीवनक गम्भीरताकेँ जीवनक आनन्द आ विसंगतिसँ फराक करब सहज नहि अछि । जाहि समस्याक विवेचना एहिमे कएल गेल अछि से अपन समाजक एहि आधुनिक परिवेश मे सेहो कोनो ने कोनो रूप मे जेना-तेना विद्यमान अछि । इएह विषय एहि पोथीक जीवनमयी उच्छलताक परिचायक अछि । एकर विशेषता अछि । उड़िया जीवनक समस्त यथार्थताक कोनो मानचित्र अंकित करब कतहु संभव होइत तँ ओहि मे सँ *छओ बिगहा आठ कट्ठा* क कोनो पात्र केँ ने तँ बाहर कएल जा सकैत छल आ ने ओकर स्थान पर कोनो आनकेँ रखले जा सकैत छल ।

मंगराज, चंपा आ गोविन्दा सन दुष्टो ओही दयनीय गतिकेँ प्राप्त करैत अछि जेनाकि मंगराजक पत्नी, भगिया आ सारिया सन निरीह धर्मात्मा आ साधु प्राणीक भेल करैत छैक । मृत्युक समय मंगराजकेँ जे कटु पश्चात्ताप भेल छल आ जाहि प्रकारेँ ओ अपनाकेँ कोसने छल, ताहि सँ लेखकक इएह विश्वास प्रकट होइत अछि जे कुलिष-हृदय वधिकोक हृदय परिवर्तन भए सकैत अछि । उपन्यासक प्रत्येक घटना आ प्रत्येक चरित्र जीवनक यथार्थक प्रतिबिम्ब थिक आ एहि मार्मिक करुण कथाकेँ हास्य एवं व्यंग्य जीवन्त बना देलक ।

चित्रणदोषसँ सर्वथा मुक्त चित्रांकन, यथार्थपूर्ण जीवन चित्र एवं लेखकक अनुकरणीय शैली *छओ बिगहा आठ कट्ठा* केँ कलाक चरम उत्कर्षक एक कृति बना देलक अछि । कालान्तरमे एहि कथा एवं एहिमे विवेचित समस्याक अर्थवत्ताक महत्त्व यद्यपि कम भए सकैत अछि, मुदा मानव-स्वभावक मौलिक तथ्य तथा जीवनक मौलिक मूल्य तथापि सदा बनल रहत आ उड़िया साहित्यक चरम उत्कर्षक एक कृतिक रूपमे ई पुस्तक आकर-साहित्यक जे पद प्राप्त कएलक अछि, से गुण सदा अक्षुण्ण रहत ।

—कालिन्दी चरण पाणिग्रही

अनुक्रम

प्रथम परिच्छेद	११
दोसर परिच्छेद	१४
तेसर परिच्छेद	१७
चारिम परिच्छेद	१९
पाँचम परिच्छेद	२१
छटम परिच्छेद	२३
सातम परिच्छेद	२७
आठम परिच्छेद	३०
नवम परिच्छेद	३७
दशम परिच्छेद	४२
एगारहम परिच्छेद	५०
बारहम परिच्छेद	५२
तैरहम परिच्छेद	५८
चौदहम परिच्छेद	६४
पन्द्रहम परिच्छेद	६९
सोलहम परिच्छेद	७१
सतरहम परिच्छेद	७७
अठाहरम परिच्छेद	७९
उन्नैसम परिच्छेद	८६
बीसम परिच्छेद	९८
एकैसम परिच्छेद	१०१
बाइसम परिच्छेद	१०६
तैसम परिच्छेद	११२
चौबीसम परिच्छेद	११६
पचीसम परिच्छेद	११९
छबीसम परिच्छेद	१२१
सताइसम परिच्छेद	१२३
उपसंहार	१२६

प्रथम परिच्छेद

रामचन्द्र मंगराज

रामचन्द्र मंगराज देहाती जमीनदार छथि, आ महाजन सेहो छथि । नगदी कारवारक अपेक्षा धानक लगानी बेसी छनि । सुनैछी जे एहि परोपट्टाक चौकोसीमे आर ककरो लगानी नहि चलैत छैक । लोक छथि बड़ धार्मिक । वर्षमे चौबीस टा एकादशी होइत अछि, जँ चालीस टा होइतैक तैओ एकोटा छोड़ितथि कि नहि, से कहब कठिन । जल आ तुलसी-दल इएह एकादशी दिन अवलम्ब होइत छनि । ओहि दिन बेरखन मंगराजक खबास जगा नौआ गप्प करैत बाजि गेल जे प्रत्येक एकादशीक साँझमे मालिकक सुतबाक कोठली मे सेर भरि दूध, कनेक लाबा, कन्द-मूल, पाकल केरा आदि द्वादशीक पारण लेल राखि देल जाइछ आ जगा द्वादशीक दिन भोरहरियेमे उठि खाली बासन मँजैत अछि । ई सुनि कतेको गोटे एक-दोसरक मुह ताकि-ताकि बिहुँसए लगाल छल । एक गोटे तँ इहो कहि देलकैक, 'डूबि कए पानि पीबी तँ महादेवक बापो नहि जानि पओताह'। एकर तात्पर्य तँ परिछाएल नहि, मुदा हमसभ ई अनुमान कएल जे गप्प निन्दाक थिक । छोड़ू ओकर गप्प । हमरालोकनि तँ ओकालतियो कए सकैत छी । बासन खाली करबाक काज मंगराजे कएलनि से के देखलक अछि ? अनुमान कएल वा उड़ंती गप्पकेँ प्रामाणिक मानि लेब कौखन ठीक नहि । कचहरिया हाकिम सभ ठीक एही विचारक छथि । एक बात आर विज्ञानक कहब छैक, जतेक तरल पदार्थ अछि सभ भाफ बनि उड़ि जाइत अछि । दूध सेहो तरल पदार्थ थिक । दूध, जमीनदारक घरक थिक तेँ कि विज्ञानक नियम डराए जाएत ? आओर देखू ; ओहि घर मे मूस-मुसरी, छुछुन्दरि आदि सेहो तँ रहले होएतैक ? उड़ीस, माछी, मोस आदि कोन घरमे नहि रहैत छैक ? संसारक सभ जीव-जन्तु पेटक पाछाँ छिछिआइत रहैत अछि । ओसभ मंगराज जकाँ विशेष कए 'हरिभक्तिविलास' ग्रन्थक माहात्म्य तँ कहियो नहि सुनने होएत । एतबेसँ मंगराजक धर्मनिष्ठा पर शंका करब हम महापाप बुझैत छी ।

ततबे नहि, न्यायाधीशगण पार्श्ववर्ती घटनावली पर ध्यान राखथि ताहि हेतु साक्ष्य अधिनियममे विशेष उपबन्ध अछि । माछ वा सुकठीक गप्पे कोन मंगराज कहियो उसिना चाउर धरि नहि छूबैत छथि । द्वादशी दिन ब्राह्मण-भोजनक उपरान्ते पारण करैत छथि । मंगराज बड़े चतुर लोक छथि । ब्राह्मण भोजन-सन एहि महान काजमे कखनहु अनट-बिनट ने भए जाए, तकर खूब पक्का व्यवस्था कए लेने छथि । एक केओट आ एक हलुआइकेँ एक-एक बिगहा जमीन एकरा तरेँ दए देने छथि । एहि प्रकारेँ हुनक दू बिगहा

जमीन एही निमित्त गेल छनि । द्वादशी दिन अन्हरोखे केओट दू पसेरी चूड़ा आ हलुआइ चारि-चारि तोलाक बीस भेली गुड़ पहुँचा जाइत छनि । गोविन्दपुरक बभन टोलीमे सताइस घर ब्राह्मण छथि । सभनोतल जाइत छथि । छओ बाजल कि नहि ब्राह्मण भोजन समाप्त भए जाइत अछि । मंगराज अपने परसि हुनका खुअबैत छथि । भात पर चूड़ा आ गुड़ परसि मंगराज कल जोड़ि लैत छथि आ जोर-जोर सँ पूछैत छथिन, 'नौथारी सभ, बाजू किछु आओर चाही ? चूड़ा पर्याप्त अछि । गुड़ो पर्याप्त अछि । मुदा, हमरा तँ बूझल अछि, अपनेलोकनिक आँखि पैघ होइत अछि, पेट नहि । हमरा लगैत अछि, एतबहिसँ अछओँ भए गेल ।' तथापि जँ कोनो अधक्की बाभन माँगिये लै छथिन तँ मालिक तीन आँगुरक चुटकीसँ पाँच-सात चुटकी चूड़ा पात पर झट-झट पटकि दैत छथि । एकर बाद नौथारी थैहर -थैहर कहैत पैघ-पैघ ढेकार करैत छथि आ आर्शीवाद दैत पात परसँ उठि जाइत छथि । ब्राह्मण-भोजनक बाद किछु तामा चूड़ा आ दसेक भेली गुड़ बचि जाइछ । मंगराज भक्तिपूर्वक शेष गुड़-चूड़ाक सेवन करैत छथि । पाठकबन्धु, अहाँ पूछब पसेरी भरि चूड़ासँ सताइस घर ब्राह्मणक पेट कोना भरि गेलनि ? राम कछू ! एहि बातक उत्तर देमय लागी तँ आगू लिखनाइए रुकि जाएत । ईसा मसीह दू टा सोहारीसँ बारह सए लोककेँ खुऔने छलाह आ चारि टुक्का बचिओ गेल छलनि । काम्यक-वनमे श्रीकृष्ण दुर्वासाक बारह हजार चेलाक पेट एक रती सागसँ भरि देने छलाह । एहि महापुरुषक हाथक महिमा पर जँ अहाकेँ विश्वास नहि हो, तँ एहना स्थितिमे हम अपने सँ ई मंगराज चरित्र पढ़बाक अनुरोध करबाक साहस नहि कए सकैत छी ।

लोक बजैत अछि, एक बेर हुनक मसियौत श्याम मल्लजी शहर गेल छलाह । पाप तँ नुकौलो पर नहि नुकाइछ । कुसंगमे पड़ि पिआजु देल कोबीक तरकारी खा लेने छलाह । ई बात मालिकक कानमे पड़ि गेल । आइओ श्यामक केस खुटिअएले होएतनि । मालिक बड़ थोड़ खर्च मे, अर्थात् डेढ़ बाटी* (तीस बिगहा) पैतृक लाखराज जमीनसँ केवल पनरह बीघा जमीन लिखाए हुनक उद्धार कए देलथिन ।

एक दिन श्यामकेँ बजा कए अपन लोक जकाँ कहल—'देखह श्याम । आब कनेक चेत कए रहल करह । सोचह, हम नहि रहितिअहु तँ तोहर की हाल होइतहु ? तोरा जे जातिभाइ उठा लेलकहु, से हमरे मुह देखि ने । नहि तँ तोँ पूरा क्रिस्ताने भए जइतह । तोहर सात पुरखा एहि नरकमे सड़ैत रहि जैतथुन्ह । आ जँ हम नहि रहितिअहु तँ तोहर जमीनकेँ दुइओ टके कट्ठा केओ नहि पुछितहु । हमही छलहुँ जे पाँच टके कट्ठा दए देलिअहु । कतबो अधम छह, होएबह तँ भाइए । कहह तँ तोरा उठा कैँ फेकि कोना दिति-अहु । छोड़ह, जे भेल से भेल । बेर-विपति पड़ला पर तँ छिअहुए ने ! हँ, ई अवश्य जे भला युगक संसार नहि छैक । मोन छहु ? ओहि दिन भीमा गोड़ बला फौजदारीमे तोरा गवाह बनेबाक इच्छा भेल तँ तोँ पतनुकान लए लेहह ?

---

* २० 'माण' क चक (1 बाटी = 20 माण) ।

हाय ! हाय ! जे चुगला सभ ईसाकेँ सूली पर लटकौलक, परम सती सीताकेँ वनवास पठौलक, तकर वंशधरसभ जँ हरिवासरव्रती परोपकारी मंगराजक बदनामी पसारैत अछि तँ से कोनो आश्चर्य नहि । कुचेष्टी सभ जे बात पसारि देने अछि, तकर चर्चा तँ विवश भए करहि पड़ि जाइत अछि । ओ सभ कहैत फिरैत अछि, परोपट्टामे बीतो भरि जमीन ककरहु नहि रहए देलथिन । बाँचल छलनि एकमात्र हुनक भाएकेँ । से हुनको जमीन दखल करबाक बहाना तकैत-तकैत अन्ततः एक दिन ताकिये लेलनि । पिआजु खा लेबाक प्रायश्चित्तमे श्यामसँ तँ ब्रह्मण-भोजन कराओल गेल, परंच मंगराजक घरक स्त्रीगण चम्पाकेँ हाट पठा कए जे पिआजु मँगबैत छथि, से किएक ? गप्पक क्रममे मानि लेल जे चम्पा पिआजु कीनि अनैत अछि । परन्तु ताहिसँ की ? कीनि लेल, कीनि तँ लेल, मुदा खएलनि तकर प्रमाण ? पलाण्डुं गुंजनं चैव एहि वचनमे केवल खाएब मना कएने छथि मनु । किनलासँ केओ पतित भए जाए से विधान कहाँ छैक शास्त्र मे ? नीक लोकक घरक स्त्रीगणक दोष-अदोषक आलोचना कएनिहार कुचेष्टीक बातक उत्तर देबा लेल हम रतिओ भरि तैयार नहि छी ।

दोसर परिच्छेद

स्वनामपुरुषो धन्यः

मंगराज गरीब घरक सन्तान छलाह । सुनैत छी, ओ साते वर्षक अवस्थामे दुग्गर भए बौआय लगलाह । पाइक अभावमे बापक श्राद्ध धरि नहि भए सकलनि । घर नहि छरओलासँ भीत ढहि गेलनि । हिनक बाल्य जीवन, शिक्षा-दीक्षा आ कर्मक्षेत्रमे प्रवेशक घटना विचित्र तरहक अछि । संसारक कोनहु प्रमुख व्यक्तिक जीवन-चरित्र अलौकिक घटनासँ रहित नहि होइत अछि । ओ सभ लिखबा लेल बहुत राश कागत -मोसि चाही । बहुत राश समय सेहो चाही । सारांश एतबे जे मितव्ययिता कतेक पैघ गुण थिक, एहि विषयमे मंगराज हमरा सभक दीक्षागुरु थिकाह । बेजामिन फ्रैंकलिन अर्थनीतिक प्रसंग जे उपदेश दए गेल छथि तकर मर्म हम इएह बूझल अछि । कागज बजारसँ कीनि आनब तँ बड़ सुविधगर अछि, मुदा ओकर उपयोग करब महा कठिन काज थिक । आब हम सभ बात ठीक-ठीक लिखि कए मंगराजी अर्थनीतिक रक्षाक चेष्टा करब ।

मंगराजक जमीनदारीक नाम थिक फतेहपुर सरसंड । पाँच हजारक मिलकिअति, अट्ठाइस बाटी लाखराज जमीन । जब्ती जमीन पन्द्रह बाटी आ सताइस माण । सताइस माण फुटा कए एहि कारणें जे एहिमे सात माणक केओ पट्टीदार अछि जे जजक अदालत मे अपील कएने अछि । लोक बजैत अछि, चालीस-पचास हजार रुपैयाक महाजनी छनि । पैघ लोकक पैघ बात । हमर अपन अनुमान अछि जे महाजनी पन्द्रह हजारसँ वेशी नहि होएतनि । गप्प हाँकब हमर धर्म नहि थिक । आयकरक लोकक मुहेँ जे सुनल से कहि रहल छी । धानक महाजनीक हिसाब-किताब तँ करीब बीस वर्षसँ साफ भेल अछि । तेँ ठीक-ठीक कहबा मे असमर्थ छी । विगत सोनिया ÷ (सालतमामी)क दिन धानक भण्डारी जे सलाना हिसाब देने छलथिन तदनुसार बखारीमे कुल जमा दू हजार सात माण* पन्द्रह गौणी, सात बिसबा आ दू काणी छनि । घर पाँच अलंगक छनि । तीन अलंगमे तीनू बेटा रहैत छनि । एक अलंगमे मालिक-मलिकाइनि अपने आ छोटकी बेटी मालती रहैत अछि । बाहरक पाँचम अलंगमे कचहरी छनि । कचहरी बला घरमे पाँच धरैनि अछि । धरैनि पर

÷ भादब सूदि द्वादशी । उड़िया वर्ष एही दिनसँ शुरू होइछ । नवका वही-खाता शुरू कएल जाइछ । गत वर्षक हिसाव सोनाक चीच पाड़ि काटल जाइछ । तेँ सोनिया

* 4 कानी =1 विसवा, 16 विसवा=1 गौणी, 80 गौणी=1माण, 11 गौणी =12 सेर

बाघ, हाथी, बिलाड़ि, राधा-कृष्ण, बानर आदि खोघल अछि । देवाल पर नील, लाल, हरियार, गुलाबी आदि विविध रंगमे कमल, कुमुदिनी, कुन्द, मालती फूलमाला, आ बानर-दल, राक्षस-दल आदिसँ युक्त राम-रावण-युद्ध आदि पौराणिक घटना अंकित अछि ।

राजपूतानाक कोनो स्थान पर कोनो विवस्त्र स्त्रीमूर्तिकेँ देखि टाड साहेब अनुमान कएल जे प्राचीन कालमे भारतक स्त्रीगण नङटे रहैत छलीह । हाए रे दुर्भाग्य ! आइ हम मंगराजक देबालक चित्र देखा कए ओहि टाड साहेबक अज्ञानकेँ दूर नहि कए सकैछी । जँ ओ साहेब एहि भीत्ति-चित्रमे सखीसँ परिवेष्टित राधाकेँ गाढ़ कारी बेलबूटा बाला लाल घघरी पहिने देखितथि तँ हुनक अज्ञान अवश्य दूर भए जइतनि । मंगराजकेँ चित्रक अंकन लेल कोनो विदेशी चित्रकारकेँ बजएबाक प्रयोजन नहि भेल रहनि । ई सभटा कला-कर्म चम्पाक अपने हाथक थिक । ओ एहन-एहन ततेक प्रकारक पशु-पक्षीक चित्र बना सकैत अछि जे कलकत्ताक चिड़ियाघरमे भेटब दुर्लभ ।

मंगराजक डेओढ़ीक सटले पछुऐतिमे एकटा पैघ-सन बाग अछि, छहरदेवारीसँ घेरल । बाहरक अँगनइक कोनटाक सटले एकटा पैघ-सन पोखरि अछि । पोखरिक चारूकात नारिकेर अछि । नारिकेरक पाछू केरा, आम, कटहर आ कत्थक गाछ अछि । बागक चारूकात धूर पर पीयर-पीयर सोनबासक बेढ़ देवाल जकाँ ठाढ़ अछि । मंगराज सन नि:स्वार्थ लोक अहाँकेँ जगतमे कमे भेटत : हुनकर सभटा काज परहिते होइत छनि । गोविन्दपुर हाटक स्थिति आ उन्नतिक मूल आधार थिक मालिकक इएह विशाल बाग । बागक नारिकेर, केरा, भाटा, कुम्हर, हड़फा, करौना आदिसँ लए मेरिचाइ धरि एक-एक सौदा हाट नहि पहुँचैत तँ हाट मे ई तेजी कहियो नहि अबितैक । जाबत धरि मालिकक बाड़ीक गोट-गोट कए चीज-वस्तु बिका नहि जाइछ ता धरि आर ककरो ओ सौदा बेचबाक हक नहि छै । उचिते । नीक वस्तु पड़ल रहय आ खराब वस्तु बिकाए से तँ उचित नहि ! हाट अपन खास जमीनदारीमे छनि । ककरो आनक होइतैक तँ आन बात छल ।

सोनियाक दिन अथवा पावनि-तिहारक दिन कुम्हड़, भाटा, केरा, आदिक जे उपहार अबैत छनि से सभटा सोझे हाटे पर पहुँचि जाइत अछि । चीनक देवाल बनि गेला पर ओहि ठामक सम्राट राजक सभटा इतिहासकारकेँ पकड़ि अनबाए, एक-एक कए सभक वध करा देने छल । ई कारण छलैक जे जँ ओ जीवित बाँचि जाएत तँ एक ने एक दिन ई बात अवश्य लिखि दितथि जे दंबाल बनएबा मे कतेक खर्च भेलैक । इएह कारण थिक जे ओहि सम्राटकेँ हमरा अहंकारहीन पुरुष मानबाक चाही । महान लोक महान काज कए लेला पर ई कहैत नहि फिरैत अछि जे ओहिमे कतेक खर्च पड़ल अछि । मंगराजसँ तँ भला, केओ पूछनु जे एहि डेओढ़ीक निर्माणमे कतेक टाका लागल छल । ओ इएह कहताह 'बहुत, बहुत टाका । हम तँ ओहीमे बुड़ि गेलहुँ।' पाठक, निराश नहि होउ, अधीर नहि होउ ।

पुरातत्व-विज्ञानक बलेँ अतीतक सभ बात बुझल भए जाइत छैक । नओ सए वर्ष पछाति एक साहेब पुरी आबि ई लेखा-जोखा कए लेलनि जे पुरीक मन्दिर-निर्माणमे कतेक

खर्च लागल छलैक । मंगराजक ओहिठाम तँ पोरोक साग धरिक बिकरीक हिसाब लिखि राखल अछि । तखन कहू तँ, डेओढ़ीक निर्माणक खर्चोटा कतहु नहि भेटय ? दीवान गंगा गोविन्द सिंह अपन माइक श्राद्ध जेहन कएलनि तेहन आइ तक भारत मे ने तँ केओ कएलक आ ने कहियो केओ कए सकत । बड़ा लाट बंगालक सभ जिलाक कलक्टरकेँ पत्र लिखि आदेश देने रहथिन जे सभ केओ अपन-अपन जिलासँ दालि, चाउर, मइदा, तेल, घी, नारिकेर, केरा आदि कीनि-कीनि पठाबथि । नवद्वीपक राजा शिवचन्द्र सेहो अपन माइक ओहने श्राद्ध करबाक इच्छा कएने छलाह आ खर्चोटा मँगबौने छलाह । दीवान गंगा गोविन्द सिंह केवल गाँजा, हफीम आ तमाकूलक खर्चक चिट्ठा पठा कए ई संकेत कए देने छलथिन जे एही अनुपातमे आन-आन खर्चक हिसाब स्वयं लगा लेल जाए । एहि तीनू खलमे बहत्तरि हजार टाका खर्च भेल छलैक । नगद कीनल गेल वस्तुक अतिरिक्त सभ जमीनदार बेठ तरेँ सेहो बहुत वस्तु देने छलथिन । घरहटक हमहूँ एक मोटा-मोटी हिसाब लिखि दए रहल छी । बुद्धिमान पाठक ओहीसँ कुल खर्चक अनुमान कए सकैत छथि । हमारा ई खर्चोटा धानक भड़ारसँ भेटल अछि । केवल बड़ही-कमार आ जन-मजदूरक बोनिमे पन्द्रह 'माण' बाइस गौणी धान खर्च भेल छलैक ।

मंगराजक मुहेँ ई कथा अनेको बेर सुनल अछि जे आनक दुख हुनका सहल नहि जाइत छनि । तहिँ ओ धान वा टाका कर्ज दैत छथिन; एहिसँ हुनका अपना किछुओ नफा नहि होइत छनि । हम तँ कहब जे नफाक कोन कथा, घटे होइत छनि । धानक लगानीमे डेढ़िआ सँ बेशी दर नहि होइत छैक । तखन कहू तँ एहिसँ नफा की होएतैक ? दैत छथिन पुरान सुखायल धान आ लैत काल काँचे धान लए सबूर कए लेअऽ पड़ैत छनि । पाठक वृन्द, अपने पहिने किछु तीतल वस्त्र जोखि लीअ आ फेर सुखेला पर जोखिकेँ देखिऔक जे तीतल आ सुखाएल वस्त्रमे कतेक फरक होइत छैक । गत सालतमामी दिन मुंशीजी जे हिसाब देने छलाह ताहिमे तकर महाजनी करजामे आठ रुपैया छओ आना, दू कौड़ी दू कन्तिक माफी साफ-साफ लिखल अछि । एतेक बेशी टाका छोड़ि देबाक अपराधमे मुंशीजी गारि-फज्झति सुनि जे किछु स्पष्टीकरण देलनि तकर निष्कर्ष ई अछि— 'भिखारी पंडा पाँच टाका कर्ज लेने छलाह, चक्रवृद्धि क्रमेँ जकर सूद बारह टाका पाँच आना एगारह गंडा दू कौड़ी होइत अछि, दूनूक कुल जोड़मे सँ सतरह टाका पाँच आना दू पाइ ऊपर कएल गेल ! आ एहि प्रकारेँ वास्तवमे माफी केवल डेढ़ गंडा होइत अछि ।

तेसर परिच्छेद

वाणिज्ये वसते लक्ष्मीस्तदर्द्धं कृषिकर्माणि

अस्यार्थ :

दोकान-दौरी लक्ष्मीक घर तकर आधा खेती पर ।

हमर अनुमान अछि जे मराठा युगक कोनो कविक ई उक्ति थिक । आजुक कोनो कवि रहैत तँ एहि प्रकारेँ लिखैत—

'दोकान दौरी मे लक्ष्मीक वास तकर आधा बी. एल. पास ।'

कोनो-कोनो अनठिया मंगराजक डेओढ़ी देखि ई अनुमान करैत अछि जे बी. एल. पास कोनो वकीलक ई कचहरी थिक । कहबी छैक, बासठि घर उजाड़ि ओकर साडह सँ वकीलक घर बनैत छैक । जनैत छी, भाग्यं फलति सर्वत्र । कचहरीक ओलतीमे दोशालाक मुरेठा बन्हने गंडाक गंडा जे घूमैत रहैत अछि ताहिमे एहन कतेक होएत जे वासठिक कोन कथा मंगराजक तुलनामे पचीसो घर उजाड़ि ओकर कोरोबाती संग्रह कए पाओत ? मालिक अपने कहैत छथि, ओ ककरोसँ एको पाइ लेने नहि छथि । ओ अपने बुद्धि-बलसँ आ अपने बाहुबलसँ माटिकेँ सोन बनौने छथि । सुनैत छी, सुनिते टा नहि छी, नीक जकाँ जनैत छी जे पूर्वमे गामक मुखियासँ मंगराज दू कट्ठा जमीन बटाइ लेने छलाह । आइ हुनकर जोतमे चौबीस मुट्ठी† चारि बाटी छओ माण खेत छनि । एकर अतिरिक्त, तीस बाटी सतरह माण खेत बटाइ छनि ।

जमीन सभटा लाखराज । काश्त किछुए । अधिकांश किनुआ ब्रह्मोत्तर । बरद पन्दरह जोड़ । हरबाह बारह टा । सभ बरमसिआ, बाउरी जातिक, केवल तीन पाण जातिक । एकरा सभक जिम्मा छैक खेत आ बाग । मंगराजक उपदेश आ उत्साहसँ ई सभ कर्मठ आ उत्साही बनल अछि । अन्हरोखे उठब स्वास्थ्यवर्धक थिक । रौद रहैक, पानि पड़ैक झाँट-पाथर होइक, मंगराजकेँ केओ कहियो एहि दिनचर्याक उल्लंघन करैत नहि देखलक । शास्त्र मे लिखल अछि ----

जेतेक देख नदनदी, समस्ते मिलन्ति जलधि
आपणा गुण पासोरन्ति लवण गुणकु भजन्ति ।

---

† चौबीस मुट्ठी (हाथ) क लग्गा लगभग 6 हाथ

[अछि नदनदी जतेक सभटा सिन्धु समाइ अछि
छाड़ि अपन सभ टेक नोनछराह बनि जाइ अछि ।]

ठीके बात । तहिना सभ स्त्रीगण आ खवास-खवासिनी हमर मालिकक गुणकेँ किछु-ने-किछु स्वीकार कए लेलक अछि । मालिकक घरक खर-खवासकेँ देखि हमरहु सभकेँ ई शिक्षा भेटैत अछि । मंगराज ब्राह्ममुहूर्तमे उठि दतमनि कए लैत छथि । कलकत्ता शहर मे दू बेर तोप दागल जाइत अछि । पहिल तोप भोरे-भोरे दागल जाइत अछि आ राति बीति जएबाक संकेत दैत अछि । तहिना मंगराज जखन अपन कचहरीक ओसारा पर ठाढ़ भए हरवाहकेँ हाक पाड़ैत छथि तँ आँखि मुनेलो रहला पर गौआँ बूझि जाइछ जे राति बीति गेल । बहड़िआ सभ मुखान्ध रहलो पर पछुआड़ जएबा लेल बाहर भए जाइत अछि । गामक लोक घंटा-तंटा नहि बुझैत छैक । दिनकर दीनानाथ जखन ठीक चानि पर आबि जाइत छथि तँ बरदक कान्ह पर सँ जूआ उतरैत अछि । कात-करौटक हरबाह दूरहिसँ हुलकि-हुलकि तकैत रहैत अछि जे मंगराजक ताड़क पात बाला छाता डम्बर धूर पर देखाइछ की नहि । मंगराज अपन हरवाहकेँ बेटा जकाँ पोसैत छथि । माए-बाप जाबत धरि अपना आँखिए अपन धीया-पूताक खाएब-पीयब देखि नहि लैत अछि, ता धरि मनमे चैन नहि होइत छैक । हरवाह जखन पाँती लगा बैसि जाइत अछि तँ मंगराज चिकरि-चिकरि भनसियाकेँ कहैत छथिन, "अरे माँड़ आन, माड़ । हिनका गारा लगैत छनि ।" भनसिया अपन अभ्यस्त हाथसँ एक-एक हरवाहकेँ दू-दू बाटी माड़ परसि दैत अछि । यदि ओतेक राश माड़ पीबा लेल कोनो हरबाह तैयार नहि होइछ तँ मालिक माड़क महत्व आ पौष्टिकता पर एक छोट-छीन भाषण दए दैत छथि । भाषणक बलेँ माड़ पिऔलाक बाद ओ भात परसबाक संकेत कए नहेबा लेल चल जाइत छथि । मालिकक बागमे मुनिगाक सतरह टा गाछ अछि । मुनिगाक पातक साग पाचन-क्रियाकेँ ठीक रखैत अछि, बलवर्धक, रोगनाशक आ रुचिकर होइछ, रोगीक हेतु परम पथ्य । निर्घण्टुमे मुनिगाक गुण एहि प्रकारे वर्णित छैक कि नहि से तँ हम नहि जनैत छी, हेतु जे ओहि विद्यामे हमर प्रवेश नहि, तैओ मालिकक मुखेँ यथाश्रुतम् तथा लिखितम् । एहि लेल बाड़ीक सतरहो मुनिगाक गाछक एकटा टुस्सो हाट नहि जाइत अछि । संभटा साग हरबाहक पोषण आ बलवर्द्धन हेतु उसरगल । एकर जे ई फूल देखि रहल छी, एहन उपादेय रुचिकर पदार्थ संसारमे आन कोनो नहि अछि । एहिमे यदि मुट्ठी भरि रैंची फेंटि देबैक तँ --- । छोडू एहि गप्पकेँ । भगवानक एहि सृष्टिमे नीक-अधलाह सभ एक संगहि अछि । इएह देखियौ ने, कटहरक कोअ कतेक मधुर होइत अछि । मुदा ओकर कमरी खाएब तँ पेट गुड़गुड़ाए लागत । मुदा ज्ञानी लेल कोनहु वस्तु अहितकर नहि होइत अछि । ओ नीर-क्षीर जकाँ नीक अधलाह बाछि दैत छथि । ओना तँ मुनिगाक सभ किछु नीक होइछ, परंच ओकर फड़ पेट चालि दैत छैक । तें हरबाह आ खर-खबासक पात पर मुनिगा कहियो नहि पड़ैत छैक; बाहरे-बाहर हाट चल जाइत अछि ।

चारिम परिच्छेद

खेती -बाड़ीक ताक-हेर

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम् ।

मंगराज खेतीमे अपन-आनक अन्तर नहि मानैत छथि । शास्त्रकार जोर-जोर सँ कहैत छथि—केवल लघुचेता लोक अपन-आनक विचार करैत अछि । मालिक अपन खेत पर जेना ध्यान रखैत छथि दोसरोक खेत पर तहिना आँखि रहैत छनि । हम केवल एक दिनक कथा कहब । ज्ञानी पाठक स्वयं सभटा बूझि जएताह । तौलाक एक भात पीचि देखिऔक तँ तौलाक सभ भातक हाल बुझा जाएत । हरवाहरक मेट गोविन्द पुहाण भोरे-भोरे आबि कहि गेलनि, "डेढ़ माण खेत परता रहि गेल । बीया घटि गेल, तैं ।" मालिक केवल "हूँ".... कए चुप भए गेलाह । हरवाह कर जोड़ि मोख लग ठाढ़ रहल ।

मालिक खेत देखए चललाह । पहिरनमे एक टा तेलचिट मोटिआ धोती छनि । डाँड़ मे गेरुआ अंगपोछा लपेटल, कान्ह पर ताड़क पातक बड़की टा छाता । पाछू लागल गोविन्द पुहाण खेतक हाल कहैत चलि रहल अछि । एक टा हरवाह कान्ह पर हर उठौने चलि रहल अछि । ओकर नाम थिकैक पांडिया । गामक सभ लोक एखनहु उठल नहि अछि । वाटमे शिवू पंडित भेटलथिन । ओ नोसि सूँघैत पोखरि दिस जा रहल छलाह । हाथमे लोटा छलनि । मालिककेँ अनचोखे पाछुमे अबैत देखि हड़बड़ा कए साढ़े सात हाथ फराक ठाढ़ भए गेलाह । लोटा नीचा राखि धनुषाकार भए "अंजलिबद्धो भूत्वा" मालिकक "कीर्त्तिमायुर्यशः श्रियम्" क कामना कएलनि । मालिकक आँखि ओम्हर नहि गेलनि । ओ नाकक सीकेँ बढ़ैत गेलाह । मालिक जखन किछु दूर चलि गेलाह, तँ पंडित गमे-गमे लोटा उठबैत मने-मने पढ़ए लगलाह, "अद्य प्रातरेवानिष्टदर्शन जातम् न जाने किमनभिमतम् दर्शयिष्यति ।" श्लोक पढ़ब तँ पण्डितक स्वभाव थिक किन्तु ताहिसँ हमरा; हाथ की लागल ?

श्याम गोड़ाइत बाउरी जातिक थिक गाम बीच खेत छैक । अगता रोपनी करा लेने अछि । तैं ओकर धान पर एखनहि सूगापंखी आबि गेल छैक । श्याम निहुरि-निहुरि आरि बान्हि रहल अछि । मालिक ओकरा लग आबि ठाढ़ भए नहुएँ नहुएँ कहलथिन, "की हओ, श्याम थिकह ?" श्याम मालिककेँअकस्मात् देखि अकचकाएल । कोदारि पाँच हाथ फराक फेकि झट थाल पर दण्डवत् भए प्रणाम कएलक । "अरे उठह उठह !" मालिक

स्नेहसिक्त संबोधन कएलनि । श्याम उठल । कर जोड़ि दस हाथ हटि ठाढ़ भेल । तदुत्तर श्याम आ मालिकमे बड़ी काल धरि अपन दुख-सुखक गपशप होइत रहल । लिखए लागब तँ पाठक उबि जएताह । तैं सारांश मात्र लिखैत छी । श्यामक खानदान पर मालिकक बड़ कृपा रहैत छनि । श्यामक मरणासन्न बाप प्रतिदिन साँझखन मालिकक लग जाए खेती-बाड़ीक हाल कहि अबैत छल आ विचार लैत छल जे खेती कोना करी जे उपजा बेशी हो, इत्यादि । मुदा श्याम ई सभ नहि करैत अछि । एही बीच अकस्मात् मालिकक नजरि श्यामक खेत पर गेलनि । ओ अकचकाइल-जकाँ आत्मीयता देखबैत बजलाह, "तौं ई की कएलह, हओ बूड़ि ! तोरा खेतीक किछुओ ज्ञान नहि छहु । अरे एतेक घनगर रोप कएलासँ कतहु धान भेलैए । धानकेँ साँसो लेबाक जगह नहि छोड़लह। उखाड़ि दहक, आधा उखाड़ि दहक ।" गोविन्द नीक जकाँ देखि मालिकक समर्थन कएलक । श्याम थर-थर कँपैत कर जोड़ि बाजल, "सरकार, हम तँ सभ बेर एहिना रोपैत छी । सभ केओ एहिना रोपैत अछि ।" मालिक खिसिया कए बजलाह, "उल्लू कहीं के ! नीक कहैत छिअनि तँ सुनताह नहि ।" गोविन्द दिस ताकि ओ बाजय लगलाह, 'अरे गोविन्द, बता ने दही एकरा ।" हुनक बात मुहसँ बहरैतहिँ गोविन्द आ पांडिया मिलि, दूनू कोलासँ आधा-आधा बिड़ार छाँटि-छाँटि उखाड़ि लेलक । कोला छहरा गेल । श्याम बपहारि कटैत पाएर पर औंघराइत रहल । मालिक तमसा उठलाह आ श्यामकेँ मलकाइनिक भाइबला संबंधक नामसँ संबोधित करैत बजलाह, "तौं खेती-बाड़ोक बात बूझह वा नहि, उधार लेल धानक सूद-मूरमे बीत-बीत कए खेत गेला पर सभ किछु नीक जकाँ बूझि जएबह ।" आ फेर गोविन्दकेँ कहलथिन, "अरे गोविन्द भए गेलौ, भए गेलौ,रहय दहीन, रहए दहीन, एकरा जे मन होइक से करए दहीन, हमरा की ? ई कहैत-कहैत ओ अपन परता खेत दिस बढ़ि गेलाह । बीआक बोझ हुनक पाछू-पाछू चलल ।

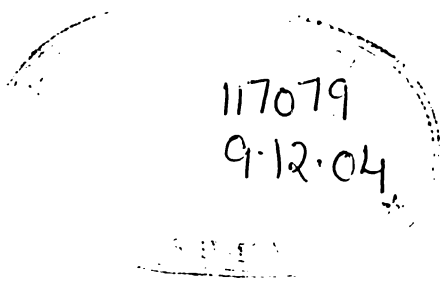

पाँचम परिच्छेद

मंगराजक कुटुम्ब

रामचन्द्र मंगराज बहुतो लोकक पालन-पोषण करैत छथि । घरमे खाए बला ढेर लोक छनि । मालिक-मलकाइनि अपने छथि । तीन बालक छनि, तीनूकेँ तीन कनियाँ भेलनि । बीस-बाइस खबासिनि आ नौड़िनि छनि । एहि प्रकारेँ तीसक धकक आश्रम छनि । सभ व्यक्तिक कथा लिखए लागी तँ बहुत लिखए पड़त । आ अहाँ तँ हमरा सभक स्वभाव जनितहि छी; असत्य बात लिखब, बात बढ़ा-चढ़ाकए लिखब, अनेरे लिखब हमर चरित्रक अनुकूल नहि अछि । सङहि ''मा लिखेत् सत्यमप्रियम्'', एहिनीतिक अनुसार सत्यो बात अधखिज्जू छोड़ि देबए पड़ैत अछि । हवेलीमे जनी-जातिएक संख्या बेसी अछि । राम ठाकुरकेँ छोड़ि पुरुष कंठक स्वर कदाचिते सुनि पड़त । मालिक तँ अपन काज-धन्धामे लागल रहैत छथि। तीनू बालक समर्थ छथिन । हुनक समय चौपड़ि खेलाइ मे, बटेर बझबइमे आ लोकक संग झगड़ा-झंझटि करैमे उड़ि जाइ छनि । गाँजा पीबो लेल तँ किछु समय चाहबे करिअनि । गोविन्दपुर हाटक गाँजाबाला कोनो गहिकी पर खिसिआएल तँ बाजल, ''अरे जो, जो, नहि कीन । मालिकक घरक बाबू लेल तँ माल पुरिते नहि अछि ।'' बाप-बेटामे भेट किनसाइते होइत छनि । केओ शुभचिन्तक व्यक्ति एक बेर मंगराज सँ पुछने छल ''औ मंगराज, पुत्रलोकनिकेँ लगमे किएक ने बैसबैत छी ? ''मंगराज उत्तर देलथिन, ''अरे ! अहाँ शास्त्रक वचन नहि सुनने छी की ?''

लालयेत् पंच वर्षाणि, दश वर्षाणि ताड़येत् ।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रम्मित्रवदाचरेत् ॥

अर्थात् पाँच वर्ष धरि पुत्रक मुहसँ लेर खसैत छैक, दस वर्ष धरि ओकरा पीटल जएबाक चाही । सोलह वर्ष भेला पर ओकरा संग एवं मित्र सभक संग बद अर्थात् खराब व्यवहार कएल जाए ।''

ठीके, देखैत छी जे मालिक ककरो-ककरो संग पहिने दोस्ती कए पछाति मामला-मोकदमासँ ओकर जमीन-जत्था हथिया 'बद आचरण' करैत शास्त्रक वचनक पालन-कएलनि अछि । परन्तु ई ठीक-ठीक ज्ञात नहि अछि जे मालिक अपन पुत्रक संबंधमे शास्त्रक एहि वचनक प्रयोग कोना करैत छथि । सुनैत छी, पिता-पुत्रमे नहि पटबाक कारण अछि, पुत्रलोकनिक नशाखोरीमे पाइ उड़ाएब । हवेलीक अंदर, मलिकाइनि एक कोठरीमे

पड़लि रहैत छथि । ककरो संग गप्प नहि करैत छथि । केवल भाट-भिखारि भूखल-पियासल अबैत अछि तँ पुछारी करैत छनि । कनियाँ सभक बात लिखब अनुचित होएत । बड़का घरक कनियाँ बहुड़िआक कथा बाट-घाटमे बाजब तँ लोक की कहत ! पहर दिन उठला पर ओछानसँ उठि ओ सभ जाहि प्रकारेँ दू-तीन घंटाक भितरे दतमनि, मालिश, स्नान आदि कए लैत छथि आ कलौक बाद साँझ धरि सुतलि रहैत छथि से लिखि कए की होएत ? बेर खसला पर उठि झटपट बेरहट खतम कए लेब आ तकरा बाद गामक गप्प सुनब, खबासिनि-नौड़िनिमे झगड़ा लगाएब, झगड़ाक पंचैती करब, हँसब, बैसब इत्यादि ततेक काज रहैत छनि जे एही सभमे आधा पहर राति बिति जाइत छनि । रुकुणी, मरुआ, चेमी, नकफोड़ी, टेरी, बिमली, शुकी, पार्टी, कौसुली आदिक नाम तँ जनैत छी; आओरो कतेक नौड़िनि-खबासिनि छनि से के कहए । केओ बाल-विधवा अछि, केओ युवती-विधवा तँ केओ आजन्म-विधवा, आ केओ-केओ सधवो अछि । एकहि गाछ पर जेना अनेक प्रकारक चिड़ै खोंता लगौने रहैछ तहिना सब केओ मंगराजक ओतए आश्रय लेने अछि, किन्तु कतेको जे अबैत-जाइत रहैत अछि तकर कोनो ठेकान नहि । बिनु काजक बहुतो लोकसभक जमा भेला पर दुनिया भरिमे झगड़ा-झंझट होइत रहैत अछि । मंगराजक हवेली सेहो एहि सनातन नियमक अपवाद नहि अछि । निसी राति धरि अन्नरमे मछरहट्टाक घोल-फचक्का सुनल जा सकैत अछि ।

छठम परिच्छेद

चम्पा

अन्नर हवेलीमे जतेक लोक अछि ताहिसभमे चम्पा, उर्फ चंपा मलिकाइनि, उर्फ हरकलाक संग मंगराज-वंशक की सम्पर्क छैक से ककरहु बूझल नहि छैक । ओकर जाति, कुल, पितृवंश आदिक प्रसंगहुमे सभ केओ अनभिज्ञ अछि । चंपा मंगराजक घरमे खबासिनि थिक कि मलिकाइनि, से बात ओकर व्यवहारसँ बूझब ककरो सक नहि छैक । हँ, हम एतबे कहि सकैत छी जे मंगराजक हवेलीमे चम्पाक असीम प्रभुत्व छैक । बेसी की कहू, ओकर प्रभुत्व मलिकाइनिओक प्रभुत्व सँ उपर छैक । बाहरक जन-हरवाह, कचहरीक देवानजी धरि ओकर आगू हाथ जोड़िते रहैत छथि । चंपाक नाम 'हरकला' छैक । सत्य पूछी तँ एहि नामसँ ओकरा सम्बोधित होइत केओ नहि सुनलक । 'हरकला' शब्दक व्युत्पति की ? ई ना निंदा-सूचक थिक कि प्रशंसा सूचक से कहबामे हम अपनाकेँ नितान्त अक्षम पबैत छी । हँ, चंपाक कानमे एक दिन केओ कहि देलकैक जे लोक ओकरा 'हरकला' कहैत छैक; से सुनैत देरी ओ बड़ जोर खिसिया उठलि । मंगराज लग कानि-कानि नालिश कएलक । खूब धर-पकड़ भेल ; दू दिन धरि खोज होइत रहल किन्तु एहि बातक कोनो सोह नहि भेटलै जे हरकला नामक उत्पत्ति कोना भेल आ ई कतेक दूर धरि पसरल अछि । अंतमे मालिक कहलथिन, ''रहए दे, रहए दे, देखल जएतैक । खबरदार ! चंपाकेँ केओ हरकला नहि कहैक ।'' ओहि दिन गामक एहि कोनसँ ओहि कोन धरि आ लग-पासक दू-चारि आरो-आरो गाममे लोककेँ चेता देल गेलैक जे खबरदार चंपाकेँ केओ 'हरकला' नहि कहैक ।' एक मासस दू मास भेल दूसँ चारि आ चारिसँ छओ मास बीति गेल । ननकिरबासँ बूढ़ धरि, ननकिरबीसँ बुढ़िया धरि लोक अपन मनोनुकूल संगी-साथीकेँ देखितहिँ चारूकात ताकि—हेरि बिहुंसि-बिहुंसि चैतबैत रहल—खबरदार ! चंपाकेँ केओ 'हरकला' नहि कहैक । ई उक्ति क्रमशः छोटसँ छोट रूप धारण करैत गेल । अर्थात् 'खबरदार ! केओ चंपाकेँ, ' 'खबरदार केओ', 'खबरदार'इत्यादि । धीया-पुता थपड़ी पीटि-पीटि गली-गलीमे नचैत-गबैत रहल—

खबरदार ! गोबरा जेना चौकीदार !!

बच्चासभ तँ बडट होइतहिँ अछि । ओकर कथाक कोन मोजर ! जाए दिअऽ, एहि बेकार गप्पसँ लाभ की ? हँ, मालिकक घरसँ चम्पाक संबंध खूब घनिष्ठ छैक, तेँ पाठक

कैं ओकर बेरि-बेरि नाम सुनबा मे अओतनि अत: ओकर रूपगुण आदिक प्रसङ्ग सकल कथा कहि देब हमर आवश्यक कर्तव्य भए जाइत अछि । एतबे नहि, ग्रन्थस्थ नायक-नायिकाक रूप-गुण-वर्णन करबाक लेल लेखकलोकनि साहित्यक नियमक अनुसार बाध्य होइत छथि । सुतराम्, एहि सनातन रीतिक उल्लंघन करब हमर बसक बात नहि । आओर, लेखकलोकनिमे किछु सनक सेहो होइत छनि । कोनो नायिकाकैं पबितहि हुनका लगैत छनि जेना घेबर भेटि गेल होइन । सभ किछु बिसरि ओ ओकर रूप-गुणक वर्णनमे लागि पड़ैत छथि । एहिमे किंचितो विलम्ब हुनका सह्य नहि होइत छनि । ई बात नहि जे हम रूप-वर्णन करबामे असमर्थ छी । हे देखू ने— केरा, कटहर, रंभा, आम, अनार, टाभ आदि जतेक गाछ-बिरिछ, फूल-पात, फल-फलहरी अछि ताहिमे सँ तत्तत् वस्तुकैं चम्पाक तत्तत् अंगक संग जोड़ि देल आ रूप-वर्णन तैआर ! हँ, एक बात अवश्य जे आइ-काल्हि ओहि तरहक खटराशी वर्णन नहि चलत । अंग्रेजी-पढ़ल पाठकक मनोरंजन लेल अंग्रेजी ढंगक रूप-वर्णन आवश्यक । भारतक कविगण सुन्दरीकैं 'गजेन्द्रगामिनी' कहताह । एहि पर अंग्रेज कहि देत, छि: छि: । इहो कोनो सुन्दरता भेल ? अरे परम सुन्दरी घोड़ा जकाँ गेलप (कदम) चालि चलि सकैए । हम देखि रहल छी जे प्रथम आषाढ़क महानदीक बाढ़ि जकाँ अंग्रेजी सभ्यता एहि देशकैं जाहि प्रकारैं आप्लावित कए रहल अछि, तकर फलस्वरूप एकर संभावना बढ़ि गेलैक अछि जे नव्य शिक्षित बाबू लोकनि अपन-अपन अंक-लक्ष्मीकैं नब चालि सिखएबाक लेल चाबुकयुक्त सबार नियुक्त करबाक प्रस्ताव करथि । अस्तु, हम तँ इएह कहब जे प्राचीन कविलोकनि सुन्दरीक चालिक जे कोनो उपमान देने छथि से आइ ठीक नहि रहि सकल । अहीँ कहू । की घोड़ा आ की हाथी दूनू जन्तु चारि टाङ्गसँ चलैत अछि, मुदा चम्पाकैं दूसँ बेसी टाङ्ग-छैके नहि । तखन 'गजेन्द्रगामिनी' वा 'अश्ववरगामिनी' कहब नितांत असंगत । हँ, चम्पा यदि ठेहुनियां दैत चलए तँ देखबामे केहन लागत तकरा वर्णन करबा मे हम सम्प्रति असमर्थ छी । तखन टाङ्ग संख्याकैं ध्यानमे राखि मरालक संग सादृश्य होएबाक कारणेँ मरालगामिनी कही तँ असंगत नहि होएत । अलंकार-शास्त्रक मर्यादाक रक्षाक हेतु उपमान आ उपमेयकैं ठीक सँ बैसबैत कहबाक हो तँ कहबैक जेना मराल कौखन-कौखन टाडक भरे तँ कौखन-कौखन पाँखि फड़फड़बैत किछु-किछु उड़ैत चलैत अछि, तहिना चंपा जखन संकीर्ण गल्ली-कुच्ची बाटेँ मणियाबंदी नूआक आँचरक खूँटकैं लहरबैत दूनू पाँखुर उझकबैत चलैत अछि तँ ओहि समयमे ओकरा मरालगामिनी कहब सङ्गत होएत ।

चम्पाक बएस हमरा हिसाबेँ तीसक धकमे होएबाक चाही । मुदा ओकर अपने मुहेँ अनेक बेर सुनल गेल अछि जे मलिकाइनिक विवाहक दिन ओकर छठिहार भेल छलैक । एहि हिसाबेँ चम्पाक वयस ओहिसँ बहुत कम होएतैक । जँ एहन युवतीक वर्णन करबाक हो तँ पर्याप्त सतर्कता, पर्याप्त विज्ञता आ पर्याप्त बहुदर्शिताक प्रयोजन होएत । रंग-बिरंगक बिलेंती वस्तु सभक संग-संग एहि देशमे एकटा 'रुचि' नामक वस्तुक नब आयात भेल

अछि । ओहू दिस नजरि राखए पड़त । नहि अहाँक सभ पाठ चौपट—अहाँ मूर्ख आ असभ्योसँ गेल-गुजरल । ओहि दिन उपेन्द्र भंजक (उड़ियाक सर्वश्रेष्ठ रससिद्ध कविक) जे दुर्दशा भेलनि ताहिसँ तँ हमरा इएह शिक्षा भेटल । माए बापक पुण्य-प्रतापसँ बेचारे बाँचि गेलाह । नहि तँ महापात्रसँ लए महाराज धरि जेना हुनक पाछु पड़ल रहथिन ताहिसँ एखन हुनक की दशा भेल रहितनि, से भगवाने जानथि । जखन एहन महारथीक ई हाल तँ हमर कोन गणना । गुरु विप्र-प्रसादेन हमहू किछु-किछु सुरुचिक कविता रचि सकैत छी । अहाँ कहब जे ई फुसियाह अछि, जनैत-तनैत अछि घोड़ाक घास ने ! बेस तँ देखू बानगी—

अर्द्ध वक्ष उघारिनी मुसकान-हासिनी
वस्त्र शून्या रिक्तहस्ता तुरग-गामिनी
मार्जार नयना ताम्रकेशा फाँड़ बान्हि बढ़ल
स्वाधीनपतिका पाँच जन सम्मुख चढ़ल
पर-पुरुष पकड़ि नाचति नर्तकी सुन्नरी
ओह ! ओह ! अपरूप स्वर्गविधा धरी ।

आर कुरुचिपूर्ण उपेन्द्र भंजकेँ सुनबाक अछि ? तँ सुनू—

उनटल थम्ह-सन जानु
युग नितम्ब जनि सानु

आओर किछु लिखबाक साहस नहि रहल । के जानए, छिटकि बिजुली फेर ने चमकि उठए ! हम तँ ठीके सुरुचिपूर्ण कविता रचए जनैत छी । मुदा खुलेआम निठाह फूसि लिखब पार नहि लागत । बालिपाटणा बालिका विद्यालयक पाँचम कक्षाक छात्रा श्रीमती चेमी बेहेरा सँ लए वेथुन स्कूलक उच्च कक्षाक छात्रा मिस एस. एम. रे उर्फ कुमारी शशिमुखी राय धरि कतेको आधुनिका रूपसीकेँ देखि लेल । एहिमे एहन केओ नहि जे अपन सुरुचिसम्पन्न सौंदर्य बढ़ाकए बिलाड़िक आँखि-सन आँखि बना लेबामे समर्थ भए सकलि होथि । जँ सत्य लिखब तँ से असत्योसँ बत्तर बूझल जाएत । आ फूसि तँ कलमसँ उतरबाक नामे नहि लैत अछि । तखन समाधान की होएत ? कालिदासकेँ जखन रघुवंशक रचनाक समय कलम नहि ससरबाक एहने स्थिति अभरलनि तँ कहि देलनि ----

अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः ।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः ।

हँ, आब एकटा बाट सूझल । स्वयं कालिदास चंपाक रूप-वर्णन कए गेलाह अछि । श्री दास कहैत छथि :-

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वधरोष्ठी ।

एकर अर्थ भेल-तनु भेल शरीर । चम्पाकेँ शरीर छैक, तेँ ओ तन्वी भेलि । श्यामा माने कारी ने गोर— पिण्डश्याम । से चम्पा पिण्डश्याम अछि । शिखरिदशना शिखारी माने पहाड़, दशन माने दाँत । चम्पाक अगिलका दू टा दाँत पाँतीमे नहि छैक, किछु उपर उठल

आ एक दोसरा पर चढ़ल छैक जेना पहाड़ पर शिखर । तैँ चम्पा शिखर दशना भेलि । पक्वबिम्बाधरोष्ठी । पक्व भेल पाकल, बिम्ब भेल तिलकोराक फड़ आ अघर ओष्ठ भेल निचला-उपरका ठोर, चम्पाक से दूनू ठोर पानक पीकसँ लाल रहैत छैक, तैँ ओ पक्वबिम्बाधरोष्ठी भेलि इत्यादि ।

फेर श्री दास--"**मध्येक्षामा, स्तोकनम्रा** ---इत्यादि बहुतो बात कहि गेलाह अछि । किन्तु चम्पाक जे अंग वस्त्रसँ झापल छैक अर्थात् हम जकरा नहि देखलहुँ अछि ओहि प्रसंग किछुओ कहबा लेल हम प्रस्तुत नहि छी । श्री दास तँ दास छलाह, हम किऐक बिना देखने लिखू । जे नहि देखल निज आँखी से नहि कथमपि भाखी— इएह हमर प्रण अछि । हँ, देखलो स्थानक वर्णन छोड़ि दी, सेहो हमरासँ होएत नहि । देखू हमर कला—

कज्जल पूरित लोचन भाले ।
गुंडिया खिल्ली ठूसित गाले ॥ १ ॥
तैल हरिद्रा लेभरित देहे ।
पिलिया इव झट धावित गेहे ॥ २ ॥
अठगज्जी नूआयुत रुंडे ।
पंसेरि जुट्टी शोभित मुंडे ॥ ३ ॥
धम-धम चुप-चुप चलनम् तस्या ।
चलति कि धावति विखम समस्या ॥ ४ ॥
कर कंकण चूड़िका विराजे ।
झम झम झम झम बिछिया बाजे ॥ ५ ॥
सा जबे गली कुच्चीसँ धावति ।
हाथ चंचल-चंचल हिलावति ॥ ६ ॥
गामक लोकसँ देखि डराथि ।
झुंड झुंड सबे भागल जाथि ॥ ७ ॥
इति रूपवर्णन पञ्झटि छन्द ।
अब गुण-वर्णन विविध प्रबन्धे ॥ ८ ॥

सातम परिच्छेद

बूढ़ी मंगला

या देवी वृक्षामूलेषु शिलारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
मृत्तिकाश्वगजारूढ़ा वंध्यायाः पुत्रदायिनी ।
बाड़ि-संहारिणी देवी, नारायणि नमोस्तु ते ॥

असुरदिग्घी पोखरिक पछबरिया कोनमे गाम अछि । गामक भीतर पोखरि दिस जएबाक बाटक दहिना कात एकटा झमटगर गाछ अछि । गाछक जड़ि देखार नहि अछि । गोड़ बीस-पचीसेक बड़ रुखि धरती धरि नमड़ि आएल अछि आ डारिसभसँ परस्पर ओझराए गेल अछि । एहि प्रकारेँ गाछ बारह-तेरह कट्ठा जमीन छेकने अछि । छोट-छोट डारि-पात ओकरा तेना झँपने अछि जे रौदक धाह जड़ि धरि कहिओ नहि पहुँचैत अछि । गाछ बड़ पुरान अछि । बूढ़-बुढ़ानुसक कहब छनि, ई भगवतीक गाछ थिक सतयुगक । ओ सभ नेनहिसँ एकरा ठामक-ठामहि देखैत अएलाह अछि । ने कहिओ एहिसँ बढ़ल, ने छोट भेल । गत सन् सातमे आसिनक अमावस्या दिन जे बड़का बिहाड़ि आएल रहए ताहिमे गामक सभटा मुनिगा आ केराक गाछ पर्यन्त उखड़ि गेलैक, मुदा एहि गाछक एकटा पातो नहि झड़लैक । भगवतीक महिमा ।

माझमे चारिटा बड़रुखि गाछ जकाँ ठाड़ अछि । तकर जड़िक सटले भगवतीक थान छनि । भगवतीक नाम थिकनि बूढ़ी मंगला । मंगलाकेँ अढ़ाए माण देवोत्तर जमीन छनि । बारह गुंठ आठ बिस्वा थानतर छैक भगवतीक भाओ लेल । शेष दू माण पनिझाओ धनखेती । तकर भोग पुजेगरी करैत अछि आ ताहि तरेँ भगवतीक पूजा करैत छनि । गाममे, विशेष कए जनी-जातिक बीच ओकर बड़ मान छैक । भगवती पुजेगरीकेँ स्वप्न दैत रहैत छथिन्ह, सब गप बुझबैत-सुझबैत रहैत छथिन । ककरो बाड़ीमे केरा, भाटा, कुम्हर आदि जे किछु फड़ै छै तकर पहिल फड़ भगवतीकेँ बिना चढ़ौने केओ नहि खाइत अछि ।

थानक मंडप पक्का छैक । बीचमे भगवती अपने विराजमान छथि । मूर्ति वेश विशाल, ओजनमे दस पसेरीसँ कम नहि होएथिन । हरदि पीसैक दू-चारि सिलौट मिला कए जतेक टा होएतैक ताहूसँ पैघे बूझू । पूरा मूर्तिमे चारि आँगुर मोट सिन्नुर पोतल अछि । मुख्य भगवतीक अतिरिक्त चारि टा मूर्ति अछि । मंडपक दहिना कात किछु दूर पर माटिक सए-

डेढ़ सए टूटल-फूटल हाथी घोड़ाक ढेर लागल अछि । भगवलीकेँ सवारी लेल माटिक हाथीक घोड़ा चढ़ओने बच्चाक रोग छूटि जाइछ । सुनैत छी जे चेतनो सभक आधि-व्याधि दूर होइत छैक । तेँ भगवतीक घोड़सार-हथिसार कहिओ सून नहि रहैत अछि । भगवतीक पूजा सभ दिन नहि होइत छनि । सुखाएल पात आ कूड़ा-करकट पसरल रहैत अछि । ककरो बियाह-दुरागमन भेलापर, ककरो बाल-बच्चाक निरोग भेलापर अथवा ककरो कबुला रहला पर पूजा भेल करैत छनि । गाममे हैजा भेला पर पूजाक धूम मचि जाइत छैक । किरानी बाबू जकाँ भगवतीकेँ कोनो मासिक बान्हल आमदनी नहि छनि । जेना डाक्टर-वकीलक देहरि पर तहिना भगवतिओक देहरि पर लोक तखने जाइत अछि जखन कोनो विपत्ति अबैत छैक । एहन अवसर पर भगवतीक थान जगमगा उठैत अछि । खर्च गौआँक बेहरीसँ चलैत अछि । बेहरी ओकातिक अनुसार बान्हल रहैछ । भगवती बड़ उग्र छथि । हिनके कृपासँ गाम आपद-बिपदसँ बाँचल रहैत अछि । कहियो-काल बुढ़िया मौसी (हैजाक देवी) प्रबल भए गाममे दुकि जाइत छथि किन्तु भगवतीक नीक जकाँ पूजा-अर्चना कए देला सँ सए-पचास जान लए पड़ा जाइत छथि ।

अहाँ सभ्य पाठक छी, ई सुनिकेँ हँसब, विज्ञानकेँ धए कहब जे रोग भेला पर औखद-बारी करू, भगवतीक ई पूजा-तूजा की करैत छी ? बेश तँ अहाँ सँ ई पूछैत छी जे अहाँ क विज्ञान बंगला एपेडिमिक फीवर आ बंबे महामारी ताऊनकेँ कियेक ने रोकि लैत अछि । विशेष पूजा-अर्चना पएबाक ई एक विशेष कारण थिक । के के आ कतेक बाँझ भगवतीक कृपा पाबि पुत्रवती भेलीह अछि, तकर कोनो विशेष लेखा तँ हम नहि दए सकैत छी परंच गंगाजली उठाए एतेक धरि कहि सकैत छी जे गाममे जे केओ जनीजाति भगवतीक निर्माल्य छूलनि तनिक खोँछि आइ धीआ-पूता सँ भरल छनि । ओहिमे कतेको बिआहक समय एकदम बाँझ छलीह । कहि चुकल छी जे पोखरि जएबाक लेल भगवतीक आगु देने एकटा बाट गेलैक अछि । गामक माए-धी लोकनि ओही बाटेँ अबैत-जाइत छथि । एक माउगि, उमेर तीसक धकक होएतैक, सभ दिन स्नान कए घुरैत काल काँख तरक घैल भगवतीक आगू राखि दैत अछि' भगवतीक आगूक अँगनै बहारि दैत अछि, घैलसँ एक आँजुर पानि लए भगवतीक गाछक जड़िमे दैत अछि आ धरती पर माथ रोपि जानि नहि चुपचाप की-की निवेदन करैत अछि आओर सभ दिन साँझखन फेर अबैत अछि, एक टेमी नेसि भगवतीक थान तर साँझ दैत अछि आ जानि नहि की-की गोहारि करैत अछि । एना करैत छओ मास भए गेलैक से लोक देखैत आबि रहल अछि । ओकर मनक बात केओ नहि जनैत अछि, कारण ओ बड़ लजकोटरि अछि; सदिखन घोघ काढ़ने रहैत अछि । ककरहु सँ भेट-घाँट नंहि करैछ, ककरोसँ कोनो गप्पो नहि करैत अछि ।

गामक चरवाह छौंड़ा सभ रौदक बेरमे माल-जाल परतीमे छोड़ि भगवतीक थान लग बड़क गाछक छाहरिमे खेलाइत, धुपाइत छल । अकस्मात् सब केओ खेलाएब छोड़ि घड़मुड़िआ दए ठाढ़ भए गेल । ओकरा सभकेँ देखि दस-पन्द्रह गोटे आओरो जूमि गेल ।

काल्हि पूजा तँ नहि भेल छल, तखन भगवतीक लग फूल-पात कतएसँ आबि गेल ? चारू कात विविध फूल, फूलक माला, लावा, लाइ आदि पसरल छल । भगवतीक प्रतिमामे टटका हरदि औंसल छलनि । एहि भगवतीक पूजा गामक एक विशेष घटना होइत अछि । पूरा गाम उमड़ि अबैत अछि पूजा देखए । पूजा साँझ कए होइत अछि । उद्दिष्ट पूजा, कबुलाक पूजा सेहो ओहिना होइत अछि । मुदा काल्हि तँ कोनो बाजा-ताजा नहि बाजल, काल्हुक साँझ खन पूजा नहि भेल, तखन ई वस्तु सभ आएल कतए सँ ? एकटा छौड़ा चिचिआ उठल-अएँ, ओ की थिकै रओ ? सभ ओम्हरहि दौगल । देखैत अछि जे भगवतीक पाछू मे एक गोट बड़की टा बिल । बिलक मुह भगवतीक मंडपसँ करीब तीन हाथ फराक छल । मुह बड़की टा छलैक । एक व्यक्ति ओहिमे बढ़िआँ जकाँ बैसि सकैत छल । गप्प गाम भरि पसरि गेल । जतए-ततए सँ लोक देखबा लेल दौगल । मंगराज सेहो ई सुनितहि दौगलाह । नाना प्रकारक तर्क-वितर्क मेल । अन्तमे इएह ठहरल जे काल्हि निशाभाग रातिमे कोनो भक्तक कष्ट निवारण हेतु भगवती बहराइलि होएतीह । बिल हुनक बाघ खूनने होएतनि । मंगराज बजलाह—'लगैत अछि बाघ एखन एही बिलमे अझि ।' बाघक नाम सुनितहि सभ लंक लेलक । अंतमे मंगराज रामाक मुह दिस ताकि चल गेलाह । बूझि पड़ैक ई कोनो काजक संकेत छल । तकरा परातसँ ओ बिल फेर ककरो नहि देखाएल । गाममे कतेको दिन धरि एहि बातक गुलगुली रहल । भीमा नौआक माए बाजलि-'हमर वयस सात 'गंडा' कि डेढ़ 'पण' कि चारि 'पण' भेल होएत । गाम मे जतेक वृद्ध लोक छथि सभक वियाह हमही कराओल अछि । सभ हमरे आँखिक सामने जनमल छथि, सभ हमरा लेल नेना छथि । हम एही आँखिसँ भगवतीकेँ पहिनहु तीन खेप देखने छी । ई चारिम खेप देखल अछि । काल्हि निःशब्द भेला पर बाहर भेलि छलहुँ । गलीक बीचमे धूपक गन्ध लागल । झमर-झमर शब्द सुनि पड़ल । देखल भगवती बाघ पर चढ़लि बिजे कए रहलि छथि । बाप रे ! एहन अकादारुण बाघ कतहु नहि देखलहुँ । सात-आठ हाथ नाम रहए । मूड़ी बड़का महिसाक माथ-सन रहैक भयाओन कारी-कारी । बाघ आँखि गुड़ाड़ि हमरा दिस गुम्हरल । हम डरेँ पड़ाए घरमे सुटुकि गेलहुँ बन्द केबाड़ कए छिटकी लगा देखिऐक । निसी रातिमे गलीमे पैरक आहट होएबाक साक्षी औरो चारि पाँच बृढ़ा लोकनि छलीह । भिनसरखन रामा ताँती स्वयं ओहि बाघक गप्प खूब जोर दैत हँकलक । भगवतीक शुभागमनक गप्पमे ककरहु कोनो शंका नहि रहलैक ।

आठम परिच्छेद

जमीनदार शेख दिलदार मियाँ

शेख करामत अलीक घर पहिने आरा जिलामे छलनि, आब मेदनीपुर जिलामे छनि। शेख करामत अलीकेँ लोक अली मियाँ कहैत छनि । हमहुँ सएह लिखब । पहिने अली मियाँ घोड़ाक बेपारी छलाह । पश्चिममे हरिहर क्षेत्रक मेला सँघोड़ा कीनि बंगाल आ उड़ीसा मे बेचब हुनक व्यवसाय छल । मेदिनीपुर जिलाक बड़का साहेबक हाथेँ ओ एक घोड़ा बेचने छलाह । घोड़ा बड़ बढ़िया बहराएल । साहेब मौसूफ बड़ प्रसन्न भेलथिन । ओ कृपाकए, मियाँजीकेँ अपन काज-धन्धाक प्रसंग हाल खोधि-खोधि पुछलथिन । कारबार मे कोनो खास नफा नहि छनि से जानि मियाँजीकेँ नोकरी देबाक इच्छा प्रकट कएल आ पुछलथिन, लिखब-पढ़ब किछु जनैत छी की नहि ? मियाँजी कहलनि, 'सरकार, हम फारसी जनैत छी । कागज-कलम भेटए तँ अपन पूरा नाम लिखि देब ।' पहिने फारसी विद्याक बड़ आदर छलैक । कचहरीमे, फारसिए चलैत छलैक । भारतक कपारमे विधाता एहने लेख लिखने छथि । काल्हि फारसी छल आइ अंग्रेजी अछि, आ आगू की होएत से विधाते जानथि । ई धरि पक्का जे देवनागरीक अदृष्ट लोढ़ासँ लिखाएल छैक । अंग्रेजीक विद्वान बजैत छथि संस्कृत मृतभाषा थिक । एहि बातकेँ हम किछु आर फरिछा कए एना कहब जे ई अर्धमृत लोकक भाषा थिक । अस्तु, छोड़ू ई विषय । साहेब मौसूफक कृपासँ मियाँजीकेँ एक चाकरी भेटि गेलनि । ओहि चाकरीक नाम थिक थानाक दरोगागिरी । मियाँजी सविघ्न आ निर्विघ्न नोकरी कएलनि आ पर्याप्त धन-सम्पत्ति अरजि लेल घर-द्वार, गाछी बिरछी-गृहोपकरण, एहि सभक अतिरिक चारि तालुकाक जमीनदारी सेहो अरजलनि । पहिने उड़ीसाक जमीनदारी कलकत्तेमे नीलाम होइत छलैक । मियाँ कोनो हत्याक मामिलामे एकबेर चालान लए कलकत्ता गेल छलाह । ओहि खेप फतहपुर सरसंड तालुकाक जमीनदारी सेहो डाक बाजि कीनि लेलनि । हमर गप्पक प्रसंग अहाँकेँ शंका भए सकैत अछि । ओहि दिनक थानादार तँ आजुक बंगाल पुलिसक इन्सपेक्टरक तुल्य होइत छल, तखन एतेक रास पाइक जोगार कोना कएलक ? अहाँ एहि बखेड़ामे नहि पड़ू । आँखि-मूनि चुपचाप पढ़ैत चलू । हमर बातमे मिसियो भरि फूसि रहैत नहि अछि । जे किछु अछि से सभटा निर्मल सत्य । ई सभकेँ बूझल होएतनि जे कोनो डिपटी साहेब गोविन्द पंडा ब्राह्मणकेँ मुकदमामे डिगरी देल तँ पंडा जी कल्याण-कामनासँ आशीर्वाद देलथिन, ''डिपटी बाबू, अहाँ दरोगा भए जाउ ।'' एहि बातक मर्म बुझलिऐक ? बुद्धिमान लेल इशारे

काफी होइत अछि । कलकत्ताक एक नामी धनपति मोतीशील पूर्वमे खाली बोतल बेचैत रहथि । एहि पर एक सूँड़ी कलपि-कलपि कहैत फिरए-मोतीशील खाली बोतल बेचि-बेचि करोड़पति भए गेल, आ हम भरल -भरल बोतल बेचि-बेचि कंगालक कंगाले रहलहुँ । हमरा शंका अछि कतेको बी. ए. पास बाबूलोकनि एही मियाँक खिस्सा सूनि ओही सूँड़ी जकाँ कलपैत कहताह— हाए ! हाए ! मियाँजी उलटा कलमे खाली नामे लिखि जमीनदार भए गेलाह आ हम सोझ कलमसँ पैघ-पैघ लेख लिखिओ कए पेटोक जोगार नहि कए सकैत छी । की ओहन बाबूसभ ई नहि जनैत छथि जे भाग्यं फलति सर्वत्र, न विद्या न च पौरुषम् ?

अलीमियाँकेँ एकमात्र बालक नाम शेख दिलदार मियाँ उर्फ छोटे मियाँ । बालककेँ योग्य आ कुशल बनएबामे दरोगाजी कोनो कोताही नहि कएल । फारसी पढ़एबा लेल गामे पर बहुत दिन धरि एक मौलवी साहेब राखल गेल छलाह । पन्द्रहम वर्ष चढ़ैत-चढ़ैत छोटे मियाँ पूरा वर्णमाला आ हिज्जे सीखि लेने छलाह । बाइस वर्ष पूरा भए गेलनि, तैओ मौलवी साहेबक सामने झूमि-झूमि पोथी पढ़ैत रहब छोटे मियाँकेँ कोना-दन लगलनि । लोक की कहत ! आओर दोस्त-महीम सभ आबि-आबि अनेरे सोझामे बैसि रहैत छलनि । प्रतीक्षामे बैसल मित्रलोकनिक कष्ट देखब मियाँ साहेबकेँ असह्य भए गेलनि । खास कए जखन मौलवी साहेब कहए लगथिन जे निसाँ पीने लोक जानवर भए जाइत अछि तँ स्थिति एकदम सहन-सीमा सँ बाहर भए जाइत छल ।

एक दिन मौलवी साहेब भोजन कए उतान भेल पड़ल छलाह । सुतरी कटैत काल गोंढ़ि सभ जेना सोनकेँ सरिआए पसारि दैत अछि, तहिना जकाँ मौलवी साहेबक दाढ़ी गरदनि आ छाती पर पसरल छल । गुड़गुड़ीसँ चिनगी उड़ि दाढ़ीमे पड़ि गेल । दाढ़ी जरए लागल । धाह लगलनि तँ साहेब घड़फड़ा कए उठलाह आ तौबा तौबा दाढ़ी झाड़ए लगलाह । चिनगी टूटि-टूटि फुलझड़ी जकाँ झरए लागल आ नान्हि-नान्हि टा अग्निकण कपड़ा-लत्ता पर पसरि गेल । पाकल दाढ़ीक लट बाण जकाँ चारूकात छूटल । 'अमाह आह तौबा रे, मुइलौं तौबा रे' कहैत मौलवी साहब घर भरिमे फानि-फानि आगि मिझबैत रहलाह । लंका-दहनक समय जखन हनुमान जीक मुहमे आगि लागल तँ हुनक मुह केहन लगैत छल, तकर विस्तृत वर्णन महर्षि वाल्मीकि नहि कएने छथि । तँ उपमाक रूपमे ओहि बातक चर्चा करब युक्तिसंगत नहि । सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पंडित : मौलवी साहब नीति शास्त्रक एहि वचनक अनुसरण करैत आधा दाढ़ीक परित्याग कए सर्वनाशसँ बचि गेलाह आ राति भरि भक्तिपूर्वक बिसमिल्ला-बिसमिल्ला करैत भीतरसँ बिलैआ लगौने कोठलीमे बंद रहलाह आ तकरा परात अनरोखे निपत्ता भए गेलाह । तहिआसँ आइ धरि हुनका मेदिनीपुरमे केओ नहि देखलक । जखन ई खबरि बड़े अलीमियाँक कानमे पड़ल तँ ओ बजलाह—'कोनो हर्ज नहि, हमर दिलू तँ शिक्षा पाबि चुकल । हम केवल अपन नाम लिखए जनैत छलहुँ तँ एतेक टाका कमएलहुँ । हमर दिलू तँ बहुत सिखलक । ओहि

दिन हमर समक्षहि परीक्षा देलक । अपन नाम लिखलक । कलकत्ता, मेदिनीपुर हाथी घोड़ा बाग-बगीचा कते चीज लिखलक । वड़ा साहेब ई खबरि पबितहिँ दरोगागिरी दए देथिन हमही तँ एहि बातकेँ नुकौने छी । हमही चाहैछी जे दिलू नोकरी नहि करए । ओ एखन नेना अछि । एतेक परिश्रम नहि कए सकत ।' तकरा बाद अली मियाँ बेटाकेँ लगमे बैसाए दुनियादारीक काज-धन्धाक अनेक उपदेश देलनि । विशेषत: उड़ियाक जमीनदारीक प्रसंग बड़ चतुरतासँ उपदेश दैत कहल, 'सुनह बाउ, ओहि देशक माहंती सभ बड़ चोर होइत अछि । हम हिसाब-किताबमे पक्का छी तँ हमरा ठकि नहि पबैत अछि । ओकरासभक ठकपनी सुनबह एक दू तीन आ चारि इएह दुनियाँक हिसाब थिक । मुदा ओकरसभक हिसाब कोना चलैत छैक से बूझल छहु ? ओ कहत एकाएक, दूइए दू, दू दूना चारि । देखलह ने ! एक दू आ चारि तँ भेल, परंच बीचमे जे तीन होइत अछि से कतए गेल ? इएह तीन टाका ओ सभ चोरि करैत अछि । इत्यादि-इत्यादि ।

जमीनदारक वंश-परिचयमे एतेक राश गप्प लिखए पड़ल । मुदा ई सभ बात ताहि दिनक थिक । आइसँ पाँच वर्ष पूर्वहि करामत अली दुनियाँसँ चलि गेलाह । आइ छोटू मियाँ उर्फ दिलदार मियाँ स्वयं जमीनदारीक मालिक छथि । प्राय: घड़ी भरि राति बीतल होएत । जमीनदार शेख दिलदार मियाँ कचहरी-घरमे बैसल छथि । पक्का मकान । कक्ष कोनो तेहन छोट-छीन नहि, खूब नमहर चाकर-चौरस । नीचामे एक पैघ सन सतरंजी बिछाओल अछि । सतरंजी बड़ पुरान-सन लगैत अछि । दस-बारह ठाम तेलक दाग । पन्द्रह-बीस ठाम प्राय: चिनगीक कणसँ जरल छेद । कोर फाटल । ओही शतरंजीक बीचमे देवालसँ सटा कए बनारसी गलैचा बिछाओल गलैचाक उपर देबालसँ ओङठल पैघ सन बनारसी गेडुआ अछि । दूनू कात कदीमा सन-सन आर दू टा बनारसी गेडुआ अछि । ओही गलैचा पर स्वयं जमीनदार शेख दिलदार मियाँ विराजमान छथि । पहिरनमे छनि किमखाबक ढील-ढाल पएजामा, साटिनक चपकन आ माथ पर बनारसी टोपी, कानमे इत्रक फाहा, आगूमे चानीक इत्रदान राखल, आरा तकर सटले गुलाबदान । गुलाबदानक लगमे सात हाथक पेचबला एक गुड़गुड़ी अछि । ओकर उपर छोटछीन सरबाक आकारक चिलम अछि । चिलमक उपर सरपोश अछि । सरपोशसँ चारि लड़ी बाला रूपाक सिक्कड़ि माटिकेँ छुबैत अछि । महादेवक समक्ष कारनी जेना धरना देने रहैछ ओहिना पैँचवान मियाँजीक पएर छूबैत लोटाइत अछि । किन्तु, आइ ओकर कोनो आदर नहि छैक । मनुष्ये जकाँ अचेतनो वस्तुक भाग्यमे परिवर्तन होइत रहैत अछि । घरक कोनमे आ एम्हर-ओम्हर जतए-ततए टूटल बाढ़नि, पानि भरल बधना, दू-चारि चंडूक पीनीक हुक्का, जरल चंडू आ गाजाक छाउर, पिआजुक खोंइचा, बकरीक भेड़ारी, आदि उपयोगी-अनुपयोगी, विहित-वर्जित पदार्थ छिड़िआएल अछि । पानक पीक आ पानक सीट्ठी आन सभ वस्तुसँ बेशी अछि । हम अपन प्रखर बुद्धिसँ बूझि गेलहुँ अछि जे एहि घरमे कहिओ काल बाढ़नि सेहो पड़ैत अछि, नहि तँ एक कोनेमे गदौस कोना जमा भए सकैत । कोठा उपर दिससँ

झरल अछि । धरनि संग लागल अपन जालसँ मकड़ा माछी-मोस कैं ठीक ओहिना तकैत बैसल अछि जेना सीसाक आलमारीमे ठूसि-ठूसि तहिआ ओल पोथीसभक बीच मसनदसँ ओडठल ओकीललोकनि अपन मोकिलकैं निहारैत बैसल रहैत छथि । कड़ीक दोग-सबमे बगड़ा मजलिस लगओने । ओहि मजलिससँ कखनो-काल खढ़क थोका अथवा एक-दू टुकड़ी खसैत रहैत अछि । नीचाँक मजलिस निस्तब्ध अछि । सभ गुम । मियाँजी गाल पर हाथ देने चुप-चाप बैसल । वाटरलूक युद्धमे हारि नोपोलियन एना नहि बैसि सकैत छल; किएक तँ अंग्रेज सेंट हेलेना पठएबा लेल ओकरा पकड़बाक चेष्टामे छल । मियाँजीक समक्ष सात जन मोसाहेब चिन्तामग्न बैसल ओंघा रहल छथि । उस्ताद जी बकाउल्ला खाँ दूनू पाएर कुड़िअबैत, ठेहुन पर दाढ़ी राखि बैसल अछि । पठान कुलक तलाक-स्त्री जकाँ, तानपूरा, आओर बँस बिट्टीमे फेकल छुतहर-खापरि जकाँ तबला ओँघड़ाएल अछि । घरक एक कोनमे फतुआ खबास बामा हाथमे कोनो वस्तु राखि दहिना हाथक बुढ़बा आङुरसँ ओकरा मलि रहल अछि । बीच-बीचमे बिचला आँगुरसँ ठोपे-ठोपे पानि खसबैत जाइत अछि । मुंशी जाहिर बख्श एक टुकड़ी कागत पर लिखल कोनो फिरिस्त हाथमे राखि ओहिना ठाढ़ छथि जेना डिपुटी साहबक सोझा कोनो चोर । मियाँ साहेब दीर्घ श्वास लैत पूछल, 'आब कोन उपाय कएल जाए ?'

मुंशीजी बजलाह —''सरकार, हम भरि दिन बौआइत रहलहुँ । कतहु कोनो जोगाड़ नहि लागल । महाजन रामदास कहलक, तमस्सुक बीस हजार आ हथपैंचक चारि हजार ई चौबीस हजार टाका ओकर बाँकी भए गेलैक आ आब आर कर्ज देबा लेल ओ राजी नहि अछि । बजारक मोदी आ दोकानबलाक बकिऔता चारि हजार भए गेलैक । ओ काल्हिसँ उधार देब बन्द कए देलक ।''

मियाँ बजलाह—''बेकूफ, कमबक्त अपाटक नहितन ! तोँ अब्बा जानक अमलदारी सँ काज करैत आबि रहल छेँ । बीस वर्ष पुरान खबास राम सरकारकैं जबाब दए तोरा एही हेतु कारकुन बनओने छलिऔक जे तोँ दोस्त छैं, काबिल छैं । बेर पड़ला पर तोँ सम्हारि तक नहि सकैत छैं ?''

मुंशी जहीर बख्श बाजल—''श्रीमान्, हम अपाटक किएक होएब ? राम सरकार किछुओ कर्ज नहि अनने छल । हम तँ पाँच वर्षक भितरे पचीस हजार कर्ज आनि देलहुँ ।''

मियाँजी बजलाह—''छोड़ ओ सभ गप्प । एखन समस्या ई अछि जे इज्जति कोना बाँचत । जनैछैं, सम्पति सधए फेर पूरए, गेल पति फेर न घूरए ।''

मोसाहेबसभ ओँघा रहल छल । ई गप्प सुनितहि सभ केओ एकहि संग बाजि उठल—''अलबत्त ! अलबत्त ! ठीके ! ठीके !'' मियाँजी कहलथिन, जो घरक आश्रमी वस्तु हो वा जमीनदारी, जे मन होइक बंधक राखि आ । परंच जेना हो आजुक खर्चक ओरिआन अवश्य करिहेँ, सुन, कनी जल्दी । राति भए गेल अछि । कोनो बेशी टाकाक

प्रयोजन तँ नहि अछि । बाइजीक बिदाइ लेल सए टाका, बाइजीक शागिर्द आ दोस्तक खान-पान तथा पोलाओ-तोलाओ लेल सए टाका-बस दू सए टाका पर्याप्त होएत ।''

दोस्त सभ बाजल, ''वाजिब, वाजिब । बेशी टाकाक प्रयोजने की ?'' दोस्त हनु मियाँ बाजल, ''हजूर, ओ जे खोमटावाली खातुमुन्निसा आबि रहलि छथि ने, नामी कलाकार छथि । कश्मीरक एक नम्बर बाइजी । हुनक कौशल आ राग-रागिनीक आलाप अद्‌भुत अछि अद्‌भति ! ई देश हुनका प्रिय नहि छनि । ओ तँ केवल घुमबा लेल आइलि छथि ! हुनका तँ मुर्शिदाबादक नबाब, लखनौक नबाब, रोमक बादशाह, सोमक बादसाह, आदि गीत सुनबा लेल बजओने छथिन । बाइजी तँ आदर-सत्कारक भूखलि छथि, केवल आदर-सत्कारक । सरकारक प्रतिष्ठा जगजाहिर अछि । तैं ओ आइ आबि गेलि छथि आ एहि ठाम मजलिस करबाक इच्छा प्रकट कएल अछि ।'' दरबारक सभ लोक एकहि संग बाजि उठल, ''सरकारकेँ संसारमे के नहि चिन्हैत छनि । जे एक बेर सरकारक पोलाव चीखि लेलक से जीवन भरि आँगुर चटैत रहैत अछि ।''

दरबान शेख फज्जू अभिवादन करैत बाजल, ''सरकार, उड़ीसाक जमीनदारीक एक महाजन भेटक हेतु आएल अछि । आदेश हो तँ ओकरा हाजिर करी ।''

आगन्तुक आबि पाँच टाका सलामी दए माटिमे हाथ सटा सटा कए तीन बेर सलाम कएलक । दरबारमे जतेक लोक छल सभकेँ एक-एक बेर अभिवादन कएलक । एतेक धरि जे खबासो अभिवादनसँ वंचित नहि रहल । मियाँजी प्रशंसा कएल, ''लोक अछि बड़ मर्यादावाला।'' गान-मंडलीक संगतिया जकाँ एक स्वरमे सभ सभासद बाजि उठल, ''ठीके बड़ भद्रलोक छथि, बड़ होशियार छथि, 'मियाँ पूछल' तोहर नाम ?''

''रामचन्द्र मंगराज ।''

''की रामचन्द्र मामलाबाज ?''

''नहि सरकार, मंगराज ।''

''ओएह ठीक, रामचन्द्र मंगोराज ।''

रामचन्द्र निवेदन कएल, ''हम किछु अत्यन्त तुच्छ उपहार अनने छी । आदेश हो तँ उपस्थित करी ।''

''वेश, बेस लाउ ।''

उपहार वस्तु सभ एक तालपत्र पर लिखल छलैक । पढ़ल गेल, पाँच बोरामे महीन अरबा चाउर—एक माण आठ नउती; खेरहीक दालि—दू बोरामे बतीस नउती; राहड़िक दालि-एक बोरामे अठारह नउती; घी—एक माटमे पचीस सेर; भोस आ कठिया केरा—पाँच घौर; पाकल केरा—दू घौर; अल्लू-आठ विशे ।

मियाँ बजलाह—''चाउर बड़ बढ़ियाँ अछि । पोलाओ जोग । घी सेहो उत्तम अछि ।''

मंगराज कहल— ''सरकार हमर पालनकर्त्ता थिकहुँ । पनरह पुरखासँ सरकारक अन्न

पर जीबैत छी। ई सभ तँ तुच्छ वस्तु थिक । सरकारक कृपा रहत तँ पोलावक चाउर, घी, दालि आदि बरोबरि पहुँचबैत रहब ।''

मियाँ—ओ—मि—याँ, ओस्ताज परम प्रसन्न भए वामा हाथसँ तानपूराक कान ऐंठैत सुर साधए लगलाह— गुम्-गुम्-गुम् !

ताक्, धिन्, धिन्, धिन्, ताक् धिन्, धिन्, गुम्— तबला पर थाप पड़ल ।

मियाँक आदेश भेल—''झटपट पोलाओ तैआर होअओ ।''

इसाइलोकनिक कहब छनि जे प्रलयक दिन स्वर्ग-दूतक बाँसुरी फुकला पर सभटा मुइल लोक अपन-अपन सारासँ उठि बैसत । मजलिस दुखसँ मरणासन्न पड़ल छल । मंगराजक टाकाक टनटनी सुनि फेर सब फुरफुरा उठल । मियाँ पेंचवानकेँ मुहमे सटौलनि, दू चारि दम नीक जकाँ सोंटलनि । करिया पहाड़ पर पसरल कुहेस जकाँ दाढ़ी पर धुआँ पसरि गेल । सरकार महानदीक जलकेँ नहरि द्वारा जेना परगना-परगनामे बाँटि दैत अछि, हुक्काक भीतर जमा धुआँ सेहो ओहिना नैच आ पेंचवान बाटेँ सभक मुहेँ मुह पसरि गेल । 'मे एं एं मे ए ऐं' पोलावक लेल एक खस्सी आनल गेल ।' दरबारमे भाव-बट्टा भेल-अढ़ाइ टाका । मंगराज अकचकाइत बजलाह—''की ? एही पठरूक दाम अढ़ाए टाका ? बाप रे ! एतेक दाम ! ''

मियाँ प्रश्न कएल—'' अहाँक गाममे एकर की दाम होएतैक ?''

डाक्टर जेना रोगीक परीक्षा करैत अछि तहिना खस्सीक आगू-पाछू वामा-दाहिना नीक जकाँ अहिया कए मंगराज बजलाह—'' खस्सीक दामे की ? दू आना ने चारि आना हुकुम हो तँ सरकारक लेल दस-पनरह गंडा पठा दी । हजूर, जमीनदारीमे जे नोकर-चाकर रखलहुँ अछि से मने परेखि कए नहि राखल । सोआइत एतेक टाकाक बेरबादी होइत अछि । अढ़ाए टाकाक इएह खस्सी ? बाप रे !''

ई सुनितहि दरबारमे आनन्दक जे स्रोत फूटल तरक वर्णन नहि हो । पलासीक युद्ध मे क्लाइब साहेबक विजयक खबरि पाबि बिलेँतमे कम्पनीक निर्देशक-मंडलकेँ एतेक आनन्द किन्नहु नहि भेल होएतैक, किएक तँ दिल्लीक भय तखनहु ओकरा मनसँ गेल नहि छल । ओस्ताजजी राग पुरबीक आलाप शुरू कए देलनि । समस्त दरबार आनन्दें माति गेल । सभक मुह पर बिहुँसी अपनहि आबि रहल छल । केवल मंगराज हाथ जोड़ने उदास मुहेँ ओहिना बैसल छलाह जेना जालक भीतर दाना बीछैत पक्षीसभक आनन्दकेँ बहेलिया चुपचाप देखैत रहैत अछि । हम मंगराजक मनक बात नीक जकाँ बूझि सकैत छी । लगैत अछि ओ एहि समयमे एही गुनधुनमे छलाह जे देखी चिड़ै कखनि कंपाक लग अबैत अछि आ मने-मन जपैत छलाह— आ रे बाबा चिड़िया, आबि जो, कंपाक नोक पर बैसि जो ।

एक नोकर दौगैत-दौगैत आएल आ बाइजीक शुभागमनक सूचना दए गेल । जाह ! सर्वनाश ! ई बात तँ ककरो मनमे छलैके नहि । ओस्ताज तँ खेलाएल लोक रहथि । ओ मन पाड़ि देल-बाइजीकेँ सए टाका नजराना देमहि पड़त । फेर ओएह चिन्ता, फेर ओएह

गुनधुन । भारतवर्षक वित्तीय व्यवस्था लेल पार्लिआमेंटमे एतेक चिन्ता किन्नहु नहि होइत होएत । कोनो बाट सुझिये नहि रहल छल । समयो कहाँ अछि ? अवसर पबितहिँ मंगराज कर जोड़ि बजलाह, ''सरकार ! सेवकक रहैत एतेक चिन्ता करबाक कोन काज ?'' एक बेर फेर सभक प्रशंसा आ धन्यवादक उद्‌गार सभक मुहसँ बाहर भए मंगराजक कानमे पड़ल । मियाँक आदेश भेल, ''बाह, मंगराज एखन तोँ जे उपकार कएलह अछि, तकर इनाम तँ तोरा फराकसँ अवश्य भेटतहु आ चारि आना प्रति टाकाक हिसाबसँ सूदि सेहो ।''

मंगराज बजलाह, ''राम ! राम ! सरकार, हम पिआजु आ बेआजु नहि खाइत छी ।''

ओस्ताज बाजल—''की बियाज नहि खाइत छी ? बड़ इमानदार लोक छी अहाँ । कुरान शरीफ मे जे पच्चीस नियम वर्णित अछि ताहिमे एक सूद लेब सेहो अछि ।''

इतिहासकारलोकनिक कथन छनि जे दिल्लीक बादशाहसँ बंगालक सूबेदारी प्राप्त करबामे क्लाइब साहेब कैँ ततबे समय लागल छलनि, जतबा समय एकटा गदहाक मोल-मोलइ मे लगैत । तखन फतेहपुर सरसंडक तहसीलदारी आ समस्त अन्य अधिकार प्राप्त करबामे मंगराजेकैँ किएक बेसी समय लगलनि ?

नवम परिच्छेद

गामक हाल-चाल

फतेहपुर सरसंड बड़ पैघ तालुका अछि । सदर जमा पाँच हजार दू सए आठ टाका छओ आना छैक । कुल ओसूली लगानसँ अढ़ाए गुना बूझू । उपरी आमदनीक कोनो लेखा नहि । तालुकामे पाँच मौजे छैक— मौजे रामनगर, बलिया, हाँड़िखाई, सौतुणिया आर गोविन्दपुर । गोविन्दपुर सबसँ पैघ अछि । कम-सँ-कम पाँच सए घरक बस्ती, सभ जातिक लोक अछि । एकटा दोकान सेहो अछि । ओहिमे स वस्तु बिकाइत छैक । चाउर, दालि, नोन, तेल जे चाही से कीनि लिअ । दू-चारि पाइक घी चाही तँ सेहो भेटि जाएत । दोकानमे तीन पुरुखासँ जोगा कए राखल जड़ी-बूटी (दशमूल) सेहो भेटत । दू-तीन कोसक वैद्यक पुरजा अबैत रहैत छैक । गाम लम्बा-लम्बी अछि, मुदा एक सोझमे नहि, ओड़ियाक आठ जकाँ तिरछल । गाम असुरदिग्घीक उतरबरिया आ पछबरिया प्रहारकेँ आधा-आधा छेकने अछि । बीचमे गली अछि आ तकर दूनू कात दू पतियानीमे घर अछि । गली बीच मे बेस चाकर अछि, तथापि अएबा-जएबाक बाट दस-बारह हाथसँ बेशी नहि होएत । गलीक दूनू कात सभक दरबाजा पर एक-एक गोबरखत्ता अछि, आ किछु परती सेहो । ओहि परती पर भिनसर कए गाए-बरद बान्हल जाइछ । ठाम-ठिम कठही गाड़ी सेहो अछि । गलीसँ प्रत्येक घरक द्वारि धरि जएबा लेल फूट-फूट बाट अछि । गाममे तीन टोल अछि— मलिकान टोल, ताँती टोल आ बभनटोली ।

मलिकान टोलमे स्वयं रामचन्द्र मंगराजक डेओढ़ी छनि । तँ ओहि टोलमे खूब चहल-पहल रहैत छैक । छओ घंटा राति धरि कचहरी चलैत रहैत छैक दोकानो एही टोलमे छैक । पहर राति बीतैत-बीतैत सभ टोल निसबद भए जाइत अछि ।

बभनटोलीक वास्तविक नाम थिकैक शासन । 'शासन' भागमे भाए-भातिज मिला कए कुल पाँच सए लोक होएत । घर बहत्तरि टा छैक । शासनक गलीक दो बगली लगभग डेढ़ सए नारिकेरिक गाछ छैक । बीचमे एकटा पैघ पीड़ी बान्हल छैक जतए बलदेवक पूजा होइत छनि । पीड़ीसँ दस-पन्द्रह हाथ हटि नारिकेरक कैकटा नबगछुली छैक जकर जड़ि चिक्कन चुनमुन छैक । कात-करोटक स्थान सेहो नीपल-पोतल सन छैक । एहीठाम बाभन लोकनिक बैसकी होइत छनि । नोसि लेब, भाङ घोँटब, जजमनिकाक गप्प, जजमान-घरक गप्प, कमाइ-खटाइक गप्प इत्यादि सभ कथुक समाधान एही ठाम होइत

अछि । कहियो-कहियो ओतए खूब घोल-घपच्चा बजरि जाइत छैक । ओहि दिन अपनहि बुझा जाएत जे आइ जजमनिकामे भेटल उत्सर्गक चाउर अथवा दान-दक्षिणाक बाँट-बखरा भए रहल अछि । ओहि घोल-घपच्चाकेँ सूनि लोक कहैत छैक, मुट्ठी भरि चाउरक लेल बाभन कुकूर जेकाँ अपनामे कटाउझ करैत अछि । लोककेँ कहबामे की लगैत छैक ? परंच, लोकसभक एहन-एहन बात हमरा कनियो सोहाइत नहि अछि । कारण जे जँ ई सभ निपट मूर्ख छथि तँ ताहिसँ की ? काजमे कोढ़िआँठ रहथि तँ ताहिसँ की ? ब्राह्मण कर्महीनो होथि तँ छतीसो वर्णक राजा होइत छथि । कुकूरसँ हिनक तुलना, भनहि लाखो बेर कएल जाए चुकल हो, कथमपि उचित नहि; आ उपमा सेहो ठीक-ठीक बैसैत नहि अछि । किएक तँ महापात्रक झगड़ा प्रेतक उद्देश्यँ उसरगल गेल भीजल चाउर लेल होइत अछि । मुदा कुकूर कटाउझ करैछ ऐंठ लेल । अहीं देखू, कतए प्रेतक निमित्त उसरगल पवित्र चाउर आ कतए मनुष्यक ऐँठाओल भात ? कतेक अन्तर अछि ! ततबे नहि, कुकूर एक दोसराकेँ हबकैत अछि । बाभनमे लाठी-लठौवलि भलहि भए जाए, हिनका अपनामे दँतकट्टी वा नोछरा-नोछरी करैत केओ नहि देखलक । आकाशमे गीधकेँ उड़ैत देखि जेना बुझा जाइछ कतहु मर खसल छैक, तहिना कनेक दिन चढ़ला पर सेहो पात्र लोकनिकेँ चानन-ठोप कएने झुंडक झुंड बहराइत देखि लोक सहजहि अनुमान कए लैत अछि जे कोनो गाममे केओ स्वर्गवासी भेलाह अछि ।

पाणिग्राहीक हिस्साक 'बाटी' मिला कए 'शासन'क हिस्साक कुल जमीन पाँच सए 'माण' होएत । मराठा सूबेदार ताम्रपत्र द्वारा ई जमीन ब्राह्मणलोकनिकेँ एहि निमित्त देने छलाह जे ब्राह्मणलोकनि त्रिकाल संध्याक समय नित्य हुनका आशीर्वाद देल करथि, आ तकर बदला स्वत्व रखैत ओकर उपजा भोगथि । त्रिकाल भेल भूत, वर्त्तमान आ भविष्य । भूतक बात भूते-प्रेत जानए । भविष्यक बात कोनोटा मानव नहि जनैछ । तखन रहल वर्त्तमान; तकर हाल हम जनैत छी । माल-जाल ताकि-हेरिआनब, बथान पर बान्हब-छान्हब, धूआँ-धूकुर करब आ हरबाह-चरबाहकेँ खोआएब-पिआएब—एही सभमे साँझ पड़ि जाइत छनि; तखन भूमिदातासँ केओ आशीर्वाद कखन देताह ? एक दिन ई गप चलल तँ भोवनीवाहिनीपति साफ-साफ कहि देल,"हमरा जमीन अछिए कहाँ जे संध्या-समय आशीर्वाद दिअनि । " एहि बातकेँ एकदम फूसि कोना कहब । 'शासन' क हिस्साक पाँच सए 'माण' मे सँ गत दस वर्षक अभ्यन्तर चारि सए 'माण' तँ केबाला भए गेल । जे किछु बचल अछि से एहि हेतु जे मंगराज सम्हारने छथि । 'गोब्राह्मणहिताय च' मंगराज अत्यन्त साकांक्ष रहैत छथि । हेराएल-भोतिआएल गाएकेँ मंगराज अत्यन्त सतर्क रहि अपन बथान पर राखि लैत छथि । पाण जातिक केओ-केओ लोक एहन अनेरुआ गाएकेँ लए अबैत अछि आ इनाममे किछु-ने-किछु पाबि जाइत अछि । बरदकेँ छाड़ि केवल गाइक संख्या तीन सएसँ बेशी होएत । गोमाता एम्हर-ओम्हर बौआइत कष्ट कियेक उठाबथि ? तेँ हुनका सम्हारि रखैत छथि । बड़ बेशी भेल तँ पठान आ गोआरकेँ आधा छीधा देअए पड़ैत

छनि । ओहिना ब्राह्मणक खेत सेहो किनैत छथि आ तकरा सम्हारि कए रखैत छथि । ब्राह्मण देवता जमीन कोना नहि बेचथि । एक तँ बाभनक खेती, दोसर चोर-चहार सेहो डेबि-डेबि कए ब्राह्मणेक खेतसँ धान कटैत अछि । आओर जँ थोड़बो जमीन मंगराजक हाथ केवाला कए दैत छथि तँ चोर-चहार डरेँ आरियो पर नहि जाइत अछि । केओ-केओ कहैत अछि, मंगराज पाँच-पाँच टकामे पाँच-पाँच 'माण' किनलनि । ई बाजब बुद्धिक दोष थिकनि । अहीँ कहू, एक माण रोपि पाँच 'माण' अहाँ कटैत छी की नहि ? तखन मंगराजक टाका कि बाँझ छनि, की ओहिमे सूदिक बिआन नहि होएतैक ?

माझ शासनमे शिवू पंडितक घर छनि । ओ कहैत छथि जे हुनक पितामह बिकी खाडंगा आठो अध्याय व्याकरण मुहजवानी सुना सकैत छलाह । नैषधान्त पाठ सेहो हुनका कतहु अँटकैत नहि छलनि । पंडितक मातामह व्याकरणक शब्द आ संधिकेँ कोइली-गीत जकाँ गाओल करैत छलाह । ओलोकनि पितामह-मातामहक पोथी रेहल मे आ शालिग्रामक काठ आसनी मे जोगा कए रखने छथि आ नित्य ओकर पूजा करैत छथि । शिबू पंडित स्वयं अपनहु एक प्रकाण्ड पण्डित छथि । पोथीक डोरी बिना खोलनहि शब्द कोशक पाँच वर्ग सुना सकैत छथि । पंडितक सामन्त पिताक ममिऔतक बहिनोइक मसिऔत नवद्वीप जाए न्यायशास्त्र पढ़ि आएल छलाह । सारांश ई जे खाडंगा-वंशहिक प्रतापेँ विद्या एहि 'शासन' मे टिकल अछि । हिनक घरक ओसारा पर चौपाड़ि चलैत अछि । शासनक नेना-सभ ओतए साँझ-परात पढ़ैत अछि । एकतालीस कर्म आ सोलह कर्मांग सेहो एही ठाम पढ़ल जाइछ । कोनो-कोनो बच्चा कक्षा-दू-कक्षा फानिओ अगिला वर्गक लाभ पाबि लैत अछि ।

ताँती टोलक पछबरिया पैँतिआनीमे डेढ़ सए ताँतीक घर छैक । एहि टोलक गली कुच्ची चिक्कन-चुनमुन अछि । गोबरखत्ता कि गोबरौड़ एहिठाम नहि अछि । अहाँ किनसाइत ई बूझि लेने होएब जे एहिठाम पंचायतक कानून चलैत होएतैक । नगरपालिकाक लोक कूड़ा-करकट उठाए लए जाइत होएत । हम अहाँकेँ सतर्क कए दैत छी, कोनो बातकेँ बिना बुझने अनुमानसँ पक्का नहि मानि लिअ । हम नाना तरहक खोज-पुछारीक बाद सबूत जमा करैत छी, तखन लिखैत छी । ई श्रम हमरा अहीक भ्रमक निवारण लेल करए पड़ैत अछि । नहि तँ प्रयोजने की छल ? आओर अंट-संट लिखि फेकब हमर अभ्यासक प्रतिकूल अछि । जकर अकाट्य प्रमाण नहि भेटैत अछि, बा जे न्यायशास्त्रक अनुसार संगत नहि, तेहन बात हम सुनितहि नहि छी । जे-जे बात लिखब तकरा सभकेँ न्यायशास्त्रसँ सिद्ध कए देब, अहाँकेँ किछु बजबाक प्रयोजने नहि रहत । देखू प्रमाण-प्रयोगक प्रसंग न्यायशास्त्र कहैत अछि जे 'पर्वतो वह्निमान् धूमात्' अर्थात् पहाड़सँ धूआँ किएक छुटैत अछि ? एहि हेतु जे भीतरमे आगि छैक । आगि नहि रहैत तँ धुआँ कतए सँ अओतैक ? महानदीक पानि उमड़ल आबि रहल अछि से देखितहिँ अहाँ बूझि जाएब जे उपरमे भारी वर्षा भेलैक अछि । कार्य-कारणक एहने एक नित्य संबंध होइत अछि । कारण नहि तँ कार्य सेहो नहि ! एतए नदीक उमड़बाक कारण अछि वर्षा । ओहिना अकाट्य तर्क दए हम सिद्ध कए सकैत छी जे गोबर आ गाइक

संबंध नित्य छैक । ई वात अहाँ अवश्य मानि लेब, कारणक अभाव भेला पर काजक अभाव होइत अछि, अर्थात् ताँती टोलमे गोइठाक घूरक अभावक कारण थिक गाइक अभाव अर्थात् ताँती टोलमे गाए नहि अछि,तँ गोइठा नहि अछि । अहाँक मनमे एकटा आओर शङ्का रहि जाएत । गाए तँ बाघ-भालु नहि थिक जे जंगलमे रहए ? ओ तँ गमैआ पशु थिक । गाममे रहबे ओकर स्वभाव थिकैक । जतए पानि ततए माछ, ओहिना जतए गाम ततए गमैआ पशु । ई तँ सोझ-साझ बात भेल । ताँती टोल सेहो एक गाम थिक । तखन ओतए गमैआ पशु किएक नहि रहए ? हमरा परमेश्वरक सृष्टिमे अनेक सर्जन-व्यभिचार देखबामे अबैत अछि; मने हुनक काजमे किछु-ने-किछु गड़बड़ी छनि, आकि ढिलाइ । देखू, की पशु की चिड़ै-चुनमुनी, की कीट-पतंग, सभमे नर-मादा होइत अछि । परंच सभमे एक-आध नपुंसको भेटिए जाएत । ओहिना ई ताँती टोल गाम होइतहु गमैआ पशुसँ रहित अछि । पशु संबंधमे ई टोल मानू हिजरा थिक । अर्थात् ने तँ एहिठाम बाघ, भालु आदि वन्य प्राणी अछि आ ने गाए आदि गमैआ ग्राम्य पशु । तकरो कोनो कारण भइए सकैत अछि । कारण बिना कार्य नहि होअए, ई न्याय-शास्त्रक एक सूत्र थिक । वैयाकरण जखन कोनो सूत्रसँ इष्टसिद्धि नहि कए पबैत छथि तँ निपातन सिद्ध कहि काज सुतारि लैत छथि । परंच ई तँ एक प्रकार क बुधिबधिआ भेल । एहन चलाकी हमरासँ नहि होएत । अस्तु, विषयपर आउ । पहिने बूझि लेल जाए जे ताँतीटोल मे गाए कियेक नहि छैक ? एकर कारण की । 'बाइबिल' मे लिखल अछि 'एक नोकर दू मालिकक सेवा नहि कए सकैत अछि' । प्राय: एहिना देखल जाइत अछि जे शास्त्रकार मोटामोटी दुरूह बात कहि काज सुतारि लैत छथि । टीकाकार नहि होइतथि तँ मूल ग्रन्थकेँ बूझब नितांत दुरूह रहैत । मल्लिनाथ, मथुरानाथ, श्रीधर आदि व्याख्या नहि कए गेल रहितथि तँ रघुवंश, न्याय, भागवत सन-सन ग्रन्थ आइओ बस्ता-झप्पामे बान्हि धएले रहैत । ओहिना हमहुँ यदि बाइबिलक टीका नहि कए दी तँ बुझब सरल नहि होएत । अहाँ बड़ चेष्टा करब तँ घीचि-तीरि कए एक प्रकारक अर्थ लगा लेब । परंच, सभक बुतेँ तँ सभ काज नहि भए सकैत छैक । बाइबिलक उक्त वचनक अर्थ ई थिक जे एक समयमे एक व्यक्ति दू काज नहि कए सकैत अछि अर्थात् ताँतीक दिन तँ वस्त्र बिनबामे बीति जाइत छैक; खेती-पथारी लेल ओकरा पलखति कहाँ छैक । आ जखन खेतिए नहि करबाक छैक तँ बरद रखबाक कोन प्रयोजन ? आ जँ बरदे नहि तँ गोबर कतए सँ आओत ? गोबरक अभावमे गोबरखत्ताक अभाव भेल । आ जँ टोलक गली-कूचीमे गोबरखत्ता नहि, तँ गली-कुची चिक्कन-चुनमुन अछि ।

आइ एहि उन्नैसम शताब्दीमे विज्ञानक महत्त्व खूब बढ़ि गेल अछि, किएक तँ इएह शास्त्र सभ उन्नतिक मूल थिक । देखू ने अंग्रेज कतेक गोर-नार होइत अछि आ उत्कलवासीक चाम केहन कारी खटखट अछि । एकर इएह कारण थिक जे ओसभ विज्ञान पढ़ने अछि, उत्कलवासी कनेको नहि पढ़ने छथि । आधुनिक विज्ञानक चर्चा कएल जाए, किएक तँ वर्त्तमान प्रसंग एही शास्त्रक अनुसार सिद्ध कएल जाए सकैत अछि । अहाँ कनेक

ध्यान दए पढ़ू, तखनहि बूझि पाएब जे विज्ञान-शास्त्र कतेक ठीक अछि । एहि शास्त्रक नियम अछि जे एक स्थान पर दू वस्तु नहि रहि सकैत अछि । अहाँ ई शंका करब जे तखन अहाँक बाटीक दूधमे पानि कोना रहत । एहि शंकाक समाधान हेतु उक्त नियमक व्याख्याक प्रयोजन अछि । अर्थात् एक स्थान पर दू वस्तु एक संग अर्थात् एके समय नहि रहि सकैत अछि । बाटीमे दूध भरल अछि तँ ओहिमे पानि नहि अँटि सकैत अछि । वस्त्र बिनबा लेल आँगन-बाहर दूनू स्थान आवश्यक अछि । घरक भीतर कपड़ा बीनल जाइत अछि । सूत कैं भिड़िआएब, सूत तैआर करब इत्यादि काज घरक बाहर होइत अछि । सूतकैं मजबाक स्थानपर गोइठाक घूर करब असंभव अछि । ततबे नहि, जा धरि दूनू बेकती लागत नहि, कपड़ा तैआर नहि भए सकत । सूतकैं भिड़िआएब, लटाइ अथवा चरखा पर चढ़ाएब, नड़िआ बाँटब आदि सभ काज ताँती करैत अछि । बाट-घाटसँ गाए-बरदकैं हाँकि आनि बन्हबाक फलखति ओकरा कहाँ भेटैत छैक । एहि तरहैं आरो अनेक कारण अछि । परंच बात बढ़ाए लिखब हमरा पार नहि लगैत अछि । तैं सभ बात ठीक-ठीक लिखि दैत छी ।

दशम परिच्छेद

भगिया आ सारिया

ताँती टोलक एक छोर पर भागवत-घर आ दधिवामनक मन्दिर अछि । ताँतीक जवारी बेहरीसँ मन्दिर बनल अछि । अहाँकेँ बुझल अछि जे ई जवारी टाका की थिक ? अवश्य बुझल होएत । अहाँकेँ बुझाएब जरूरी नहि अछि । हम तँ आन-आन नव बाबू-भैआक लेल लिखि रहल छी, जनिका ई बुझाएब आवश्यक अछि । किएक तँ मानल जे ओ सभ विद्वान् छथि, पैघ-पैघ विषय पढ़ने छथि, पैघ-पैघ गप्प बुझल, छनि परन्तु अपन बाप-पितामहक नाम पुछिऔन तँ कोड़ो गनए लगताह, मुदा बिलेंतक चार्ल्स तेसरक पन्द्रहम पुरखाक नाम ठोरे पर होएतनि । अंग्रेजी समाज वा फांसीसी समाजक विषयमे पढ़लासँ लोक विद्वान् कहत, अपन जाति-पाँति, पड़ोसीक जाति पाँति वा समाजक प्रसंग किछु बुझब कोनो आवश्यक नहि ? छोड़ू ई सब बात । एहि सभ बाबू-भैआ ई सब सुनि अप्रसन्न भए जएताह । हमरहि कहबाक काज कोन ? हँ, जवारी टाकाक अर्थ सुनल जाए । जवारमे केओ अनुचित काज कएलक तँ पंच ओकरा दंडित करैत छथि । आ जातिक कोनो खगल लोक दंड भरि नहि पबैत अछि तँ पंच परमेश्वर किछु 'मान्य' लए ओकरा उठा लैत छथि । से टाका जातिक मानिजनक ओतए जमा होइत अछि । ताही टाकासँ मन्दिरक निर्माण भेल अछि । ई सभ नियम हटवाल जातिमे प्रचलित अछि । परंच आब तँ कचहरीक आगू मेला लगैत अछि । लोक ज्ञानी अर्थात् सभ्य भए गेल अछि । आब पंचक फरिछौट के मानत ? अंग्रेजी कानून कहैत अछि— 'देखू बाबू, सावधान रहू, अहाँ कोनो अपराध कएलहुँ आ हमरा तकर कोनो कानून-संगत प्रमाण भेटि गेल तँ हम दंड अवश्य देब ।' चतुर लोक कहैत अछि, 'हँ अपने कैं सबूत नहि भेटए तकर उपाय हमरा खूब बूझल अछि ।' आ ओकील साहेब हुनकर पीठ ठोकि बजै छथि—'कोनो चिन्ता नहि, बटुआ खोलू, हम फूसिकेँ सत्य आ सत्यकेँ फूसि साबित कए देब ।' एकर फल ई भेलैक अछि जे कतेको चतुर आ धनवान् लोक सए अपराध कएलो पर देह झाड़ि बिदा भए जाइत छथि । दिक्कति होइत छनि निर्धन जनकैं । आ मोकदमामे टाका खर्च करैत-करैत दूनू पक्ष कंगाल भए जाइत छथि । ओही टाकाकेँ बारह प्रेत बाँटि खाइत अछि । पहिने पंचकैं ठकबाक कोनो उपाय नहि छलैक, ततबे नहि, प्रकृत अपराधीसँ जे दंड लेल जाइत छल से सत्कार्यमे लगाओल जाइत छलैक ।

ताँती जातिक लोक बुद्धिहीन होइत अछि सेहो बहुत गोटए कहताह । ककरो बुद्धिमे कोनो त्रुटि देखितहिँ लोक कहि दैत अछि, 'तोँ ताँती थिकह की ?' अर्थात् तोँ ताँती जकाँ बकलेल छह । यदि अपने सभ्य भए गेल होएब तँ ताँती द्वारा दधिवामन मन्दिर बनएबाक गप्प सूनि ओहि प्रकारक प्रवादकेँ अकाट्य सत्य मानि विश्वास करए लागब । अपने कहब, सार्वजनिक टाकाक एहन अपव्यय किएक ? कलक्टर साहेबक नाम पर इनाम दिऔक, नहि तँ लाट साहेबक नाम पर अस्पताल खोलू, ई मन्दिर कथी लेल ?

अपनेक मनक अनुकूल बात बाजब तँ हमरासभक काजे थिक, परंच अपनेक ई गप्प हमरा कोना-दन लगैत अछि । अपनकेँ कहल नहि जाए से तँ ठीक, मुदा अपनेकेँ बुझल अछि जे 'तन्त्री-वुद्धि' शब्दक की अर्थ होइत छैक ? ई एक योगरूढ़ शब्द थिक । जेना 'पंकज' माने कमल । पाँकमे जनमल आओरो पदार्थ अछि, जेना घोँघा, सितुआ, सेमार आदि । की ओ सभटा कमल थिक ? कथमपि नहि । तहिना ताँती माने बुद्धिहीन भलहि हो, बुद्धिहीनक अर्थ ताँती नहि होइछ । हालहिमे तँ मैन्चेस्टरक ताँतीसभ संसदकेँ हिला देने छल, ई बात अहाँकेँ बूझल नहि अछि की ? अहाँ जे बाबू बनल छी से ककर प्रसादात् ? ताँतिएक प्रसादेँ ने ? एहि तरहेँ ताँतीक बुद्धिक प्रति दोषारोप करब एक प्रकार धृष्टता थिक । गणना कए देखिऔक, हमरालोकनि सभक पूर्वज ताँतिए छलाह । एकर प्रमाणक संग्रह लेल पुरातत्व-विद्याक अनुशीलन नहि करए पड़त । गाम-गामक देव-मन्दिर सभ एकर प्रत्यक्ष साक्षी अछि ।

कोनो विषयक पक्ष-विपक्ष बिना देखने झटपट कोनो निर्णय पर पहुँचि जाएब ताँती-पना थिक । हमरा सभक एहने-सन विश्वास अछि । देखल जाए, ठीके देवमन्दिर ताँती-सभक कृति थिक कि नहि । निपट्ट देहाती सभक गप्प अहाँकेँ बुझल होएत । ओ सभ दुख-वेगरतामे दिन भरि लागल रहैत छथि, आ साँझ होइतहि मुट्ठी भरि किछु खाए सूति रहैत छथि । गाममे ने कोनो धर्मप्रचारक रहैत छथि आ ने कोनो पुस्तकालय रहैत अछि । तखन ओसभ धर्म-कथा कतए सूनत ? मन्दिरमे साँझ-परात शंख बजैत अछि । ई शब्द आबालवृद्ध नरनारीकेँ बुझा दैत छैक जे एहि संसारक केओ स्वामी अछि । मन्दिरमे भागवतक गद्दी होइत अछि । राधाष्टमी, कृष्णाष्टमी, कार्तिक मास आदि पर्वक दिन मंदिर मे भागवत-पाठ होइत अछि । लोक जा कए सुनैत अछि । मंदिर नहि रहितैक तँ भगवानक नाम वा शास्त्रपुराण कतए सुनैत ? केओ परदेसी आबि जाइत अछि अथवा गामक कोनो घरमे कोनो सुविधा-असुविधाक कारणेँ भानस नहि होइत छैक तँ पुजेगरीक ओतए ओ दू पाइ दए भरि पेट प्रसाद पाबि लैत अछि । पंचायत अर्थात् गौआँक झगड़ा-दनक फरिचोट मन्दिरहिमे होइत अछि । जँ हम संक्षेपमे अंग्रेजी अनुवाद कए दी तँ अहाँ सहजहि बूझि जाएब । देखू, मन्दिर गाम क चर्च (भजनालय), पब्लिक लाइब्रेरी (सार्वजनिक पुस्तकालय), होटल (भोजनालय) आ टाउन हाल (भागवत-घर) ई चारू काज करैत अछि । अस्तु, छोडू एहि बातकेँ, हमरा तँ आरो कतेक बात लिखबाक अछि ।

अन्यान्य हटवाल जाति जकाँ ताँती तकरो सभक एक माइनजन होइत छैक । ओएह जातिक प्रधान होइत अछि । जा माइनजनकेँ नहि धरब ता जातिगत कोनो काज नहि ससरत । विवाह-द्विरागमन हो कि छठिहार, माइनजने जातिमे गूआ बँटैत अछि । एहि हेतु ओकरा एक टुक वस्त्र आ एकटा गूआ 'मान्य' (मानदेय) भेटैत छैक । जाति बीच कोनो झगड़ा-दन भेला पर माइनजने गूआ बाँटि पंचैती बैसबैत अछि । सभामे फू ल-चानन पहिने माइनजनेकेँ देल जाइत छैक । जबारी भोजमे जावत धरि माइनजन 'कृष्ण' कहि कओर नहि उठाओत ता धरि सभ केओ हाथ बारने रहत । माइनजनक पद वंशानुगत होइत अछि । अर्थात् माइनजनक बेटे वा ओकरे वंशक केओ व्यक्ति माइनजन भए सकैत अछि, केओ अदना नहि ।

वर्त्तमान माइनजनक नाम थिकैक भगिया चन्द्र । बेचारे भगिया बड़ सोझमतिया अछि । छल-कपटक लेश नहि । एकरा लेल गाइयो हँ बरदो हँ । 'नहि' कहब तँ ई जनितहि नहि अछि । गौँआसभ एकरा 'बुधुआ ताँती' कहैत छैक । अहाँक पेटमे कोनो बात घुरि-आइत अछि । हम तँ लक्षणहिसँ बुझि गेलहुँ । अहाँक मुखाकृतिएसँ सभ बात झलकि रहल अछि । अहाँ कहि रहल छी, वा कहब वा कह ए, चाहि रहल छी, वा चाहब जे ई सभ निच्छछ ताँती नहि तँ आर की थिक ? माइनजनक बेटा थिक तँहि बुधुआकेँ माइनजनी देमए पड़लैक आ आब ताँती ओकरहि पूजैत अछि । अओ बाबू, जखन ककरहु माइनजन बनाबक हो तँ संदक सदस्य अथवा युनाइटेड स्टेट्सक राष्ट्रपतिक निर्वाचन जकाँ लोकसभक भोट लए कोनो बालिग लोककेँ माइनजन चुनि लिअ । ई कोन बात जे माइजनक बेटा भेनहि कोनो अयोग्य लोककेँ माइनजन बना लेलहुँ ? बात यथार्थ । मन मानि गेल । बात उचित हो तँ ननु-नच करक कोनो प्रश्ने नहि । हमसभ सदाएसँ ताँतीसभक बाट धए चललहुँ, किएक तँ आन कोनो बाट नहि सुझैत छल । आब प्रतिज्ञा करैत छी वा करब जे ताँती सभक विचार दिस कहिओ नहि झुकब । अस्तु, ताँतीसभ केँ चिन्हि राखब उचित होएत । हे पाठक ! ज्ञान हमरा अत्यल्प अछि । वस्तुतः ताँतीकेँ चिन्हबामे हम नितान्त अक्षम छी । कृपा कए हमरा ताँती चिन्हा दिअ ने ।

हिन्दू रहल तँ वेद, वेदान्त आदि हिन्दू शास्त्र अवश्य मानत । शास्त्र कहैत अछि—

शमो दमस्तपश्शौचम् सन्तोषः क्षान्तिरार्जवम् ।
मद्भक्तिश्च दया सत्यँ ब्रह्मप्रकृतयस्त्विमाः ।।

इएहसभ ब्रह्मत्वक लक्षण थिक । एहिलक्षण सँ युक्ते ब्राह्मण पूजनीय वरणीय थिकाह, भक्तिक पात्र थिकाह । एहन ब्राह्मणक चरण-धूलि माथ पर लगएबा लेल सदा प्रस्तुत छी । परन्तु—

सुनू परिक्षित सुवचन मोर । सुकठी झींगा माछक झोर ।।
कारी अक्षर चुट्टी-धारी । चानन-ठोप जनौ बड़ भारी ।।
खेत-पथार देखओ केओ आन । दधि-चूड़ा पर बाघ समान ।।

संध्या ओ गायत्री छाड़ि । खेतहि खेत करथि मछबाड़ि ।।
पोथी-पतरा गेलनि छूटि । आनथि दानक चाउर लूटि ।।
सभा बीच मुह लागए टाटी । कहबथि विद्यानाथ त्रिपाठी ।।

से एहन-एहन त्रिपाठीलोकनिक पाएर छूबि गोर लगैत अछि, किएक तँ ओ ब्राह्मणक औरस पुत्र थिकथि । ओएह त्रिपाठी अहाँक कुलपुरोहित छथि, किएक तँ हुनकर पिता कुल-पुरोहित छलाह । अहाँकेँ तँ बजबाक साधंस नहि होएत मुदा हम अपन पोथीमे नाम टिपि रखैत छी । पुनः शास्त्रमे लिखल अछि—

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगरवे नमः ।।

जे अज्ञानरूपी नेत्ररोगसँ आन्हर लोकक आँखिकेँ ज्ञानरूपी अंजन-शलाकासँ उन्मीलित करैत छथि ओहि गुरुकेँ प्रणाम करू ।

सत-सत कहू तँ,अहाँ एहन कोनो व्यक्तिकेँ ताकि गुरु बनओलहुँ अछि आ कि गुरुपुत्रे अहाँक गुरु छथि ? छोडू, ईसभ गप । कहिकेँ की होएत ? हूँ,एहिसँ ताँती जातिक परिचय भए गेल । कनही गए कनही, अपन टेटर तँ देख । जँ ताकए चाही तँ एहन ढेर कनही-कनही भेटि जाएत । जेना धनकुटनी भ'गवत-पाठ करए तहिना हम गामक गप्प लिखैत-लिखैत अहाँ-सन-सन लोकक गप्प करए लगलहुँ। मुदा बूझल अछि, जखन कोनो प्रश्न उठैत अछि तँ केओ अपन बातक झटहा मारबा सँ बाज नहि अबैत अछि, भलहिँ ओ झटहा खाधि-खत्तामे पड़ैक आकि आरि-धूरपर । संकीर्तनमे तँ बुड़िबको-सभ आँ आँ करैत अछि ।

छोडू ईसभ गप्प । आब सुनू गामक हाल । भगिया जेहन सुद्ध अछि ओकर घरवाली सेहो तेहने सुद्ध अछि । नाम थिकैक सारिया । उमेर पचीसक धकमे होएतैक । सारियाक गुण तँ सुनल, आब रूपवर्णन सेहो सुनब की ? देखू, परमुखापेक्षी होएब बड़ खराब बात । अपन बुद्धिबलसँ अनुमान द्वारा किछु-किछु बुझबाक चेष्टा करू । केवल हमरे दिस टकटकी नहि लगाउ । अनुमानसँ कोनो बात कोना बूझि सकैत छी तकर जँ मूल सूत्र अहाँ जानि लेब तँ अहाँक बाट स्वतः प्रशस्त भए जाएत । जेना, जखनहि सुनी जे युवती राजकुमारी थिक, कि चट बूझि ली जे ओ कन्या परम सुन्दरी, परम गुणवती होएत । 'उपमिय रमा उमा संग ताही । तनि-सम कहब जगतमे काही, भलहि ओकर गाल आमक चोकड़-सन आ नाक फौंफी-सन होउक । जखनहि सूनी जे फल्लाँ जमीनदार धनवान् छथि तखनहि बूझि जाइ जे ओ रूपवान्, गुणवान्, दानी, दयानिधान इत्यादि छथि । अस्तु, आब हमर गामक ताँतिन सारियाक समस्त वृत्तांत बूझि लेल जाए ।

भगिया चन्द्र आ सारिवा घरमे दुइए प्राणी अछि। जनी-जाति बजैत अछि— *'बेटी ने बेटा, भने दूपेटा 1 दुइए परानी भल । बान्ह मोटरी चल ।'* ककरहुसँ ने लेन-देन, ने झगड़ा-दन । क्षणो भरि दूनूक बीच कोनो खटपट नहि । दूनू मिलि कए घर सम्हारैत अछि । ओम्हर

भगिया ताँती बिनैत रहैत अछि तँ एम्हर सारिया नड़िया बटैत रहैत अछि, सूत भिड़िअबैत, चरखामे सूत नुड़िअबैत रहैत अछि । सारिया जखन भानस कए बैसैत अछि तँ भगिया चूल्हि फूकैछ, पानि भरि आनि दैछ । गामक मखौलिआ आ कुचेष्टी लोकसभ एकरा देखि झकड़ा पढ़ैत अछि— *''भगिया बतहा सारिया बतही, कनहा के भेटलै कनियाँ कनही ।''* बाह ! की अपूर्व कविता । मुदा हम तँ बुझैत छी, जकरा नाम पर एहन-एहन कुकाव्य पसरैत अछि, सएह एहि जगतमे वास्तविक भाग्यवान् थिक, सएह भीतरसँ स्वर्गक काल्पनिक सुखक अनुभव करैत अछि । एक अंग्रेज कवि कहने छथि, जे केओ विशुद्ध दाम्पत्य-प्रेमक अनुभव करैत छथि, सएह दिव्य प्राणी थिकाह । एहन प्रेमक जे निन्दा करैतछथि से नरक भोगताह ।

ओह ! हमरासँ बड़का त्रुटि भए गेल । 'मुनीनां च मतिभ्रमः ।' मुनि सभकेँ पढ़ैत-लिखैत काल बड़-बड़ गोट स्खलन भए जाइत छनि । अर्थात् लिखबामे जे गलती करैत छथि सएह मुनि होइत छथि । सरिपहुँ, आइसँ लोक हमरा मुनि वा ऋषि कहल करत, ताहिमे कोनो टा सन्देह नहि । अहो भाग्य । बारहो मास साहेबक द्वार पर बिज्जी जकाँ नुड़िआए नहि पड़त, हजार-हजार टाका कर्ज लए अस्पताल नहि बनबए पड़त, अथवा सोझ बात मना लेबा लेल फ्रांसीसीक हाथ-पाएर नहि गहए पड़त । फोकटमे भारी नाम भए गेल । बात ई छैक जे सत्यक मर्यादाक रक्षाक हेतु स्वार्थक त्याग करबामे हम कहिओ कदरएलहुँ नहि । न मिथ्यापातकम् परम् । अर्थात् मिथ्या आ पातकी दोसराक लग नहि जाइछ, अपने लग रहैछ । तँ हमरा यथार्थ लिखए पड़ि रहल अछि ।

भगिया-सारिया दुइए प्राणी नहि अछि । एकटा गाए सेहो छैक । ओकर नाम थिकैक नेत । नेत लगा कए घरमे तीन प्राणी भेल । गाएकेँ सेहो हम मनुष्यक श्रेणीमे लेल अछि, से ओहिना नहि । एहिमे एक कारण छैक । नेतकेँ सारिया अपन बेटी-जकाँ पोसैत छैक, बेटिए जकाँ दुलार-मलार करैत छैक । भगवान् लोकमे अद्भुत वात्सल्य भरि देने छथि । जेना भूख लगला पर भात नहि भेटने लोक गाछ बिरिछ भकसए लगैत अछि, तहिना जकरा सखा-पात नहि रहैत छैक से कुकुरक कुतरू, गाइक नेरू अथवा बिलाड़िक बच्चाकेँ पोसि ओकरे दुलार-मलार करए लगैत अछि । सारिया दिन-राति नेतमे लागलि रहैत अछि । फूजल रहलो पर नेत कतहु जाइत नहि अछि । सारियाक लगेमे रहैत अछि । जहाँ कने परोछ होइत छैक कि सारिया सोर पारैत छैक 'नेतिया !' नेत हुकरैत अछि---हं--- आ--- माँ, आ दौड़ि कए आबि सारियाकेँ चाटए लगैत अछि । सारिया जखन ओकरा सोहराबए लगैत अछि, तँ ओ बड़ नितराए लगैत अछि, लेर चुबए लगैत अछि । गाए अपन बहुत रास सुख-दुखक बात व्यक्त करैत अछि । जँ तपत भात पनिअएबा काल नेते भातमे मुह दए दैत अछि तँ सारिया हल्लुक-सन स्नेह-सिक्त चटकन मारि हटा दैत छैक—''धुत छुलही !'' निःसंदेह एहन मधुर गारिक भीतरमे सारियाक आनन्द आ प्रेम भरल रहैत अछि ।

भगिया, सारिया आ नेत तीनू प्राणी एके घरमे सुतैत अछि । सारिया नेतक पछुआड़ मे धानक भुस्सी आ कड़सीक धुआँ कए दैत अछि । नेत बड़ सुलक्षणी अछि, किछुए दिन पहिने पहिल बेर बाछी भेलैक अछि । ओकर सगर देह कारी छैक; चानि पर उज्जर चान छैक । 'कारी गाए माथ चान, झटपट आनि अपन घर बान्ह ।' सींघ पातर, छोट आ मकुआएल अछि । नाँगरि सोझ आ खूब नमहर । पुछरीक केश-गुच्छ भुइआँ लोटैत । पीठ कनि धँसल, निमुठ हाथसँ कने चाकर । पहुलाठ चाकर-चौरस । पुट्ठा छोट कदीमा सन पीठक दिस नमड़ल । घार आन गाइक अपेक्षा बेशी झुलैत । थनक तँ गप्पे नहि हो, जुन्ना सन-सन मोट । 'पयोधरीभूतचतुरस्समुदा' । नेत कलिंगा गाय जकाँ बेसी पैघ नहि, मध्यम आकारक अछि । डाकक वचन अछि—

पेट भरि ऊँच गाए । बोरी भरि गूँडा खाए ।
खूब घास खोआबी । खूब दूध पाबी ।।

कहबी छैक दूध गाइक मुहमे होइत छैक । तँ की अहाँ झबही-डाबा लए कए गाइक थूथून दूहए बैसब ? मानू गाए कागतक कारखाना थिक । एम्हर मुहमे लत्ता-चेथड़ा, उखड़न-पुघड़न, घास-पात सड़ल-गलल तुरौड़ा झोंकैत जाउ आ ओम्हर निर्मल-धवल चिक्कन कागत उठबैत जाउ । ओहिना गाइक मुहमे घास-पात, खुद्दी-मेरखी, माड़-गूड़ा, चुन्नी-कुन्नी भरि दिऔक तँ थन बाटे दूधक धारा बहए लागत । नेत कतेक दूध दैत अछि से तँ हम नहि कहि सकैत छी, मुदा ओहि दिन मंगराजक दरबारमे जे नेतक चर्चा भेल रहए ताहिमे सभक अनुमान छल जे दूनू साँझ मिलाकए पाँच सेरसँ कम नहि होइत होएतैक । मंगराज दीर्घ निसाँस लए बाजल रहथि—एँ ताँतिआक एहन गाए ?

लोक कहैत अछि— 'बाप-गुन पूत' । परंच वास्तवमे वंश-नाशक समय घोड़मुहे पूत जनमैत अछि । भगियाक बाप गोविन्द चंद्र गामक प्रियपात्र छल । पूजनीय छल । अपन गामक अतिरिक्त आस-पासक दू-चारि गाममे पंचैतीक समय गोविन्द चन्द्रक बजाहटि होइत छलैक । बड़बड़ जटिल मोकदमाक जाँच बेर गोविन्द चन्द्रक खोज होइत छल, अर्थात् चपरासीक माध्यमे बजाहटि भेला पर वा डाकपिउनक बेरंग डाक अएला पर जावत धरि गोविन्द जूमए नहि ता लोक अपन घरसँ बहराए नहि । गोविन्द बिनबाक काज स्वयं नहि करैत छल । ताँतीसभक बीनल वस्त्र लए हाटमे बेचैत छल अथवा उपरका महाजनक अएला पर ओकरा माल पटा देल करैत छल । एहि प्रकारेँ दस-पाँच पाइ सदा ओकर हाथमे रहैत छलैक । अनुमान-विद्यासँ लोक गमि लेने छल जे गोविन्दक हाथमे हजारक हजार टाका रहल करैत छैक । लोक अपन आयु आ दोसराक धनकेँ बेशी मानितहि अछि । जे हो, एतबा तँ सत्य जे गोविन्द दस टाका अरजि लेने छल । जमीनदार बाघ सिंहक वंशक पतनक समय जमीन खंड-खंड कए बिका गेल छलैक । गोविन्दपुर गामक निचला इलाकामे 'छ माण आठ गुंठ' क एक कित्ता छलैक । जमीन ओहासीक, निचला छोर पर बाटी जकाँ गहीर छल आ छल लाखराज अर्थात् कर-मुक्त । गोविन्द तकरा कीनि लेने छल । "जतए

खसए बस्तीक ओहासं । ततहि करथि जठेरैअति चास ।'' अर्थात् गामक जेठरैअति गामक सबसँ नीक जमीनमे खेती करैत अछि । उक्त जमीनमे ओहासीक पानि खसैत अछि, अतः ओ परम उपजाहु अछि । खूब बरखा भेला पर ओहिमे 'रावणा' धान होइत अछि—

टेबथि उत्तम खेत किसान । रोपथि घन कए 'रवणा' धान ।।
सीस हो लम्बा भरि-भरि हाथ । देखि पड़ोसी पीटथि माथ ।।

ने दाहीक डर आ ने रौदीक । 'माण' पाछू आठ 'भरण' धान तँ पहिनहि जोखबा लिअ । भगिया ताँती थिक, ओ खेती की करत ? बटाइ लगा कए माण पिछू पाँच भरण, पचास नउती धान पबैत अछि । भगिया बकलेल भलहिँ हो, ओकरामे सद्गुणो अनेक छैक । श्राद्ध, मंगला, नवान्न आदि अवसर पर जतिआरए नौतैत अछि । भाट-भिखारि ओकर द्वारिसँ कहिओ घुरैत नहि छैक । 'केओ शत्रु नहि बौक-बलेलक ।' हमर सुधुआ-सुधुआनिकेँ गप्प धरि नहि करए अबैत छैक । गाममे झगड़ा-दन होइत छैक तँ ओ भीतरसँ बिलैआ ठोकि लैत अछि । गामक सभ लोक ओकरासँ स्नेह करैत छैक । अभावे सभ दुखक मूल थिक । धन, विद्या, ख्याति, स्वास्थ्य आदि कोनो वस्तुक खगता वा लोभ भेला पर आकि परमावश्यक वस्तुक अभाव भेला पर लोक कष्टक अनुभव करैत अछि । हमर ताँती-दम्पतिकेँ कोनो वस्तुक अभाव नहि छलैक । पवित्र दाम्पत्य स्नेह, विशुद्ध प्रेम, अखंड सन्तोष, निखंड स्वास्थ्य, सरल धर्मभाव आदि स्वर्गीय भाव यदि अपने एकहि ठाम समाविष्ट देखबाक इच्छुक होइ तँ हम एहि ग्रामीण ताँती-परिवारक उल्लेख कए सकैत छी । नेनहि सँ हम देखि-सुनि आ पढ़ि-गुनि इएह बुझल अछि जे विधाता कोनहु मनुष्यक कपारमे अखंड सुख लिखबे नहि कएल अछि । तँ की ओ ताँती-परिवार ओहि निसर्ग नियमसँ बाहर अछि ? महाकवि कालिदास लिखने छथि—प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानाम्पराङ् मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः । कहू तँ एहि महावचनक मर्यादाक उल्लंघन कोना होएत ?

तँ की मानि ली जे ई दूनू पूर्ण सुखी नहि अछि ? के कहए, आ केओ कहबे करए तँ कोना कहए ? शालग्रामक जहिना जागब तहिना सूतब । मनुष्यक हृदयक भाण हँसब-एकरा कानब द्वारा बाहर आबि जाइत अछि । हिनका तँ ने केओ हँसैत देकलक, न कनैत । गप-शपसँ एकर भाव बूझल जा सकैत छल, परंच ई तँ ककरो सँ गप्पे नहि करैत अछि । तैओ हमरा सँ ककरो बात नुकाएल नहि रहि सकैत अछि । सिकारी पएरक चेन्हक भाँज लगाए सिकार लग पहुँचि जाइत अछि । ओहिना हमहुँ लोकक काजक पछोर धए ओकर मनक भाव बूझि लैत छी । ओहि राति रुकुणीक माइक पुतोहुक छठिआरमे सारिया सेहो गेलि छलि । बच्चाकेँ देखि सोझे चलि आइलि, अनका जकाँ अहिबक फर बटबा धरि रहलि नहि । घर आइलि तँ पेटमे दर्दक लाथेँ उदास भए भुखले-पियासले सूति रहलि । हमरा बुझाएल जे बड़ी राति धरि ओकरा नीन नहि भेलैक । एहि करौटसँ ओहि करौट करैत रहलि । भगिया एक बेर बाजल—''विधाता देबे नहि कएलनि तँ दुख कए की ?'' विधाता की नहि देलन्हि से तँ ओ बाजल नहि । अहाँ की बुझलिऐक ? आइ-काल्हि बारहो टा

व्रत करबामे सारियाकेँ बड़ मोन लगैत छैक । बूढ़ी मंगलाक प्रति भक्ति सेहो दिन-दिन बढ़ल जाए रहल छैक । डाक्टर आ ओकीलक द्वारि पर ककरहु देखिऔक तँ बूझि लिअ जे कोनो विपत्ति पड़ि गेलैक अछि । परंच हमर बूढ़ी मंगला एहन छथि जनिकासँ ओकील आ डाक्टर दूनूक काज चला लेल जा सकैत अछि । गाममे ककरहु कोनो प्रकारक पीड़ा भेलैक, अथवा ककरहु पर कोनो प्रकारक मामिला-मोकदमा भेलैक, किछु-ने-किछु लाभ मंगलाकेँ भइए जाइत छनि । मंगलाक प्रति सारियाक भक्ति देखि हम बूझि गेलहुँ जे ओकरा मनमे कोनो दुख छैक । जखन सारिया ओसारा पर बैसि टेरुआ कटैत रहैत अछि तखन यदि सोझाँ कोनो गलीमे कोनो बच्चा आबि खेलाए लागए आ सारियाक ध्यान ओकरा दिस चल जाइक तँ टेरुआ नाचब बन्द भए जाइत छैक । अमावस्या-पूर्णिमाक दिन घरमे जँ ठकुआ-पुडुकिआ हो, किछु छेना-पनीर रहए तँ सारियाक मन कोना-दन करए लगैत छैक । जा भगिया शपथ दए-दए खुअबैत नहि छैक ता ओ खएबाक नाम नहि लैत अछि । एक दिन केओ फरमाइश कए भगियासँ एक जोड़ अठमी-फेटा बनबओलक । तैआर भए गेला पर जखन ओ ओसारा पर चौपेतए लागल तँ से देखि सारियाक आँखि नोरा गेलैक । भगिया ओ नोराएल आँखि देखि पैघ निश्वास लेलक ।

एगारहम परिच्छेद

गोबरा जेना

ताँती टोलसँ चारि-पाँच सए डेग हटि बीच पाँतरमे डोम-टोली अछि । ई कोनो दोसर मौजेमे नहि, गोविन्दपुरेमे अछि । गोबरा जेना अपना मौजे भरिक चौकीदार थिक । ओकरा डेढ़ 'माण' चौकीदारी जागीर छैक । एकर अतिरिक्त घनकटनीक समय प्रत्येक घरसँ एक-एक बोझ रखबारी ओकरा फराके भेटि जाइत छैक । गोबरा जेना अपन काज मे बड़ कुशल अछि । तँ गाममे चोरी-चपाटी नहि होइत चैक । तैओ वर्षमे चारि-पाँच ठाम गाममे सिंह पड़िए जाइत छैक । मुदा एहिमे गोबरा जेनाक कोनो दोष नहि रहैत छैक, किएक तँ ओहि चोरिक रातिमे जेना नेओत-पिहानमे चारि-पाँच कोस दूरक कोनो गाम गेल रहैत अछि ।

चौकीदार भरि राति गाममे पहरा दैत अछि । परन्तु ई तेहन चलाकीसँ पहरा दैछ जे कहिओ तकर भनक नहि लागत । जँ जोरसँ ठहकत तँ से सुनि चोर पड़ाए जाएत ने ! पहिलुका पुलिस बड़ घुसहा छल। लोक बजैत अछि । सत्य कि फूसि से जानथि जगन्नाथ । लोकक मुह के बन्द करत ? बाघ आदमीकेँ खा जाइत अछि तँ की सभ बाघ नरभक्षी होएबे करत ? की दुनियामे साधु चरित्रक बाघ अछिए नहि ? हमर जेना सेहो ओही प्रकारक एक साधु चरित्रक लोक अछि । ओ तँ अपन हके भरि लैत अछि । ओकर हक अर्थात् पौना दू-चारि मात्र छैक । सालभरिक बान्हल पौना, जेना कटनीक समय धानक बोझ, विवाह-द्विरागमन आदि पर एक गोटेकेँ पाँचो टुक कपड़ा, आ वरसँ चौकीदारी जकाँ सलामीक एक-एक टाका, मरण-हरणक बेरमे बान्हल किछु खर्च, लत्ती-फत्तीसँ कुम्हर-कदीमा आदि-आदि । एकर अतिरिक्त ककरोसँ आर कोनो घूस-घास छूबैत तक नहि अछि। रहल बात चोरि-चपाटी, साँप काटब, डूबि मरब आदिक केसमे पुलिसकेँ खबरि करबाक खर्चक एक टाका, से तँ कानूनेमे अछि । ओहिसँ चौकीदारीकेँ कोन संबंध ? अपितु, एहन मामिलामे गोबरा अर्थात् गोवर्धन तँ दया करैत अछि । बड़ दयालु लोक अछि । कोनो खगल लोक पर एहन झंझट अबैत अछि तँ ओ पाइ लेल तंग नहि करैछ, एक फुलही लोटा मात्र लए ओकर काज निबाहि दैछ । मासमे एक बेर पुलिसमे रिपोर्ट लिखएबा लेल जाइत काल केराक घौर, कुम्हर, कदीमा ई सभ मुंशी, जमादार, सिपाही आदिक लेल लए जाइत अछि । ई तँ सामान्य बात भेल । काजक झंझटिमे जेना तेना बाझल रहैत अछि जे रातिमे अपन घरक भात खाए बाहर जाएत से अबसरे नहि भेटैछ । तेँ रतुका खेनाइ ओ गौंआक ओहिठाम

पार वान्हि करैत अछि । जाहि दिन जकर पार रहैत छैक ताहि दिन बेर अछैते ओ कहि दैत अछि, मुट्ठी भरि भात हमरो लेल रान्हब । कोनो सुविधा-असुविधाक कारणेँ यदि केओ भात नहि रन्हैत छैक तँ ओहि राति जेना ओकर घरक पहरामे ढिलाइ कए दैत छैक । चोरकेँ तत्कालहि तकर सुगन्धि लागि जाइत छैक आ ओहि राति ओकर बाड़ी-झाड़ीसँ फल-फलहरीक अथवा खेतसँ धानक चोरि भइएटा जाइत छैक । चोरकेँ आर किछु नहि भेटैत छैक तँ ओ गृहपतिक असोराक खाम्हे उखाड़ि लए जाइत अछि । गाममे भात खाए लेला पर गोवर्धन गामसँ अपन घर धरि, ''गौंआसभ, होशियार ! ओ घरबारी, खबरदार'' कहि दैत अछि । जागल धीयापूता चुपचाप सूति रहैत अछि । तकरा बाद चौकीदार भरि गाममे पहरा दैत रहैत अछि । मुदा से बात केओ बूझि नहि पबैत अछि ।

गोबरा जेनाकेँ केओ मामूली पाण नहि बूझि लिऔक । ओ हजार-पाँच सए गनि देमए बला लोक अछि । घरमे सदिखन पाँच-सात 'माण' धान रहैत छैक । केओ कतबो चलाक हो, बेर-विपत्ति कहिओ ने कहिओ सभ पर पड़ितँहि छैक । एक बेर ओकरहु पर चोरिक आरोप लागि गेल छलैक । सुनैत छी मुंशीकेँ अढ़ाए सए टाका सुँघाए उबरि गेल । घटना कोना भेल रहैक से सुनू । माखनपुर मौजेक भुवनीशाह तेली महाजनक घरमे डाका पड़लैक । ओहिमे आठ टा डाकू पकड़ाए गेल । ओहिमे एकटा दुकौड़िया पाण सेहो रहए । ओ भंडा फोड़ि देलक जे डकैती गोबरा जेनाक सह पर भेल; आओरो दस पन्द्रह चोरि गोबरा जेनाक सह पर भेल अछि; चोरिक सब माल ओकरे मार्फत बेचल जाइत अछि, इत्यादि इत्यादि । आन-आन मुजरिम सभ एहि बातक, साफ खंडन कए देलक तेँ गोबरा जेनाक उपर कोनो लांछन नहि लागि सकलैक ।

गोबरा जेनाक योग्यता देखि मंगराज ओकरा पर बड़ प्रसन्न छथि । ओहो साँझ-परात मंगराजक कचहरीमे आबि हाजिरी दैत अधि । मंगराज आ गोबराकेँ लोक आध-आध राति धरि एकान्तमे बैसल देखैत अछि । फतेहपुर सरसंड ताल्लुकमे अनेक पाण-परिवार बसल अछि । लोककेँ सन्देह छैक जे ओसभ चोरि, डकैती, बटमारी आदिक धन्धा करैत अछि । एहि सन्देहक कारण इएह अछि जे पुलिस आ जेलसँ एकरासभकेँ प्रगाढ़ संबंध छैक । गोवर्द्धनक गुणसभमे एकटा आर महान् गुण अछि । कोनो पाण जँ जहल जाइत अछि तँ ओकर असहाय धीया-पूताकेँ ओएह पालैत-पोसैत अछि । मंगराजक बखारीसँ ओकरा धान देआ दैत छैक । हँ, कुचेष्टीक कुचेष्टासँ कतहु त्राण नहि । लोक गोवर्द्धनक एहि सद्गुणक किछु दोसरे अर्थ लगबैत अछि । मंगराजक दानशीलताक चर्चा एहि संग करब ठीक नहि होएत ।

बारहम परिच्छेद

असुरदिग्घी

गोविन्दपुर मौजेमे एकटा पोखरि अछि । गाम भरिक पानिक काज एहीसँ चलैत छैक । पोखरि बड़ विशाल अछि । रकबा दस-बारह बीघासँ कम नहि होएतैक । नाम थिकैक असुरदिग्घी । पहिने एहिमे सोलह टा जाठि छलैक । परंच भगवानक कृपासँ आब सोलहो डूबि गेल छैक । मोहार कछेरसँ दस-बारह हाथ ऊँच अछि । पोखरि कहिआक थिक, के खुनबौलक, ई सभ प्रश्न तेहन अछि जकर उत्तर ठीक-ठीक दए सकबामे हम असमर्थ छी । लोक कहैत छैक ई पोखरि असुरसभ कोड़लक । से कोनो असंभव नहि । किएक तँ एतेक पैघ जलकीर्त्ति हमरा अहाँ सन अदना लोक कोना कए सकत ? गामक पंचानबे वर्षक बूढ़ एकादशी ताँतीक मुहसँ एहि पोखरिक जे इतिहास हम सुनले छी तदनुसार पोखरि बाणासुरक खुनाओल थिक । ओ अपन हाथमे कोदारि लए नहि खुनलक । ओकर आदेश पर असुरसभ आएल आ रातारात पोखरि खुनि चलि गेल । खूनैत-खूनैत राति बीति गेलैक तँ दछिनबरिआ कोनमे बारह-चौदह हाथ चाकर टिक्कर खालिए रहि गेलैक । ओहि पर माटि नहि पड़ि सकलैक । गाममे लोकक अबरजात शुरू भए गेल छलैक । असुरसभ जाएत कोना ? पोखरिक भीतरे-भीतर बिल खुनि, ओही रास्ते गंगा कात पहुँचि गेल आ गंगा-स्नान कए ओतएसँ पड़ा गेल । सुनैछी पूर्व कालमे जहिआ-जहिआ गंगासागरमे स्नानक वारुणी योग लगैत छलैक तहिआ-तहिआ असुरदिग्घी धरि गङ्गाक धारक सलार लागि जाइत छलैक । आब गाममे अनाचार बढ़ि जएबाक कारणेँ गंगाजल एतए नहि अबैछ । अडरेजिआ बाबू-लोकनि सावधान, हमर एकादशी चन्द्रक इतिहासकेँ सुनि अहाँ हँसब नहि, नहि तँ मार्शमैन आउटिंगक रचनाक प्रतिष्ठा नहि रहि जाएत ।

पोखरिमे माछ छैक । अहाँ कहब जतए पानि रहत ततए माछ रहबे करतैक । तखन ई बात लिखब व्यर्थ । परंच अहाँक ई कथन युक्ति-संगत नहि लगैत अछि । कुसिआरक संग गुड़क अथवा देहक संग हाड़क जेहन नित्य संबंध छैक तेहने संबंध जल आ माछक बीच सेहो छैक, से नहि कहल जा सकैत अछि । यदि से होइतैक तँ अहाँक घैलहुसँ माछ उजहिआइत रहैत । केवल अनुमान वा अँटकर पर कोनो बात लिखब हमर अभ्यास नहि । हम तँ एहि बातक अकाट्य प्रमाण देब जे असुरदिग्घीमे माछ अछि । हे देखू, दछिनबरिआ कछहेरिमे पानिसँ पाँच हाथ पर छोट-पैघ तीन टा गोहि मुह बओने ओंघराएल अछि ।

एहिना नित्य पड़ल रहैत अछि । आब अहीँ कहू जे पोखरिमे ईसभ किएक अछि ? की खाए जीबैत अछि ? की गाए-महीस जकाँ परती पर घास चरैत कहिओ केओ एकरा देखल अछि ? आ कि जैनसभ जकाँ ई अहिंसाकेँ परम धर्म मानैत अछि ? अबस्से ई सभ पोखरिक कोनो वस्तुए खा कए जीबैत होएत । परंच ओ थिक कोन वस्तु ? थूथूनबला गोहिक एक नाम थिकैक, मगरमच्छ । अर्थात् ईसभ माछ खाइत अछि । मुदा की आन ठामसँ आनिकेँ खाइत अछि ? हाट पर माछक सुकठीक खरीद-बिकरी अवश्य होइत अछि, परंच ओकरा पाइ लए कए हाट जाइत तँ केओ देखलक नहि ? आन-आन गामक मलाहिनिसभ माछ बेचए अबैत अछि तँ हमर गामक स्त्रीगण धान-चाउर दए माछ कीनैत अछि । परंच हम शपथ खाए कहि सकैत छी जे सौंस-घड़िआरकेँ एना माछ कीनैत कहिओ नहि देखल । एहि प्रकारेँ, ई प्रमाणित भेल जे दिग्घीमे माछ अवश्य अछि । ई बात नहि जे इएह यथेष्ट प्रमाण भेल, आरो अनेक अकाट्य प्रमाण अछि । इएह देखू ने, चारि-पाँच गोट धोबिनि चड़ै नटुआ जकाँ नाचि रहल अछि। एतेक नाच-कूद एहि लेल जे ओसभ एखनहि पोठी वा दड़हीक बच्चाक कंठ ममोड़ि देने होएत । एहि पर केओ कहत, ई धोबिनि चड़ै कतेक निठुर अछि, केहन दुष्ट अछि, जे ककरो गरदनि मचोड़ि एतेक आनन्दित भए रहल अछि । की कहल जाए । बेचारी चड़ैकेँ निष्ठुर कहि दिऔक, दुष्टा कहि दिऔक, बदमास कहि दिऔक, जे-जे फुरए से-से कहि दिऔक, ओ अहाँ पर मान-हानिक मोकदमा तँ नहि करत गए, मुदा अहाँ की ई बात नहि जनैत छी जे अहाँक मनुष्य-जातिमे स्वजातीय लोकक गरदनि जे जतेक मचोड़ि सकैत अछि से ततेक बहादुर मानल जाइत अछि । ओएह मान्य, ओएह गण्य, 'स च दर्शनीयः' होइत अछि ।

चारि-पाँच गंडा उजरा बगुला आ चारि-पाँच टा खेरा बगुला, छोट जातिक जन जकाँ, भोरसँ साँझ धरि कदबा करैत रहैत अछि । पोखरिमे माछ होएबाक ई तेसर प्रमाण भेल । एक जोड़ा पनिकौआ कोनो दूर देशसँ उड़ल-उड़ल आएल, पोखरिमे दू-चारि डूब मारि पेट भरि लेलक आ फुर्र दन उड़ि गेल । एकटा पनिकौआ मेम साहेबक गाउन जकाँ कचहेरिमे पाँखि सुखा रहल अछि । हे हिन्दू बकवृन्द, एहि अंग्रेज पनिकौआकेँ देखू । जानि नहि, कोन दूर देशसँ खाली हाथ आएल आ बैसिकेँ गड़ै-गड़चुन्नीसँ पेट भरि घर घुरि गेल । अहाँ केहन छी जे पोखरिक ठीक कछहेरि लगक गाछपर खोता लगाए एही ठामक वासी भए दिन भरि पानि घोंकैत ठाढ़ रहैत छी तैओ इचना-पोठी छोड़ि आर किछु नसीब नहि होइत अछि । जीवन-संग्रामक समय आबि तुलाएल अछि । तेँ आब आरो बेशी पनिकौआ सभ आबि-आबि बचल-खुचल गड़ै-गरचुन्नीकेँ उठा-उठा लए जाएत । जा धरि अहाँ विदेश जाए समुद्रमे हेलब नहि सीखि लेब ता धरि अहाँक इएह हाल रहत ।

चिलहोड़ि बड़ चतुर, बड़ होसिआर होइत अछि । गुरू गोसाइँ जकाँ डारि पर संचमंच बैसल रहैत अछि आ एकहि झपट्टामे पानिमे डूबि जे किछु पकड़ि लए जाइत अछि, ताहिसँ ओकर पूरादिन कटि जाइत छैक । गुरू-गोसाइँओ तँ साल भरि मठसँ नीचा पाएर नहि रखैत

छथि । वर्षमे एक बेर चेलाक ओहिठाम झपट मारैत छथि ।

कछहेरिसँ चालीस-पचास हाथ दूर जल-तल पर सिंघारक पातसभ पसरल अछि । पात सभक बीच रातिमे कुमुदक फूल, हिन्दू घरक सामान्यत: पुष्पवती लजकोटर कुलवधू जकाँ, चुपचाप फलकि उठैत अछि आ दिनमे सुटुकि जाइत अछि । ओकरा बीच सेमारक फूल कुमारि कन्या जकाँ बिनु लाज-धाकक दिन-राति बसातक चोट पर उमकैत रहैत अछि । पानिक भीतर रकतकोइ शिक्षिता क्रिस्तान महिला थिकीह । कमल-कुल मे उत्पन्न भेलहुपर कमलक जातिमे हिनक अँटाबेस नहि भए सकल अछि । पोखरिक मध्य भागमे एहि प्रकारक कोनो जल-वनस्पतिक पसार नहि अछि । ओतए रातिमे बूढ़ी मंगला भगवती टहलैत छथि । तैं, ई जल-वनस्पतिसभ ओम्हर पसरि नहि सकैछ । ओहिठामक जल-तल भारतीय कविक सर्वस्व लक्ष्मीक निवास, सरस्वतीक आसन आ ब्रह्माक जन्मस्थान अर्थात् कमलवनसँ पूर्ण अछि । कमलक फूल पर भगवतीक सोलहो आना अधिकार छनि । एक गोटा फूल तोड़बा लेल हेलैत जाए रहल छल । भगवती पाएर मे सिकड़ी लगा ओकरा पानिक भीतर खींचि लेलनि । तहिआसँ लोक ओहि फूलसँ दूरे रहैत अछि ।

असुरदिग्घीमे नहएबाक चारिटा घाट छैक । ओना, उपयोगक दृष्टि सँ तीन टा अछि । दछिनबरिआ घाट पर केओ नहि जाइत अछि । गाममे केओ मरैत अछि तँ श्राद्धस्थला एही घाट पर होइत छैक । ई घाट बड़ भयाओन । रातिक कोन कथा, दिनहुमे ओम्हर ककरहु नहि देखबैक । एहि घाट पर एक विशाल पीपरक गाछ अछि । सभकेँ बूझल छैक जे ओहि गाछ पर प्रेत-प्रेतनी रहैत अछि । कतेको गोटे देखलक अछि जे दोपहर राति कए दूनू प्राणी ओहि गाछक आगू पोखरिमे पाएर लटकओने बैसल अछि । के के देखलक अछि, से तँ केओ नहि कहत, परन्तु लोक देखलक अछि से सभ कहत । एतबे नहि, एहि कछेरमे अनेक पिशाचिनीसभ सेहो बसेर लेने अछि । ओसभ रहैत तँ अछि सभ दिन, परंच एहि बातक पर्याप्त प्रमाण अछि जे ओसभ अनहरिआ रातिमे दीप बारि-बारि माछ पकड़ैत अछि आ विशेष कए भदवारिक अन्हरिआ रातिमे झुंड बान्हि-बान्हि घूमैत अछि ।

पुबरिआ कछेरमे धोबिघट्टा अछि । दू गोटा धोबि हुँह-हे, हुँह हे ध्वनि करैत पाथरक पाट पर पटकि-पटकि कपड़ा धोइत अछि । ''देखक हो गामक सिटसाट, तँ जाउ सोझे धोबिक घाट ।'' बोराक चट्टी-सन मोट-मोट मैल-कुचैल कपड़ा ढेर लागल अछि, कपड़ा कैं भट्ठी चढ़एबाक आ सुखएबाक काजमे चारि धोबिनि लागलि अछि ।

उत्तर-पश्चिमक कोनमे ताँतीक घाट छैक । गामक बीचमे होएबाक कारणेँ भोरे-भोर ओतए स्त्रीगणक हाट लागि जाइत अछि । एकर अर्थ ई नहि बुझि लेब जे ओहिठाम महिलाक खरीद-बिकरी होइत अछि । हाट एहि लेल कहल जे लोकक कोलाहल आ मेलाक कारणेँ ओ स्थान हाट-सन लगैत अछि । भानस कएनिहारिसभक नहएबाक बेर मे तँ भारी भीड़ लागि जाइत छैक । गाममे दैनिक अखबार छपैत रहैत तँ पत्रकारलोकनि कैं समाचार जुटएबामे कोनो बेसी परिश्रम नहि करए पड़ितनि । एक पेन्सिल आ एक

टुकड़ी कागज लए बैसि जैतथि तुरन्त एकत्रे सभटा समाचार साक्षात् बटोरि लितथि । कल्हुकी राति ककरा घरमे की रान्हल गेल; आइ की रान्हल जएबाक छैक; के कखन सुतल; ककरा कतेक मच्छर कटलक; ककर घरमे नून नहि छलैक; के काल्हिए कनेक तेल अनलक; रामाक माइक आँगनमे जे नव कनिआ आइलि अछि से बड़ गलगरि, काल्हि आइलि आ आइएसँ सासुक बातक मुहे लागलि उत्तर देबए लागलि ; कमली सासुर कहिआ जाएत ; सरस्वती बड़ नीक अछि जेहने भानस-भरत मे कुशल, तेहने लाज-धाख मे शीलवती इत्यादि-इत्यादि । पदी पानिमे छपकुनिआ देने दाँत मजैत छोट-सन भाषण आरम्भ कए देलक । भाषणक सार ई जे एहि गाममे ओकरा सन भानस कएनिहारि आर केओ नहि अछि । आवश्यक-अनावश्यक गप्पक धार निरन्तर बहल जा रहल अछि । किछु सुन्दरीलोकनि अपन-अपन मुखक छवि आओरो निखारबाक हेतु आँचरक कोरसँ मुह रगड़ि रहलि छथि । लक्ष्मी तँ छकक उपरका स्थान मलैत-मलैत नाकक दूनू पूड़ाकेँ लाल कए लेलक अछि । बिमली पानिक कातमे बैसि अपन बाँहिक चालीस तोलाक पितड़िआ बाँक जोर-जोरसँ माजि रहलि अछि आ अज्ञातनामा व्यक्तिकेँ लक्ष्य करैत, शब्द-कोश-बहिर्भूत शब्दावलीमे गुम्फित वक्तृता नि:संकोच देने जा रहलि अछि । भाषणक विषय ई छल जे कल्हुकी राति ककरो गाए ओकर कुम्हरक लत्ती चरि गेलैक अछि । बिमली गोपतिक परलोकवासी तीन पुरखाक निमित्त कुत्सित पदार्थ-विशेषक भोजनक व्यवस्था करैत क्रमश: गाइक अत्याचारिता, अपन बाड़ीक उर्वरता, कुम्हरक लत्तीक तेजस्विता एवं भावी फलवत्ता आदिक वर्णनक संग ई मना रहलि छथि जे गोपतिक उपर अतिशीघ्र बड़का विपत्ति आबओ तथा ओही क्रममे ओएह गाए ब्राह्मणकेँ दान कएल जाए । एहि संबंधमे ओ विविध प्रमाणक प्रयोग सेहो करैत जाइत अछि । हम घाट पर आरो बहुत संवादक संकलन कएने रहतिहुँ, परन्तु सहसा मारकंडि माए आ यशोदाक बीच भयङ्कर युद्ध बजरि गेल, जाहिसँ वार्त्ता-प्रवाह अकस्मात् अवरुद्ध भए गेल ।

यशोदा पेट धरि पानिमे डूबि दाँत मजैत छलि । पाँच वर्षक मारकंडिया पानिमे कूदि पानि घोंकि देलकैक आ छिटका पड़ा देलकैक । यशोदा पानिसँ उठि ठाढ़ि भेलि आ ओहि छौंड़ाकेँ विखिन्न-विखिन्न गारि पढ़ए लागलि । ओकर परमायुक स्वल्पता मनबए लागलि । ताहिपर उत्तेजित भए मारकंडियाक माए दौड़ि आइलि आ समान स्वरमे उत्तर देमए लागलि । परिमाणत: युद्ध बजरि गेल । मारकंडियाक माए हारिकेँ अपने बेटाकेँ थोपड़ओलक, काँख तर घैल लए मारकंडियाक हाथ पकड़ि घर दिस बिदा भेलि, मारकंडिया 'में-' करैत दाँत निपोरैत कानए लागल-इति युद्ध-कांड ।

ठनका खसि पड़ेत अछि परन्तु ओकर ध्वनि बड़ीकाल धरि आकाशमे घनघनाइत रहैछ । झगड़ा तँ खतम भए गेल, परंच ओहि पर टीका -टिप्पणी बड़ीकाल धरि चलैत रहल । अधवयसू आ बूढ़िक दू गोल भए गेल । एक गोल मारकंडियाक तँ दोसर यशोदाक समर्थक भए गेल । हम तँ पूरापूरी यशोदाक समर्थक छी । विशेष विवेचना आ विश्लेषणक

सूक्ष्म विवेचनक उपरान्त हमरा बुझा गेल जे एहि उत्पातक जड़ि मारकंडिया अछि । ओएह दोषी अछि तथा ओकर अपराध अक्षम्य अछि । ओकरा जतेक गरिअएबाक हो गरिआ दिऔक, छरपटा दिऔक आ जे मनमे आबए से करू, उत्तरदायित्व लेबा लेल हम प्रस्तुत छी । देखू, जल लोकक जीवन थिक, आ एही ताँती -घाटक जल सभ पिबैत अछि । तकर घोंकि देब कि साधारण अपराध थिक ? देखू तँ, कमसँ कम सए-सबा सए जनीजाति एतए नित नहएबा लेल अबैत अछि आ पानिमे पेट डुबा कए बैसि दाँत माजए लगैत अछि । नव फेन-खण्डवत् शुक्लवर्ण थूक-खखार ओकर सभक मुहसँ बहार भए चारू कात दहाए लगैत अछि । ईषत्लोहित पाटलाभ जिह्वा खुरचन विनिर्गत मल चोतक चोत दहाइत रहैत अछि । ओकरा संग आर की-की बहैत रहैत छैक से के कहए । समस्त जनीजाति बाड़ीसँ आबि एतहि शौच करैत अछि । आनक गप छोड़ू स्वयं यशोदा सेहो एहिना करैत होएत । ओकरा जँ पुछबैक तँ ओहो नठत नहि । नठत किएक ? ई प्रथा तँ अदौसँ चलि आबि रहल छैक । एहिमे अपराध कोन जे केओ नुकाओत ? कोनो मखौलिआ कहि रहल छलैक, जनीजाति जतेक घैल पानि पोखरिसँ भरैत अछि, तकर चतुर्थांश ओहिमे उझलिओ जाइत अछि । ई गप्प सत्यो भए सकैत अछि, मुदा हमर चर्मचक्षुक परोक्ष अछि । कतेको स्त्रीगण सुतबाक गदैला पखारि-पखारि लए गेल अछि । चिलकाक बिछौना आ नाना प्रकारक गड़ितर सेहो धोआइत देखल गेल अछि । ई सभ काज बरु केहनो हो । मुदा जनी-जाति मारकंडिया जकाँ कूद-फान तँ नहि करैत अछि ? आ बिना कूद-फान कएने पानि कतहु घोँकाए ? आ तँ हम कहैत छी जे मारकंडियाक अपराध परम गम्भीर छैक ।

ताँती-घाटसँ लगभग तीन सए डेगपर मालिक-घाट अछि । भोरक समयमे कोनो जनीजाति एहि घाट पर नहि अबैत अछि । सोलहो आना पुरुख-पातक दखल रहैत अछि । वैशाखमे छओ बजैत-बजैत आकाशसँ आगिक बरखा करैत तप्त बसात देह-हाथकेँ झरकाबए लगैत अछि । जोतल खेतमे उड़ैत घूरा लगैत अछि जेना बाड़ीमे आगि लगा गेल हो आ धुआँ उठि रहल होअए । घाट पर लोक भरि गेल । अन्हरिआ पख समाप्त होइत हरबाहसभ तेसर पहर राति इजोरिआमे जे हर जोतए लागल, से खोललक अछि । केओ घरक पक्खामे हर ओँगठा कए माथमे कनेक तेल लगा आ पाँचो आँगुर बोरि देह मे मलैत पोखरिक रस्ता धएलक, तँ केओ डेढ़ आँगुर मोट मड़िआओल गमछा लए आ कतेको बिना गमछाक बिदा भए गेल । केओ-केओ खेतसँ बहराए सोझे एम्हर चल आएल आ घाट पर आबि बरदक कान्ह पर सँ जूआ उतारि कातमे राखि पोखरिमे पैसि गेल । कतेको हट्ठाक बरद भरि छाक पानि पीबि-पीबि कछहेरिमे चरि रहल अछि । किछु गोटे टटाएल दाँतमनि चिबबैत आएल, पानिमे पैसल, जिभिआ कएलक, कुच्चीकेँ कछहेरिमे फेकि देलक । घाटक दूनू कात प्रायः आधा ढाकी भरि दतमनिक कुच्ची जमा भए गेल अछि । पुरुषसभ चुप्पे-चाप नहाइत होथि एहन बात नहि अछि । ओहोसभ नहएबा काल स्त्रीगणे जकाँ बहुत तरहक गप्प करैत रहैत छथि । परंच हुनक गप्प प्रायः सदिखन-एकढङ हे

होइत छनि । लए दए कए ओएह गप्प । गओले गीत । एहन गप्प लिखलासँ की होएत ? कोन चरमे कतेक खेत बाओग भए गेल अछि । बड़का कोलाकेँआइ समारब पूरा भए गेल । रामा बड़का चरमे मूठि लेलक । भीमाक बरद बड़ पनिगर छैक । मालिकक सिलेबिआ बरदक जोड़ा, बरदक नहि, हाथीक बच्चाक जोड़ा-सन लगैत अछि । कैला कीनि हम मुट्ठी भरि टाका पानिमे बोहा देलिऐक । मालिकक कर्ज हमर माथसँ एही मास उतरि जाएत । एक-दू पखक बाद श्रवणा चढ़तैक । जोतखी कहैत छथि बदरीक झड़ी लागि जाएत ।ईसभ गप्प तँ सभकेँ बुझल-गमल छैक ।आ एकरा आर बढ़ा-चढ़ा कए की लिखल जाए ।

तेरहम परिच्छेद

हितोपदेश

पहिलि स्त्री : एतेक की फूसि-फास ?

दोसरि : पसरत तँ सुवास !

पहिलि : खेती थिक वा निवास ?

दोसरि : सत्यानास सत्याना....स !

अरे, ई की ! ताँती-घाट पर कविता ?

मानस-भात कएनिहारिक नहएबाक बेर बीति गेल अछि । ताँती-घाट पर दस हाथक अंतर पर दू अधबएसू स्त्री बैसलि अछि । दूनू दाँत मजैत उक्त आलाप कएलक आ एक-दोसराक मुह निहारए लागलि । बिहुँसलि आ फेर डेराएल जकाँ चुप्प भए गेलि ।

जोरसँ गप्प करू तँ केओ ध्यान नहि देत । एकदम सटल लोक तेना अनठा देत जेना किछु सुनबे नहि कएने हो । मुदा, जखनहि दू गोटे कनफुसकी कएलक कि ओहिठामक आन लोकक स्थिति देखबा जोग भए जाइछ । ओहि कनफुसकीकेँ कोनहुँ तरहेँ सुनि लेबा लेल ओकर मन कछमछाए लगैत अछि । सरिपहुँ कौखन-कौखन छोट-छोट गप्पमे पैघ-पैघ रहस्यमय विषय तेना नुकाएल रहैछ जेना क्षुद्र बीजमे विशाल वटवृक्ष । एखन तँ घाट पर केओ नहि अछि,तखन एहन कोन बात छैक जे ईसभ गुप्त संकेतमे गप्प कएलक, आ लगले डेराए चुप्प किएक भए गेलि ?

ताँती-घाटक कछेर लग दहिना कात, बाटसँ करीब बीस हाथ हटि कए बड़क आ पीपरक जौआँ गाछ अछि । एहि गाछक निचला धड़ खूब मोटगर अछि आ उपरका भाग कोमल-कोमल सघन डाँट-पातसँ भरल । बाट-घाटक बड़-पीपरक विवाह करौलासँ कन्यादानक फल होइत छैक । हिन्दूक एहि संस्कारक प्रमाण अनेक ठाम भेटि जाइत अछि । गप्प करैत-करैत ओ दूनू स्त्री ओही जौंआ गाछक छाह दिस दू-तीन बेर तकने छलि । आब गप्प जाएत कतए ? चोर बड़ चतुरतासँ अन्हरिआ रातिमे चोरि करैत अछि, तैओ जहलमे एतेक चोर कतएसँ आबि जाइत अछि ? बुधिआर आ चतुर खुफिआसँ बाँचब सोझ नहि छैक । गाछक छाहमे पड़ल कोनो वस्तुसँ दूनूक गप्पक कोनो निकट सरोकार अवश्य छैक । ठीके, हमर अनुमान सोलहो आना ठीक अछि । तागक छोर हाथमे आबि गेला पर बुधिआर ताँती लच्छीक लच्छी आ गुंडीक गुंडी ओझराएल तागकेँ खीचि-खाँचि सोझरा

लैत अछि । तेहने बुद्धिमान् हमरा बुझू । जँ कोनो गूढ़ संकेत भेटि जाए तँ हमहू घर बैसल सभटा बात सुनाए देब । जौंआ गाछक अढ़मे बैसलि दुइजनी स्त्री गप्प कए रहलि अछि । अरे--रे--! एहि दूनूकेँ तँ हम खूब चिन्हैत छी । कुसमय आ कुठाममे बैसलि ई दूनू की फदर-फदर करैत अछि ? दूनूक ई भेट कोनो छोट चमत्कार नहि थिक । एक गिदरनी-सन धूर्त आ भ्रष्ट अछि । दोसर भेड़ी -सन अत्यन्त निरीह । दूनूमे एक स्त्री नागिनि-जकाँ फैंच अलगाए नक़बेसरि सम्हारि सतर्क दृष्टिएँ चौकन्ना होइत अबाध गतिएँ भाषण करैत जाए रहलि अछि । दोसराक लग पानिक घैल राखल छैक । दहिना हाथमे दँतमनि छैक । कपार धरि घोघ काढ़ल छैक । कोनो अधलाह शब्द सुनि चौचंक होइत भेड़ी-जेकाँ डेराइलि ओम्हरे टकटकी लगओने अछि । शुकदेवक श्रीमुखसँ *'स्थिर मन, धीर बुद्धि, पंचभूत आत्मा दोरस्त निर्मल हृदय-कमल'* पसारि पुराण सुनैत परीक्षित जकाँ प्रथम स्त्रीक प्रवचनक श्रवण कए रहलि अछि । परन्तु ओ प्रवचन ओकर मानस-भंडारमे जमा भए रहल अछि आकि एक कानसँ सुनि दोसर कानसँ बहराएल जा रहल अछि तकर निर्णय करबाक सामर्थ्यक हमरामे नितान्त अभाव अछि ।

हुनक गप्प सुनबाक हेतु अपने परम उत्सुक छी, एहिमे 'सन्देहो नास्ति' । कोनो मतावलम्बी कहने छलाह— *संसारविषवृक्षस्य मद्यमांसममृतफ्लम् ।* अर्थात् संसाररूपी विषवृक्षमे मद्य आ मास ई दूनू अमृतफल थिक । ई बात सुनि वृद्ध मनु बजैत भेलाह —

न मांस भक्षणे दोषो न मद्ये न च---।
प्रवृत्तिरेषा भूतानाम्----------।।

अर्थात् भूत माने भूते-सन लोक एहन बात बजैत अछि । ठीक बात । वृद्धस्य वचनम् ग्राह्यम् । ई बात तँ ठीक जे संसाररूपी विषवृक्षमे इएह दू अमृतफल फरैत अछि । परन्तु पारखी के ? हमरे टा ओहि दूनू फलक ज्ञान अछि । 'परोपकारं स्वर्गाय '। परोपकार करबे हमर व्रत थिक । अपनेलोकनिक लाभक निमित्ते हम ओहि दूनू फलक नाम लेल अछि । एहिमे एक फलक नाम थिक कनफुसकी सुनबाक इच्छा आ दोसराक नाम थिक परनिन्दा । अहाँ ककरो घरक छिद्रोद्घाटन करू अथवा ककरो कुचेष्टा करू अहाँ देखब जे लोक बड़ रुचिसँ अहाँक गप्प सुनैत अछि । किछु बुझबामे आएल ? जँ एहि दूनू फलक माहात्म्य नहि रहैत तँ एतेक तृप्ति सुननिहारकेँ कहिओ नहि होइतनि ।

की लिखब सोचलहुँ, आ की लिखा गेल ! पतवार हटबिते प्रवाह नाओकेँ अपन गन्तव्यसँ दूर भसिअबैत लए जाइत अछि । परन्तु गर्वोन्नत, बलवान् आ कुशल घटवार पतबारकेँ किन्हु नहि छोड़ैत अछि । हमरो कलम एम्हर-ओम्हर भसिआइत अवश्य अछि मुदा मूल विषयसँ विचलित नहि होइत अछि । नाके सोझे बढ़ल जाइछ ।

अस्तु, छोड़ू एहि बातकेँ ! आओर बेशी काल अहाँकेँ अन्धकारमे राखब ठीक नहि होएत । ई दूनू स्त्री के थिक, की-की फदका करैत अछि, इत्यादि सभ गप्प आब फरिछा दी सएह उचित । केओ-केओ व्यक्ति किछु कहबासँ पहिने खूब झाड़-फानूस बन्हैत छथि,

अतेक प्रकारक भाषण दैत छथि । मुदा हमर स्वभाव तकर ठीक उल्टा अछि । जे किछु कहबाक रहैत अछि से चटपट साफ-साफ कहि दैत छिऐक । आ किछु लोक एहनो छथि जे भयवश कतेको बात पेटेमे राखि लैत छथि । अथवा कोनो बात कहैत-कहैत अनट-बिनट कहि दैत छथि आ जे कहबाक रहैत छनि से कहिए नहि पबैत छथि । इएह देखू ने, ई अधबएसू स्त्रीजानि नहि कनखी-मटकिएमे की-की कहैत कोना चुप्प भए गेलि । मुदा एहि ताँतिनिक अपेक्षा हमरा किछु बेशी साहस अछि । जे कहबाक होएत से वीरपुरुष जकाँ कहि देब । एक बात आर । बूझल अछि ? हमरा-सन लोक जँ कंठो फाड़ि कहत तँ केओ सुननिहार नहि; मुदा ओही ठाम जँ केओ पैघ लोक 'आँ' करए तँ देखब जे दू सए लोक ओकर मुह दिस टकटकी लगा देलक अछि । बिलेतक लोक तँ एहन पैघ-पैघ लोकक बात सुनबा लेल डाँड़मे पाइ खोंसि दौगि जाइत अछि । गाछ तरक ई दूनू ज़नी गाममे एहने सुविख्यात लोक छथि । अहूँ हुनका नीक जेकाँ चिन्हैत होएबनि । लोक रूपसँ नहि, गुणसँ चिन्हल जाइत अछि । लोक नीक हो कि अधलाह हो, सामान्य लोकक अपेक्षा ओकर गुण अर्थात् सद्गुण अथवा दुर्गुण जतेक बेशी होएतैक ओ ततेक बेशी चिन्हार होएत । गोविन्दपुर गाममे लगभग एक काहण* (१२८०) स्त्रीगण होएत । परंच ओहि सबहुमे नामी अछि इएह दुनू गोटे । एक चतुरपनी आ धूर्तपनीमे तँ दोसरि सुधपन आ सरलतामे । दूनू विख्यात अछि । अस्तु, एहि दूनूक गुप्त कथा बिनु सुनओने अहाँ हमरा छोड़ब नहि । एही कारणेँ हम लिखबा लेल बैसल छी ।

हम बड़ यत्नेँ आ बड़ परिश्रमे दूनूक संवाद बटोरल अछि । ओहिमे एक स्त्री तँ बड़ पैघ भाषण छाँटि रहलि छलि । ओकर भाषणमे कतेक एहन बात छलैक जे सुनि अहाँकेँ दुख होएत । दोसर बात इहो जे ओतेक बात लिखबाक हमरा शक्तिओ नहि अछि । तेँ ओकर सारमात्र लिखि रहल छी ।

"सुन सारिया, एहि सभक मूल थिकीह ई बूढ़ी मंगला । ई समस्त संसार हुनके आज्ञा पर चलैत अछि । हुनके इच्छा सँ संसारक समस्त आगमन भए रहल अछि । हुनक आज्ञा कि कथमपि टरि सकैत अछि ? बुझल नहि छौक जे कतेक व्रत-उपवास कए-कए तोँ देवीक ई आज्ञा पओलेँ अछि । तोँ बड़ भागमन्ति छेँ । एहन भाग आर ककरो नहि देखल । सरिपहुँ कहैत छिऔक, एखनि धरि मालिकेक उपर हुनक कृपा छलनि, आब तोहरो उपर भए गेलनि । तोँ मंगलाक मन्दिर बनबाकए देखि ले, कोना तोहर अपन घर देखितहिँ-देखितहिँ लक्ष्मीक भंडार भए जाइत छौक । तोड़ाक तोड़ा टाका जहाँ-तहाँसँ झहरए लगतौक । धान तँ बखारीक बखारी भरि जएतौक । तखन की चरखे कटैत रहबेँ ? दस बीस खर-खबासिनी तोहर आगू-पाछू करैत रहतौक । तोँ दूनू परानी भगवती मंगलाक आज्ञा मानि ले आ जेना-तेना मन्दिर बना दहुन । टाकाक कोन फिकिर छौक ? के एहन अछि जे मंगलाक नाम सुनि टाका देबामे टार-मटोर कए सकत ? जकरहिसँ मँगबेँ सएह तुरन्ते

* १. काहण=१६ पण = १६ × २० गंडा = २० × ४ = १२८०

दए देतौक । आ कतहु बौअएबाक काजे कोन ? मंगराजक कानमे ई गप्प पड़तनि कि तत्क्षण आबि कए टाका गनि देथुन्ह । ई काज हमर जिम्मा रहल । हम भार उठबैत छिऔक । हम आनि देबौक । तोरा किछुओ करए नहि पड़तौक । कोनो कि बेशी टाकाक काज छैक । डेढ़ो सए भेटि जाए तँ बेश पैघ मन्दिर बनि जाएत । बलदेवक मन्दिर, जे मन्दिर केंदरा पाड़ामे छनि ने, ठीक ओतबे ऊँच आ ओतबे चाकर । तौं ओ छओ बिगहा आठ कट्ठा जमीन केवाला कए देबहीक, रुपैआ हम आनि देबौक । तोहर खेत खोधि कए केओ खा तँ नहि लेतौक । जे जतबा छौक से ठामहि रहतौक । खाली एक खातासँ दोसर खातामे चढ़ि जाएत । मन्दिर बनि गेला पर तौंसभ अपने दोसराकेँ टाका देअए लगबेँ । कतेको गोटे तोहर रिनिआ भए जएतौक । माँ मंगला कोनो सगुन-तगुन अवस्से देने होएथुन । सगुनमे ओ पहिने अशर्फी दैत छथिन । भला ओ चानीक कोना देथिन ।''

हमरा भरोस नहि भेल जे ओ प्रवचन सारियाकेँ हृदयंगम भेल होएतैक । ओ तँ टुकुर-टुकुर तकैत रहि गेलि छलि । तोड़ाक तोड़ा टाका ? डेढ़ सए टाका ? डेढ़ सए टाका कतेक होइत छैक, ई बुझबाक शक्ति ओकरा कहाँ छैक । एक टाकाक रेजकी यदि सारियाकेँ गनबाक रहैत छैक तँ ओ घरसँ बहराइत नहि अछि, भीतरसँ केबाड़ बन्द कए ओ आ भगिया दूनू प्राणी दू-तीन घंटा बैसि गनबाक काज कोनहुना सम्पन्न कए लैत अछि । जाहि दिन पाँच चौअन्नी अथवा अठारह आनाक कपड़ा बिकाइत छैक तहिआ ओ अपन भाए लोकनथिआसँ गनवा अनैत अछि । आ ई खर-खवासिनीक झंझट ? घरमे जँ पाँच-छओटा खवासिनी आबि जाए तँ से नीक कि अधलाह ? बड़ कठिन समस्या ! भागिया सेहो लगमे नहि छैक । की कही की नहि, किछु नहि फुरैत छैक । एतएसँ पड़एनहि कुशल । सारिया पैघ साँस छोड़लक आ एक बेर घैलकेँ देखि ''चंपा मलिकाइनि,'' एतबे बाजि चुप्प भए गेलि । आगाँ मुहसँ बोल नहि बहरएलैक । मुदा ओकर गुम्मीसँ धूर्ता चतुरा कोनो असमंजसमे नहि पड़लि । ओकारा नीक जकाँ बुझा गेलैक जे ओकर मंत्रक कोनो असरि नहि पड़लैक । शिकार फेर हाथसँ छुटबा लेल छटपटाएल । बहुत दिनक ताक-हेरिक बाद बिलाड़ि आइ ई हिलसा माछ पकड़ि पओलक अछि । एतेक सहजतासँ अपन कल्ला तर सँ कोना पड़ाए देतैक । प्रयोजन आरो मंत्र पढ़बाक छैक ।

चम्पा : देख सारिया, टाका किछु नहि थिक । सोन चानी किछु नहि थिका । टाका कि सोन-चानी सँ केओ स्वर्ग नहि पबैत अछि । असल चीज थिकैक धीया-पूता । जाहि घरमे बाल-गोपाल नहि, से घर दिन-दोपहरिओ मे अन्हार रहैत छैक । आ बाँझ-निपुतरी होएब कि कोनो छोट पाप थिक ! मालिकक ओहिठाम सभ दिन कथा-पुराण होइत अछि । हम सभ दिन सुनैत छी । ओहि दिन गोसाइँ पोथी सँ बाँचि गओने छलाह—

धिआ-पुता नहि जकरा कोर । तकर मूह नहि देखी भोर ।।
तीन पूत बाली सुलच्छनी । नारि निपूती गाम-भच्छनी ।।
जकरा घर बेटा नहि एको । तकरा नहि आनन्द कनेको ।।

भागवतक वचन कतहु फूसि होअए ? एतेक लोक जे मंगलाक आगू माथ झुकबैत रहैत अछि से ओहिना की ? तोरा इहो बुझबामे आएल होएतौक जे भोर कए तोहर घरक आगू देने केओ नहि अबैत जाइत छौक । कह तँ से किएक ? एही कारणेँ जे किंसाइत तोहर मुह ने देखा जाइक । तोँ सुनने होएबेँ, हमर मलिकाइनि सेहो पहिने बाँझ छलीह । हम सभ केओ गोटए पहर दिन धरि हुनक मुह नहि देखैत छलहुँ । कानि-कानि मलिकाइनि मंगलाक पूजा कएलनि । भगवती जेना तोरा पर दया कएलनि अछि तहिना हुनको पर कएलथिन । हुनक कृपा भेलनि आइ पोतो-पोतीक मुह देखैत छथि ।

एतेक काल सारियाक आँखि तँ खूजल छलैक मुदा मन कतहु अन्यत्र विचरण करैत छलैक । ई बात सुनलक तँ लगलैक जेना कानमे राङ ढरा गेल होइक । पड़ा जएबाक मन तँ औखन भए रहल छलैक परंच कोनो बाट कहाँ छलैक । मूसक गरदनि बिलाड़ि चपने छलैक । आँखि ढबकि गेल छलैक । बजबाक मन होइक, मुदा बकार नहि फूटैक । बड़ कष्टेँ मुह खोललक ।

सारिया : हम की करू । लोक बाजि रहल अछि जे मालिक केवाला करा लेलापर फेर ककरहु घुरबैत नहि छथिन ।

चम्पा : राम-राम ! ई केहन बात तोँ बाजि गेलेँ । मंगलाक मन्दिर लेल टाका देथुन्ह तँ तोहर खेत कोना लए लेथुन्ह ? गामक लोकक बात पर की ध्यान दैत छेँ । ई गोविन्दपुर गाम तँ दुनिया भरिमे गेल-गुजरल अछि । एहि गामक जनी-जाति तँ तोरा दिन-देखारे डुबा मारतौक । तोहर सुख देखि ओकरा सभक छाती जरैत छैक । ओसभ छटपटा उठल अछि । एहि गाममे मड़खौकीसभ भतखौकी पर जरैत रहैत अछि । केओ ककरो भल नहि चाहैत अछि । तोँ ककरो लग वजिहेँ नहि । आर सुन, भगवती मंगलाक कहल नहि मानने आँखि फूटि जाइत छैक, कान बहीर भए जाइत छैक, लोक मरि जाइत अछि । तोँ ई बात नहि सुनने छेँ जे गोपीनाथपुरक तीन-तीन साधवा मंगलाक अनादर कए एकहि संग विधवा भए गेलि ?

सारिया जड़ कठपुतरी जकाँ गप्प सुनि रहलि छलि । अन्तिम गप्प सुनि ओ अपना कैँ सँभारि नहि सकलि । हबो-ढकार भए कानि उठलि । हिचुकैत-हिचुकैत बाजलि, "हम की करू ? चम्पा मलकाइनि, की करू ?

चतुरा चम्पा सारियाक मनक सभ बातक थाह लए लेने छलि । असरि देखि ओ मोने मोन प्रसन्न भेलि । बाजलि, "सुन सारिया, तोरा कोनो डर नहि । तोरा किछुओ करबाक नहि छौक । सभटा हम करबा देबौक, हम ।"

सारिया : नहि-नहि ! हमरा किछु नहि चाही । ओ टा नीके-ना रहओ ।

चम्पा : कोनो भय नहि । तोहर साएँ कैँ कुसो कलेप नहि होएतौक ।

पुनः दधिवामनक निर्माल आ प्रसादक रसगुल्ला सारियाक हाथमे दैत चम्पा कहैत गेलैक । सुन सारिया, ई थिक माला आ ई थिक प्रसाद । ई छूबिकेँ कहैत छिऔक, हम

तोहर सभ काज कए देबौक । तोरा तीन टा बेटा होएतौक आ तोहर साएँ लाख बरिस जितौक । चिन्ताक कोनो बात नहि ।

सारिया : हम की करू ? चम्पा मलकाइनि, हम की करू ?

चम्पा : तोरा किछु नहि करबाक छौक । आइ संध्याकाल तोँ अपन स्वामीक संगे एहिठाम आबि जइहेँ । जे करबाक होएतौक से हम कए देबौक । आ जहिआ मंगलाक व्रत होएतैक, दूनू गोटे नहा-धोकए उपवास करिहेँ । सहि नहि होउक तँ कनि चूड़ा खा लिहेँ । ई एहि लेल कहि दैत छिऔक जे व्रतक बात तोरासभकेँ बुझल नहि छौक ।

एकटा बाद सारिया नहएबा लेल पोखरिमे पैसि गेलि । चम्पा किछु काल गाछ तर ठाढ़ि रहि चारूकात ताकि सन्तुष्ट भए मालिकक हवेली दिस चलि देलक ।

गुप्त रूपेँ अनुसंधान कए हम ई संवाद प्राप्त कएल अछि । ओहि दिन आधा राति धरि सारिया उपवास करैत रहलि । पति कचहरीमे छलैक । ओकर उपरान्त अग्रिम चारि दिन धरि भगियाकेँ केओ नहि देखलक ! केओ-केओ बजैत छल जे केओ ओकरा कटकक रास्ता मे देखने छल ।

चौदहम परिच्छेद

मन्त्रणा

'हुआँ हुआँ हुंआँ' हुआँ हुँ -- आँ 'हुके हुके हो, हुके हो'— गिदड़ भूकल । निशी भाग राति भेल । गाम-घरमे घड़ी नहि होइछ । गिदड़क भुकबेसँ लोक रातिमे समयक अनुमान करैत अछि । ई जीव गामक बड़ उपकारी । छोट गाममे मुनिसिपलेटी नहि होइछ । गाममे मुइल कुकूर-बिलाड़िक लास आ अन्यान्य मलकेँ उठा लए जएबाक भार एही जन्तु पर रहैत छैक । दोपहरिं रातिक समय अछि । गोविन्दपुर गाम निद्रामे भेर अछि । कतहु कोनो सबद नहि । तेलीक टोलमे कोनो चिलका 'उआँ उआँ उआँ' करैत कानि उठल । माए ओंघएले-ओंघाइलि ओकरा थपथपबैत, भरिगर-भरिगर दामबाला अनमोल दुर्लभ वस्तुसभ आनि देबाक भरोस दैत, चोर-चौकीदार, बाघ आदि भयंकर प्राणीक अएबाक डर देखबैत, तथा बुधिआर होएबाक, कानब बन्द करबाक आ चुपचाप सूति रहबाक उपदेश दैत अन्ततः ओकरा सुताइए देलक । मंगराजक कचहरीक अँगनइमे हमर गोबरा जेना आ सौतुनिया मौजेक चौकीदार दैस जेना निफिकिर सूतल अछि । कातमे भरि-भरि मरदक दू टा लाठी आ दूटा पैघ-पैघ बोरसि पड़ल छलैक । अनठिया लोक बूझत जे मंगराजक कचहरीमे सम्भवतः दू टा सूगर आबि चरि रहल अछि । मुदा, हम तँ सदिखन सभ विषयमे सतर्क रहैत छी । सभ बात अपन अनुसंधानसँ बूझैत छी । तैओ पहिने भ्रम भए गेल । नीक जेकाँ अकानला पर दूनू चौकीदारक फोंक काटब सुनल तखन भ्रमक कारण स्पष्ट भेल । कचहरीक बाहर ओसरा पर तीन गोटे अपन-अपन देह पर पटापट-पटापट थापड़ लगबैत ओँघराएल पड़ल अछि । भूख, चिन्ता आ निद्राक संग मच्छड़क सौतिनियाँ संबंध बुझा पड़ैत अछि । ई तीनू प्रजाजन धान ऋण लेबा लेल अटकि गेल अछि । दिनभरि दहिना हाथकेँ कोनो काजक संग सम्पर्क नहि भेलैक । ताहि पर मच्छर कटैत छैक । चिन्ता तँ छैके । तखन नीन कोना होएतैक ।

कचहरी बला अलंग पार कएला पर जे पहिल अलंग भेटैत अछि से मंगराजक विश्राम-कक्ष थिकनि । प्रयोजन पड़ला पर लोक ओकरा 'गन्ता घर' अर्थात् खिजाना सेहो कहि लैत अछि । एकरा डेओढ़ीक आन सभ कोठलीसँ श्रेष्ठ होएबाक चाही; एहि प्रसंग कोनो त्रुटि नहि अछि । कोठलीमे माटिक ताख पाटल अछि । पाँच धरनि, पूरब दिस रुखि, आ आगूमे चाकर असोरा छैक। कटहरक केबाड़ अछि । केबाड़मे चौकोर जाफरी अछि । जाफरीक प्रति जोड़ पर लोहाक गुलमेख छैक । बाहर कड़ी आ जंजीर छैक, जाहिमे दूटा

पैघ-पैघ नालबाला ताला लगाओल जाइत अछि । पछवरिया देवालमे डाँड़ भरि ऊँच डेढ़ बीत चाकर जालीदार जँगला अछि । ई जँगला किनसाइत तखनहि खुजैत अछि जखन अगहन मासक वृहस्पतिकेँ ई कक्ष नीपल-छछारल जाइत अछि। कोठलीक चारू कोनमे अन्हार पसरल रहैत अछि । बदरी बिकालक समय तँ दिनमे दीपक प्रयोजन । कोठलीक कोनमे बगड़ा बजैत अछि— 'हमही' आ मूस चुचुआइत अछि—'हमही' । बगड़ा आ चम्पा दूनूक वर्ण एक आ जहिना चम्पाक नामक अन्तमे 'पा' छैक तहिना बगड़ाक उड़िया नाम असरपाक अन्तमे 'पा' छैक । सम्भवत: एही दूनू साम्यक कारणेँ चम्पा बजैत अछि बगड़ा लक्ष्मी थिक । बगड़ाक रहलासँ अशर्फी अबैत अछि । तेँ बगड़ाक वंश निर्विघ्न आ निर्भय रूपेँ पुत्र-पौत्रादि-क्रममे घरक कोन पर अधिकार जमओने अछि ।

उतरबरिआ देबालसँ सटल बाँसक पैघ सन मचान अछि, जाहि पर बेँतक तीनटा पैघ-पैघ पुरान-सन पेटार राखल अछि । मचानक नीचाँ चौकी अछि जाहि पर कोठलीक कोन दिस कोहा-कोहीमे गुड़, आमिल-अचार, करंजक तेल आदि पसरल अछि । मौजेक गाछी-बिरछी जतेक करंज फड़ैत अछि, से सभटा झाँटि लए आनल जाइत अछि । तेली आ बेगार तकरा पैरैत अछि, आ से तेल भण्डारमे जोगा कए राखल जाइत अछि । साल भरि तेल कीनबाक झंझटसँ फुरसति, ततबे नहि, वर्ष भरिक खर्चसँ किछु उगरिए जाइत अछि । दछिनबरिआ देबालक कातमे आमक दू टा पैघ-पैघ सिन्धूक अछि, आ तकरा लग एकटा साँखुक सिन्धुक । ई थिक लक्ष्मी-सिन्धुक । एतए चम्पा प्रतिदिन साँझ दैत अछि । प्रत्येक वृहस्पतिकेँ सिनूर-चानन लगाए एकर पूजा करैत अछि । अक्षत आ गुड़क नैवद्य दैत अछि । कोड़ोमे तीन-चारि सीक टाँगल अछि । ओहि पर घीक टाड़ा लटकल अछि । उठौनामे जे घी अबैत अछि से एहीमे जमा होइत अछि । एहि सीकसभमे झाँपक झूलैत झालरिक फुदना जकाँ मकड़ाक कारी-कारी जाल थोकाक थोका लटकल अछि । पछबरिआ देबालक कातमे उतरे-दछिने मंगराजक खाट अछि । दच्छिन दिस सिरहनमे एकटा पैघ सन मसनद। सीतलपाटी पर सुजनी दोहरा कए बिछाओल । उलौँच (चादरि) देखब तँ सहसा बूटबाला छीटक भ्रम भए जाएत । मुदा हम तँ नीक जकाँ देखि-सुनि लेल अछि तेँ शंकाक कोनो संभावना नहि । वास्तवमे ई रक्त कृष्णाभ चिह्न सभ छीटक छाप नहि मृत उड़ीसक शरीरसँ नि:सृत शुष्क शोणित-बिन्दु मात्र थिक ।

आइ एहि अर्द्धरात्रिमे ओही खाट पर आसीन एक पुरुष नीचामे बैसलि एक महिलासँ गप्प करबामे लीन छथि । पाठककेँ हिनकासँ परिचय करा देब आवश्यक नहि । ओ स्वयं चिन्हि जएथिन्ह । महिला थिक हमर ओएह चम्पा आ पुरुष थिकाह स्वयं रामचन्द्र मंगराज । चम्पा खाट पर दूनू हाथ राखि ओहिमे औँगठलि जकाँ बैसलि अछि । मंगराज चम्पाक दिस पूरा-पूरी नमड़ल छथि । खाटक तीन हाथ पर पितड़िआ लाबन अछि । ओहि पर माटिक दीप टिम-टिम कए रहल अछि । लाबनक सर्वांगमे तेलक काटि लेभरल अछि । दिआमे वाती आ कारिखसँ सनाएल लगभग छओ तोलाक चतुर्थांश चौठी भरि नीलाभ तेल अछि ।

बड़ी राति धरि चम्पा आ मंगराजक बीच जे वार्तालाप आ विचार-विमर्श भेल से सभ जानि अहाँकेँ कोनो सुख नहि होएत । ओना बेशी लिखबो हमर अभ्यासक प्रतिकूल अछि । तथापि ई वार्तालाप भेल तँ प्रधान नायक-नायिकाक गप्प; तकरा अहाँ भनहि सत्य घटना मानि ली, कपोल कल्पना कहि दिऐक, गल्प-कल्पना कहि दिऐक, उपन्यास कहि दिऐक, वा जे मोन हो से कहि दिऐक, मुदा एकदम छोड़ि देलासँ काज नहि चलत। तँ चारूकात ताकि-तूकि लिखबामे एहन बाट धएल अछि जे टाड़ाक तेलो नहि सधए आ बौआक चानिओ नहि टटाए ।

चम्पा बाजलि : ने बापक ठेकान, ने माइक । पठानकेँ धोखा दए जमीनदारी ठकि अनलक आ गाममे कहबैत अछि जमीनदार । जमीनदार अछि तँ रहओ अपना घरमे । गाए खोलि जजात चरबैत अछि आ ताहि पर गारि । पड़ाकए आँगनमे नुका रहल । जँ हाथ लगैत तँ देखा दितिऐक । हम कि एकसरि रही । पूरा गाम पीठ पर छल । दोकानक ओसारा पर बैसि चिचिआ-चिचिआ कए गारि पढ़ैत रहैत अछि । हम पान की कीनितहुँ दोकान लगसँ पड़ा अएलहुँ । सरधुआ, कोढ़िया, जनपीटा कहीँ के । मालिक, हमहूँ कि छोड़यबाली छी ? दोसर केओ रहैत ने तँ दाँतसँ नाक काटि लितिऐक । परन्तु ओ तँ दैत्य अछि, दैत्य । ओकर बाँसक लाठी देखिकेँ तँ हमर पथरी चटकि गेल । आब मालिक एकर कोनो उपाय करू, नहि तँ हम अपन कपार फोड़ि लेब, जहर-माहुर खा लेब, आकि पानिमे डूबि मरब ।

बजैत-बजैत चम्पा हिचुकि-हिचुकि कानय लागलि ।

मंगराज : चुप हो चम्पा, चुप हो । ओकर लाठीक डर तँ हमरहुँ होइत अछि । चारू राक्षस थिक, राक्षस ! मोचँडा बात-बातमे लाठी उठा लेत । ओ काज तँ कहिआ ने भए गेल रहितए । हमर जे कनटिरबा बेटा अछि से ओहि गाम दिस गेला पर घूमि-घूमि ओकरा तकैत रहैत अछि । गोबरा ततेक चतुर, ततेक बुधिआर अछि जे ओकरा हाथेँ किछु नहि भए सकल । ओ की करत ? दिन-राति लोकक चौंकीदारीमे रहैत अछि ।

चम्पा : नहि-नहि । मालिक से नहि होएत । अहाँ एकर कोनो उपाय करू । नहि तँ गामक स्त्रीगणक बीच हम मुह देखएबा जोकर नहि रहब । ओ की एतेक मातबर भए गेल अछि जे अहाँकेँ झुकए पड़त ?

मंगराज : सुन चम्पा, शास्त्र मे कहल अछि— छलसँ, बलसँ, कौशलसँ, जेना हो शत्रुकेँ साधबाक चाही । हम तँ से कए नहि सकलहुँ; आब तोँही कोनो जुगुति लगा । तोँ अपन बुद्धि लगएबेँ तँ सभ भए जाएत । देख ने, हम तीन बरख धरि प्रयास करैत रहलहुँ तैओ ओ ताँती साध्य नहि भेल । तोँ जखनहि एहिमे पड़लेँ कि काज सुतरि गेल ।

चम्पा टेमी उसका कए तेज कए देलक आ खिलखिला उठलि । बाजलि— मालिक देखू, "पहिने तँ भेल जे पार नहि लागत । मुदा बुद्धिक बलेँ की नहि होइत छैक । ओहि छओ बिगहा आठ कट्ठा खेतमे काल्हि हर बहतैक ने ?"

मंगराज— हँ, हरबाहसभकेँ चड़िआए देलिऐक अछि, काल्हि भिनसरे हर जोतए; चास, समार दूनू भए जएबाक चाही । हमहूँ खेत पर जाएब ।

चम्पा : ओकर घर उजड़बा देल से नीक कएलहुँ । घर रहितैक तँ कहिओ फेर चढ़ि अबैत ।

मंगराज : जमीन छओ मासक शर्त पर कट-बन्धक छल । समय बीति गेलैक तँ खेत हमर भए गेल । मोकदमाक खरचामे घर निलाम भेलैक । हम निलाम लए घर उजड़बा देलिऐक अछि ।

चम्पा : खेत हो कि घर हो, जे किछु हो, ताहिसँ हमरा कोनो मतलब नहि । हम तँ खाली ओहि गाइक लोभेँ ई काज कएलहुँ । गाए तँ गाए नहि, मानू मकुनी हाथी थिक । आइ कचहरीक असोरामे बान्हि देलिऐक अछि । काल्हिसँ हवेलीक भितरे बान्हब । ओ दूनू प्राणी गेल कतए ?

मंगराज : के दूनू ? भगिया-सारिया ? ओ दूनू तँ श्राद्धक प्रेत जकाँ लोकक ओलतिए-ओलतिए छुछुआएल फिरैत होएत ।

चम्पा : ओहि दिन भोर खन सारिया मंगलाक समक्ष कानि-कानि माथ पीटि रहलि छलि । हमरा देखि आरो कोढ़ फाटए लगलैक । मने किछु कहबाक हेतु हमरा दिस बढ़लि, तँ हम मुह घुमा कए चलि अएलहुँ ।

तकराबाद बड़ी राति धरि चम्पा आ मंगराजक बीच फदका होइत रहल । अन्तमे ओ सावधान भए ततेक गुप्त रूपेँ मंत्रणा करए लगलाह जे हमरा तकर किछुओ भाँजि नहि लागि सकल । एक दोसराक मुह निहारैत दूनू गोटे गप्पमे डूबल रहथि । एही बीच एकटा स्त्रीमूर्ति दूनूक समक्ष उपस्थित भेल । दूनूक चकित दृष्टि ओहि नारीक काया पर अटकि गेल । अकस्मात् गप्प बन्द भए गेल । आगन्तुक 'फह' कए एक दीर्घ साँस छोड़लक । साँस ओहने तप्पत छल जेहन मनक दारुण पीड़ासँ बहराइत अछि । तीनू फेर नि:शब्द, कठपुरी जकाँ नि:स्पन्द । कोठली नि:शब्द । किछु कालक पश्चात् मंगराज ओहि नारीमूर्तिकेँ निहारैत पुछलथिन—"के ?"

सभ अवाक् ।

मंगराज फेर पूछल—"के ?"

कोनो उत्तर नहि, फेर ओएह दीर्घ नि:श्वास ।

"मंगराज कने विखिन्न होइत" पहिनेसँ तेज स्वर: पूछल—"की बात ? किछु बजैत कियेक ने छी ?"

मलिकाइनि (आगन्तुक, मंगराजक पत्नी) दबल मन्द स्वरमे परम विनयपूर्वक बजलीह, "हम कहए अएलहुँ अछि जे बहुत राति भए गेल; आब सुतू गए । आब एहि गप्पकेँ छाडू ।"

चम्पा अवज्ञाक स्वरमे जोरसँ हुँकरल—"हुँऽ ?"

मंगराज— बेश, हम जाइ छी, अहाँ बहार जाउ ।

चम्पाक अपमानजनक हुँकार मलिकाइनिक करेजकेँ बरछी जकाँ बेधि देने छलनि । तकर बाद मालिकक 'अहाँ बहार जाउ' वाक्य तेना लगलनि जेना तारुमे हजार-हजार बीछ वीन्हि लेने होइन । चम्पा कोठलीमे रहए आ हम बाहर जाउ ? जाहि घटनासँ पुरुषक कठोर हृदय क्षत-विक्षत भए जाइछ तकरा कोमलहृदय नारी सहजहि सहि लैत अछि । नारीमे सहिष्णुता पुरुषसँ बहुत बेसी होइत छैक । तैओ ओ सभ किछु सहि सकैत अछि, मुदा पति जँ अवहेलना करैक वा अविश्वास करैक तँ से नहि सहि सकैत अछि । जँ पतिक समक्ष दासी अपमान करैक ? ओह ! से तँ मरणहुसँ बेशी कष्टकर । एखनुक ई घटना कोनो नव नहि छल । सहैत-सहैत सड़र पड़ि गेलनि अछि । तैओ मलिकाइनिक कंठ बाझि गेल । माथ घूमए लागल । अंग-अंग शिथिल भए गेल । कोनहुना अपना केँ सम्हारि ओ नहुँए-नहुँए कोठलीसँ बहार भए गेलीह आ ओसारा पर आबि पायामे औंडठि थुल-सन बैसि गेलीह । हमरा सूचना अछि जे ओहि रातिक घटनाक बाद मलिकाइनिक मुहसँ एको टा शब्द केओ नहि सुनलक । ततबे नहि, ओ भनहि नुकएबाक चेष्टा करैत रहथु, मुदा लोक आँखिसँ नोर चुबैत देखिए लैत छनि ।

चम्पा चटदए केबाड़मे छिटकी लगाए अपन स्थान पर आबि बैसि गेलि आ बाजलि, "हमरा केओ पढ़ओ कि बाढ़नि झाँटओ, तकर मिसियो भरि कलेस नहि होएत । परंच अहाँकेँ जँ केओ एक शब्द कहि दैत अछि तँ हमर देह झरकए लगैत अछि । मलिकाइनिक गप्प सुनल ने । केओ आन रहैत तँ कहिओ मुह नहि तकितिऐक । सारियाक प्रसंग तँ अहाँकेँ सभ किछु बुझले अछि तखन फेर की बुझाउ । वर्ष लागि गेल । मुट्ठीक मुट्ठी टाका खरच भेल । कटक धरि । मामिला लड़ला कलमसँ दस बीस कठही गाड़ी पाथर मंगलाक थान पठाओल गेल । तैओ मलिकाइनि की कहै छथि ? कहैत छथि जे सारियाक छओ बिगहा आठ कट्ठा जमीन छोड़ि दिऔक आ ओकर घर नहि उजाड़िऔक ।"

एतेक कहि चम्पा अट्टहास कए उठलि ।

अन्हार-गुज्ज रातिक निस्तब्धताक भेदन करैत ओ पैचाशिक विकट अट्टहास मलिकाइनिक कर्णपट अवश्य बेधि दैत । मुदा ताधरि ओ दारुण कष्टक अनुभव करबाक शक्ति गमा चुकलि छलीह ।

मंगराज आ चम्पाक बीच तदुत्तर जे गप्प भेल से लोकक लेल अज्ञाते रहल । खाली चम्पाक मुहक एतबे गप्प सुनल गेल जे अहाँ हमरा एकटा महफा आ चारि गोट भरियाक व्यवस्था कए दिअऽ आ देखि लिअऽ जे हम की करैछी । जँ नहि कए सकलहुँ तँ नाक कटा लेब ।

पन्द्रहम परिच्छेद

बाघसिंह-वंश

प्रसिद्ध आइने अकबरीक लेखक अबुलफजलक कहब छनि जे उड़िसामे खेतक वास्तविक भूस्वामी खंडायत लोकनि छलाह । गजपतिक दरबारमे तरुआरिक मूठसँ लए कलमक नोंक धरिक सभटा राजकाज वस्तुतः खंडाएते लोकनिक हाथमे छल । हिनका लोकनिकेँ खजानासँ नकद वेतन नहि भेटैत छलनि । वेतन तरँ उड़ीसाक अधिकांश भूखंड जागीर रूपेँ दए बाँटि देल गेल छल, जकर भोग ईलोकनि सम्पत्तिक रूपमे करैत आबि रहल छलाह । खंडायतलोकनिक पुण्यप्रतापेँ उड़ीसा बहुत दिन धरि अपन स्वाधीनताक रक्षामे समर्थ रहल । तीन वर्षसँ अधिक काल धरि पठानसभ बंगदेशसँ एँड़ी अलगा-अलगा तकैत घात लगओने बैसल रहल, मुदा सुवर्ण रेखाकेँ पार नहि कए सकल पाइक (पदाति-सैनिक) सभ सदिखन राज दरबारमे उपस्थित नहि रहैत छल । दलपतिलोकनि अपन-अपन अधीनस्थ पाइक सभकेँ लए अपन-अपन चक्र (अंचल) मे रहैत छलाह । दलपतिक गोष्ठीक नाम होइत छल 'चौपाढ़ी' । ओहिठाम मालविन्धाण (कुस्तीक दाओ-पेँच), काण्ड-विन्धाण (तरुआरिक खेल), धनुर्विद्या आ गोली-बारीक अभ्यास—एहि चारि विद्याक विवेचना होइत छल, तेँ ओ स्थान 'चौपाढ़ी' कहबैत छल । गजपति-वंशक पतनक पछाति टोडरमल पैघ-पैघ चौपाढ़ीक बन्दोबस्त 'किला'क नामसँ कएल । उड़ीसामे आइओ कतेको स्थान पर अवशेष रूप मे छोट-छोट 'चौपाढ़ी' देखबामे आओत आओर प्राचीन दलपति लोकनिक अयोग्य वंशधर लोकनिक आइओ अभाव नहि अछि ।

प्रस्तुत बाघसिंह कोनो पूर्वोक्त दलपतिक वंशधर रहथि । एहि वंशक आस्पद छल मल्ल । सबसँ जेठ पुत्र जागीरक उत्तराधिकारी होइत छलाह आ हुनके टा उपाधि होइत छल बाघसिंह । आन पुत्र खोरिस पबैत छलाह । अन्हामे कनहा राजा । बाघसिंह-वंशक संततिलोकनि छलाह तँ बड़ छोट जागीरदार, परंच देहातमे नाम बड़ छलनि । रतनपुर मौजेक चौपाढ़ी लाखराज खण्डायती महाल छल । ओकर अतिरिक्त ताल्लुक फतहपुर सरसंड आ किछु किला बाजे रिर्पोट जमीन्दारी गैर-मजरूआ आम छल । नटवर घनश्याम बाघसिंह सभटा जमीन्दारी चाटि गेल छलाह । बड़ बेशी शाहखर्ची छलाह । खर्च करैत काल आगू-पाछू किछु नहि देखैत छलाह । पाँच कि सात किछु नहि देखि जे हाथ पड़नि से उड़ाए देथि । जे केओ मुह खोलि याचना कएलक, हुनका मुहसँ 'नहि' नहि बहराइन । भाट-भिखारि लेल द्वारि खुजल रहैत छल । अदहन चढ़ा कए सूप लए हुनका समक्ष ठाढ़

होएबाक भरोस लोककेँ सदिखन रहैत छलैक । खोअबा-पिअएबामे तँ ओ अद्वितीय छलाह । गौआँसभक कहब छैक जे बाघसिंह जकरा अपना सोझामे बैसा कए एको बेर चकुली पूआ, नारिकेल भरल मंडा पू, पालुआ कंदक खीर खोआ देने होएताह से कहियो ओहि भोजनकेँ बिसरि नहि सकत । नटवर घनश्याम सिंह कर्जमे आकंठ डूबल छलाह । हुनक परोछ भेलापर सभटा जमीनदारी बोहा गेल । बचलनि केवल खंडायल महाल । नटवर घनश्याम बाघसिंहकेँ चारि बालक । जेठ रहथिन भीमसेन बाघसिंह तथा शेष तीन रहथि प्रहलाद मल्ल, कुचुलीमल्ल एवं बलराम मल्ल । बेटासभ बाप-सन फुकना नहि । फूकि-फूकि डेग राखएबाला भेलाह । मरौसी सम्पत्ति तँ रहलनि नहि, तैओ कोनो तरहें सुख-दुख सहैत निबहैत छथि । पटम्बर फाटिओ जाए तैओ तँ पटाम्बरे कहाओत । प्रतिष्ठित वंश होएबाक कारणेँ लोक मानैत छनि । भय-भक्ति करैत अछि । रतनपुर मौजे मे बाघसिंहक घर छाड़ि गौड़, भंडारी, राढ़ी, गुड़िया आ पुअमाया जातिक अठारह घर बसैत अछि । ईसभ बाघसिंहक पुरखासँ प्राप्त जागीर वंशानुगत क्रमेँ भोगि रहल अछि । अवसर पड़ला पर बाघसिंहक ओतए बेगारी सेहो कए दैत अछि । पुरहितक घर सेहो एही गाममे छनि । एकरा अतिरिक्त आठ घर डोम सेहो अछि । पाबनि-तिहारक अवसर पर ढोल-पिपही बजएबा लेल एकरा सभकेँ जागीर भेटल छैक । एकरासभक एकटा आर काज छैक बाघ सिंहक घर पर पहरा देब ।

आइसँ प्रायः तीन वर्ष पूर्व मंगराज आ बाघसिंह परिवारक बीच कलह बझल । कारण एकेटा नहि अछि । मंगराज बड़ चतुर लोक छथि । मामिला-मोकदमामे बड़ फरेबी । मुदा लाठीक नाम सुनितहि घरमे सुटकि रहैत छथि । एम्हर बाघसिंह-वंशक नारा छैक-'लाठी सर्वार्थसाधिका ।' विशेषतः डोमसभक भयसँ मंगराजक लोक रतनपुरक सीमा नहि छूबि सकैत अछि । परंच डोमसभ अपन बाड़ीमे चोरिक माल रखबाक अपराधमे जहल जाइत रहैत अछि । लोक कहैत अछि जे डोमक कोनो पीढ़ी चोरि-विद्या नहि जनैत छल एकरासभकेँ जहल पठएबामे मंगराजकेँ दू गजिया रुपैया खर्च भेलनि । मंगराजक छुट्टा गाए सभ एक दिन रतनपुर मौजेक जजात चरि कए किसानक जीविका उजाड़ि देने छल। एही पर बलराम मल्ल आएल छलाह आ गोविन्दपुरक मौजेक दोकानक ओसारा पर बैसि मंगराजकेँ नीक जेकाँ दू चारि टा डहकन सुना देने रहथि । मंगराजक बकार नहि फुटलनि । गोविन्दपुरसँ रतनपुर दू कोस होएत । तथापि दूनू मौजेक खेत-पथार एकअरिआ छैक । ई गप्प अधिक काल सुनि पड़ैत अछि जे मंगराजक गाए बेशी काल रतनपुर मौजेक जजात उजाड़ि देल करैत अछि ।

सोलहम परिच्छेद

टाँगी मौसी

आइ देवस्नान पूर्णिमा थिक । जेठक मास । रौद बड़ तीख अछि । महाप्रभु 'अणसर'[1] पर जा रहल छथि । बड़ उमस छैक । अढ़ाए मास भेल, एक बून पानिक दर्शन नहि । बसात थमकल अछि । पत्रहीन गाछ जगन्नाथ महाप्रभुक समक्षक गरुड़स्तम्भ जकाँ ठाढ़ अछि । अन्य गाछक कोन कथा, खरिका लेल पिपड़रक पात धरि नदारथ । तप्त बालु मे मुट्ठी भरि धान दए दिऔक तँ भड़भड़ कए लाबा भए जाएत । गामक अनेरुआ करिआ पिल्ला-पिल्ली पोखरिक कतबहिमे लेढ़ाइत पड़ल हाथ भरिक जीह बाहर कए हकमैत रहैत अछि । पानिक दिस नहि जाइत अछि, किएक तँ पूरा पानि इन्होर भए गेल अछि । परती पर एको-दू टा माल-जाल नहि, सभटा माल-जाल गाछक तर बैसल अछि । जेना वैष्णवजन हाथमे गो-मुखी लेने हरिनाम जपैत रहैत छथि तहिना ओ सभ आँखि मुनि पाउज कए रहल अछि । आकाशमे एकोटा कौआ कि कोइली उड़ैत नहि देखबैक । सभ चिड़ै झोंझमे नुका लोल बाबि बैसल अछि । रौद माथ फाड़ि रहल अछि । तीन पहर दिन बीति गेल, तैओ आकाशसँ अग्निक वर्षा भए रहल अछि ।

हुँ मोर भाइ हौ हुँः हूँ हुह !
खबरदार हौ हुँ हू हुँह् !
जोर लगा भाइहौ हुँ हू हुँह् ।
दहिना दए भैआ हुँ हूँ हूँह् ।
बाम छोड़ि भैआ हुँ हू हुँह !
खड़पा खड़पा खड़पा .....

रतनपुर मौजेक गलीमे कहारक हुँकरब सुनि पड़ल । आगू-आगू एक महफा अछि आ पाछू-पाछू पाँचटा भरिआ । पूरा महफा 'दशिया' झाँपसँ आवृत अछि । गाममे पुरुष-पात प्रायः केओ नहि अछि । जोत-कोड़क कोनो काज नहि रहलासँ सभ केओ बाघसिंह बन्धुक संगे बलदेवजीक स्नान-यात्रा देखबा लेल केदारपाड़ा गेल अछि । गामक एक कोन सँ दोसर कोन धरि गुलगुल भए गेल । महफा आएल, महफा आएल ! बूढ़ि आ अधबएसू स्त्रीगण फटाफट केबाड़ भिड़ा कए गली दिस चल गेल । कनिआ-बहुरिआ केबाड़क पट्टा

---

1. आषाढ़ वदि पड़िव सँ पक्ष भरि देवस्नान पछाति दर्शन नहि होइछ ।

कैं आधा भिड़ाए ओकर दोग बाटैं बेसरि झलकबैत हुलकी देअए लगलीह । महफा अएबाक प्रसंग गामक स्त्रीगणमे नाना तरहक अटकर लगाओल जाए लागल । पहिने लिंग-विचार भेल, तखन व्यक्तिक-विनिर्णय । केओ बाजल, नव कनिआँ छैंक, केओ बाजल जमादार अछि, केओ कहलक-साहेब छथि । जेनाक माए अकाट्य तर्कक संग बाजलि— 'आइ देव स्नान पूर्णिमा थिकैक, जमादार साहेब तर-तरकारीक भारक संग गाम दिस जा रहल छथि । महफा यदि बाघसिंहक दरबाजा दिस घुरल नहि रहैत तँ जेनाक माइक अनुमान कैं सिद्धांत रूपमे परिणत होएबाक पर्याप्त संभावना छलैक ।

कहारसभ बाघसिंह दरबाजा पर महफाकैं धम्म पटकि देलक आ अँगपोछासँ मुह पोछए लागल । देहसँ टपटप घाम चूबि रहल छलैक । कपार-कनपटीसँ घाम बामा हाथैं काछि-काछि फैंकैत जाइत छल । अन्नरमे समाद गेल जे नबकी कनिआँक मौसी अएलथिन अछि । गत माघमे बाघसिंहक बेटा चन्द्रमणिक विवाह डालीजोड़ाक फतेहसिंहक बेटीसँ भेल अछि । गामक बुधिआरि स्त्रीगणकैं बिना व्याख्या कएने ई बात बूझि लेबामे कनेको भाँगठ नहि भेलैक जे महफा सोझे डालीजोड़ा सँ अएलैक अछि । नौआइनि माणिक भंडारिनि मलिकाइनिकैं ई कहबा लेल साँझे हवेली दौगलि ।

हमर माणिकक नाम अहाँ सुननहि होएब । नहि सुनने होइ तँ सुनि लेब आवश्यक । एकरा केवल नौआइनि नहि बूझू । की बुद्धिमे, की व्यवहार मे, की गुण-गरिमामे हमर माणिक कोनो पुरुषक कान काटि सकैत अछि । गामक सब केओ एकरासँ डेराइत अछि । जटिल विषयमे बुढ़िओ सभ कोनो काज एकरासँ विचार लए कए करैत अछि । झाड़-फूकमे एकर परतर केओ नहि कए सकैत अछि । कोनो चिल्हकाकैं नजरि लगलैक कि ओ तुरन्त झाड़ि-फूकि दैत अछि । धाइक काजमे सेहो बड़ निपुण अछि । धी-पुतोहुक पाएर भरि अएबाक दिनसँ छठिहार वा मसनही धरि ई परसौतीक लगसँ उठबाक नाम नहि लैत अछि । जड़ी-बूटी खूब चिन्हैत अछि । जेना परोपकार करबामे आगू-आगू रहैत अछि, तहिना झगड़ा-झंझट बेसाहि लड़बामे सेहो कुशल आ ठोस । जँ कहिओ झगड़ा बजरि गेलैक तँ ओहि दिन नहएबो बिसरि जाइत अछि । ककरोसँ यदि मैत्री भेलैक आओर यदि दू टा नीक बोल कहि देलक तँ माणिक बिना खएने-पीने, बिना आँखि मुनने भरि राति ओकर सेवा करैत रहि जाएत । विवाह दान हो कि गओना-बिदागरी, कहिओक कि नहि कहिओक, माणिक स्वयं आबि उपस्थित भए जाएत । करबा लेल अढ़बियौक कि नहि, ओ सभटा अपने फुरने कए देत । एहन कोनो बात नहि जे माणिक नहि जैनत हो । कटकक प्रसंग हो, साहेबक घरक गप्प हो, पुरी जगन्नाथ-मन्दिरक गप्प हो, सभ गप्प गामक जनी जाति माणिक मुहेँ सुनि लैत अछि । बिना माछक पोखरि भए सकैत अछि, मुदा बिना कुचेष्टीक कोनो गाम नहि भए सकैत अछि । तैं, लोक बाजि दैत अछि जे माणिक चुगिलाहि अछि । पेटमे किछु अरघैत नहि छैक । फुसिआहि अछि । मुहफट अछि । मनगढ़न्त भविष्यवाणी करैत अछि । केओ-केओ तँ इहो कहि दैत अछि जे एकर तीन पुरखा धरि

केओ गामक सीमा नहि टपल, तखन ई कटक-तटक आ साहेब—ताहेबक घरक गप्प कोना बूझि गेल । बाघसिंहक हवेलीमे माणिकक बड़ मान छैक । बड़ प्रतिष्ठा छैक । हजार बेर कहल आ सए बेर सुनल ओ कथा सभ जाहिमे राजाक बेटा, मंत्रीक बेटा, बनियाक बेटा आ कोतवालक बेटा चारू मिलि विदेश जाइत अछि, अथवा करैली देवीक खिस्सा, अथवा नदीक पार मंगलाक खिस्सा आ आरो कतेक खिस्सा सुनबा लेल साँझखन कए मलिकाइनिक बजाहटि होइत अछि । राम-रावण-युद्धक कथा तँ माणिक मुहजवानी सुनबैत जाइत अछि । आ जे कोनो बात पुछबैक तकर उत्तर अवश्ये देत । मुदा एक बात । ओ जे किछु बाजए अहाँ ओहि पर हूँ हूँ करैत जाउ । जँ से नहि कएलहुँ तँ ...,छोडू एहि प्रसंग कैं ।'स्वनामा रमणी धन्या ।' माणिककैं तँ गाममे लोक नीक जकाँ चिन्हैत छैक । ओकर परिचय अहाँकैं देब कोनो आवश्यक नहि ।

जखन महफा गामक ठीक बीचमे छल, तखनहि माणिक पछुआएल नौआसँ सभ गप्प खोधि-खोधि पूछि बूझि लेलक आ बाघसिंहक आँगनक दोरुक्खासँ चिचिआइत हवेली पैसिऐ बड़की बौआसिनि, ऐ मझिली बौआसिनि, ऐ छोटकी बौआसिनि, अबै जाउ सभ केओ, दौगे जाउ । कतए छी ऐ ? डालीजोड़ाक समधिनिक सबारी बड़ी कालसँ दोआरि लागल अछि । समधिनि अओतीह से गप्प तँ हमरा चारि दिन पहिनहिसँ बूझल भए गेल छल । अहाँकैं कहब बिसरि गेल छलहुँ । ओ काल्हिए डालीजोड़ासँ बिदा भए गेलि छलीह ।चिन्ता भेल, एतेक विलम्ब कतए भए गेलनि ? डालीजोड़ाक बाटमे बड़का पोखरि छैक ने, ओहीमे नहाए-सोनाए लागलि छलीह, तैं देरी भए गेलनि ।''

बाघसिंहक घरक चारू देआदिनी एक ठाम आबि एक दोसराक मुह ताकए लगलीह । एकर अर्थ छल अभ्यागता अनाहूता समधिनिक प्रति कर्त्तव्यक निरूपण । संयोगवश माणिक ठामहि छलि, ओ तुरन्त निर्णय कए देलक, ''झट दए जाए समधिनिक परिछनि करिऔन ।''

बाघसिंहक ओसारा बला केबाड़क दोगसँ छक, नकमुन्नी आ बेसरि बाला दू-तीन टा नाक प्रकट भेल । मौसी महफासँ उतरलीह आ धंम-धम करैत आँङन अइलीह । 'समधिनि-समधिनि' कहैत चारू छक-बेसरि-मंडित-नासिका-धारिणीक संग बेरा-बेरी घड़ा- जोड़ी कएल । गृहपत्नी बौआसिनि नीरव हास हँसैत समधिनिक हाथ धए कोठली लए गेलीह । समधिनिक आदर-सत्कारक प्रसंग विशेष उद्योग-अनुष्ठान माणिके कए रहलि छलि । ओ आगू-आगू दौड़ि बाघसिंहक विश्राम-कक्षक सामने बाला चबुतरा पर चारि-पाँच हाथक पुरान सतरंजी बिछा देलक । मौसी ओहि पर बैसि गेलीह आ चारू समधिनिओकैं हाथ पकड़ि-पकड़ि लगमे बैसा लेलनि । पाँचो टा भारअनबाए बीच आँगन मे रखबाओल गेल । भारक फिरिस्त एना छल- पाकल आम एक भार; बड़का खजबा कटहर एक जोड़ा-एक भार; काँच-पाकल केरा दू घौर दू हत्था-एक भार; उड़ीदक पिठार लगाए केराक पातसँ मुहबन्द चारि तौलाक दू भार; कुल पाँच भार । गामक जनीजाति

देखबा लेल दौगलि । रेवती, शुकुरी, शंक्री, भालिया , जेनाक माए, भीम मौंसी, हंगुराक माए, सोदरी, मेंकी, कनक, नत (झंडा) दादी, सावी, कमली, पदी, अपा (दीदी पीसी), शामाक कनिआँ, ललिता, विष्का, सुमित्रा, गौड़ घरक नवकनिआँ आदि सभ केओ । केओ बच्चा काँखतर लेने तँ केओ बच्चाकेँ हाथ पकड़ि घिचैत, केओ ककरो पाछू-पाछू तँ केओ एकसरे दौगलि अबैत । शक्राक माए घर नीपि रहलि छलि, गोबरएले हाथे दौड़ि आइलि आ साँपक फेँच जकाँ हाथकेँ उपर कएने ठाढ़ि रहलि । बाघसिंहक आँडन भरि गेल । भगवतीक मूर्तिक दर्शन जकाँ स्त्रीगण मौसीक रूप-माधुरीक आस्वादन अपलक करैत रहल । मुदा, बनिया, बँकिया, कालिया, बनमालिया, रामिया, उमेशिया, काशी, दैत्यारि आदि कठपिंगल छौंड़ा सभ मौसीक सौन्दर्यक दर्शनक विषयमे मनोयोग करबाक बदलामे आँगनमे राखल पाकल आम आ पाकल केराक घौर ओहिना निहारैत रहल जेना माछक सुकठी पर बिलाड़ि धपाएल रहैत अछि । एहिमे सन्देह नहि जे एना करब असभ्यता थिक, नीतिशास्त्रक विरुद्धक थिक । ततबे नहि, ओकरासभक वृत्तक परिधि ततेक छोट भेल जाए रहल छल, ओकरा सभक गोल ततेक लग पहुँचल जा रहल छल, जाहिसँ ओहि छौड़ा सभक कुदृष्टि शंकास्पद भए गेल छलैक । बुधिआरि माणिक से गमि गेलि । जँ ओ दहिना हाथ हिला-हिलाकेँ वर्जित नहि कए देने रहैत तँ एकर पूर्ण संभावना छलैक जे लूटि-पाटिक कोनो फौजदारी मामिला ठाढ़ भए जाए।

कनिआ मौसी माथमे भगवती मंगला जकाँ भरि माँग सिनूर, आँखिमे काजर, नाक मे नकमुन्नी ओ तकरा उपर नचैत मोर, नाकक बामा पूढ़ामे बेसरि, दूनू कानमे पैघ-पैघ कर्णफूल, गरामे चन्द्रहार, ओकार नीचा रेशमी डोरामे गाँथल सोनाक मोहरमाला, बामा बाँहिमे बाँक, हाथमे पहुँची, पहुँचीक उपर काट, ओकरो उपर चूड़ि, हाथक पाँचो आँगुर मे नाम छाप बाला सात औंठी, पाएरमे चौबीस भरिक काँसाक दू टा काड़ा, पाएरक दसो आँगुरमे दसटा बिछिआ, आदि गहनासँ शोभित छलीह । माथमे दस-बारह फुदनाबाला डोरि सँ गूहल विशाल खोपा छनि आ ताहि पर तीनटा सिकड़बाला मेखमुखी जूड़ाकाठी खोँसल छनि । कुंभकर्णी पाढ़िक अठगज्जी बरहमपुरी पटोर पहिरने छथि । भरि मुह पान गलोठने छथि । ई तँ सुनले छलैक जे डालीजोड़ाक फतेहसिंहक घर बड़ प्रतिष्ठित । गामक स्त्रीगण जे एतेक दिन कानसँ सुनैत छल से आइ आँखिसँ देखलक-ठीके, घर तँ घरे अछि ।

मौसी बैसि गेलीह आ बजलीह, "हमर बुचिआ कतए अछि ? बुचिआकेँ देखिऐक कनी । ओह, माए सँ कात भेलि हमर बुचिआ सुकठी तने भए गेलि ।" छोटकी पितिया सासु कनिआँ कैँ लए अनलनि । कनिआँ डेढ़ हाथक घोघ काढ़ने कनेक निहुड़लि जकाँ आबि चट ए मौसीक पाएर पर माथ राखि प्रणाम कएलक । मौसी अपन बुचिआकेँ पाँज मे लए ओकर गुणक बखान करैत नोर चुआबए लगलीह— "बेटी गे बेटी, तोरा नहि देखि हम आन्हरि भए गेलहुँ । चान गए चान, हमर घर तोँ अन्हार कए अएलेँ । गै हमर श्याम-रतन, हमर कला माणिक !" गुणकीर्तनपूर्ण एहि क्रन्दनकेँ तेज करैत मौसी अत्यन्त विकल

भए गेलीह । दूनू आँखिसँ नोर झहरए लगलनि । बड़की समधिनि पाँजमे लए अपन आँचरसँ आँखि पोछि अनेक तरहक बोल-भरोस दए चुप कएलथिन । मौसी बजलीह, "की कहू समधिनि, जहिआसँ बुचिआ चलि आइलि, तहिआसँ अन्न-पानि सभ किछु तीत लगैत अछि । खाली बाट तकैत बैसलि रहैछी, एम्हरसँ जे केओ गेल तँ पुछै छिऐ, कोनो शब्द भेल तँ पुछै छिऐ ।"

बुचिआ तँ अनचिन्हार अवाज सुनि आ विलापक रंग-ढंग देखि अकचका गेलि । मौसीक मुह देखबा लेल अपन घोघकेँ कने उठबए लागलि । चतुर मौसी बुचिआक भाव बूझि ओकर घोघकेँ फेर तनैत बाजलि, "गे हमर लाजक पुतरी, गे हमर लजबिज्जी, तोरा एते लाज करब के सिखओलकौक ? समधिनि, की कहू, एकर माए सेहो एहिना लजकोटरि छलैक । बूढ़ि भए मुइल, तैआ सासुक सोझाँ आँखि उघारि कहिओ तकलक नहि । घोघ कहिओ उठओलक नहि । पछाति सासुक संग उतरा-चौरी भलहिँ करए लागलि; पितिआ सासुक संग कथा-कथान्तर भलहि करए लागलि, मुदा सभटा घोघक तरे-तर । धानक बीआसँ कतहु झर उपजए ? तुलसीक फूलसँ कतहु कबाछु जनमए । जनीजाति भइओ कए लाज-धाक नहि कएल तँ एहि जीवनकेँ धिक्कार । बेश, छोडू गप्प ।" मौसीक बाजब सुनि बुचिआ आरो सकुचाए एनमेन बेङ बनि बैसलि रहलि । नैहरमे ओ सुनने रहए, टाँगी मे ओकरा एकटा मौसी छैक । ओहि गामक मौसी ओकर माइक पितिऔत बहिनि । मन मे भेलैक, ई ओएह टाँगी बाली मौसी होइतीह ।

तकरा बाद कनिआँक मौसी हँसि-हँसि कए समधिनिसभसँ गप्प करए लगलीह । समधिनि-समधिनिक गप्प, हास-परिहासक गप्प, धुरताक गप्प-बहुत राश गप्प भेलैक । ओ सभ गप्प सुनबाक इच्छा तँ अहाँकेँ होइतहिँ होएत, मुदा बड़का घरक धी बौआसिनिक गप्प उघार करब हमरा नीक नहि लगैत अछि । तैओ जँ अहाँकेँ सुनबाक प्रबल इच्छा हो, तँ हम किछु एहन कथा सुना सकैत छी जाहिसँ कोनो प्रकारक दोष नहि पड़ए । कनिआँ मौसी बजलीह—

"एहि साल भारी योग लगलैक अछि । सभ-केओ बलदेवक मेला देखए जाए रहल अछि । हमर गाम तँ मानू सुनसान भए गेल अछि । मोन भेल, नीक अवसर आएल अछि, देवताक दर्शन आ समधिनिक भेट दूनू एकहि संग कए ली । एक पंथ दुइ काज । बुचिआ कोना अछि सेहो देखि लेबैक । सभकेँ हाँकि हाँकि घरसँ कात कएल । हमर ओ आ बहिनोए घोड़ा चढ़ि-चढ़ि आगू-आगू जाए रहल छथि । ओसभ कलमबागमे बिलमल छथि । सभटा नौआ-कहार हुनके संग छनि । हम सोचलहुँ, ई कोना होएत जे बुचिआकेँ बिनु देखने आगू बढ़ि जाएब । तेँ असगरे चलि अएलहुँ । काल्हि दर्शनक बाद एम्हरहि बाटेँ सभ गोटे घुरब । बाटहिमे सुनलिऐक समधिओसभ मेलामे जा रहल छथि । नीके भेल, सभ संगहि चलब । समधिनि सुनू, अहाँक संग ने कोनो सुख-दुखक गप्प भए सकल आ ने विशेष हासे-परिहास भए सकल । घुरैत काल चारि दिन एहि ठाम रहि जाएब । बहिनोए

कहने छलाह, देखैत छिअनि चारि दिन कोना नहि रहैत छथि । डाँड़क धोती पकड़ि रोकि लेबनि ।'' आ फेर बुचिआक माथ पर हाथ बुलबैत बजलीह—''गे बुचिआ गे, आहा ! जानि नहि, छओंड़ा-सभ चिन्हत कि नहि । कतेक दिन देखना भए गेल । हम फेर आएब ! एकान्तमे बैसि बहुत रास गप्प करब ।''आ फेर कान मे फुसुर-फुसुर कहलथिन,—''तोरा लेल बहुत राश सनेस मेलासँ अनबौक ।''

तखन कनिआँक मौसी बाड़ी दिस जएबाक इच्छा प्रकट करैत ठाढ़ि होइत बजलीह—''समधिनि, बाड़ी गेला पर स्नान करैत छी । जँ चारि बेर जाए पड़ल तँ चारि बेर नहाएब । पछुआर जाए पड़ल तँ एक लोटा पानि अवश्य लेब । कहलो अछि, आचारे बसति लक्ष्मी, विचारे सरस्वती ।'' वाक्य पूरा करैत ओ धम-धम करैत कोनटा लग राखल महफाक कात देने बिदा भए गेलीह । संगक नौआइनि पहिनहिसँ लोटाक हाथेँ ठाढ़ि छलि । कनियाँक मौसी छिटका पड़ि जएबाक आशंकासँ लोटाक मुह पर हाथ देने बाड़ीक द्वारि दिस चलि गेलीह । बाघसिंहक घरक खबासिनि मुतुरीक माए ओलतीक नीचासँ बाट देखबैत बाड़ीक द्वारि पर ठाढ़ि भए गेलि । कनिआँक मौसी ओकरा निहारैत बजलीह—''भोर खन बड़ कष्ट भेल । की करितहुँ । चारूकात लोक छलैक । पुरुषपात होथि वा स्त्रीगण, ककरहु देखैत रहला पर हम बैसि नहि सकैत छी ।'' मुतुरीक माए बाजलि,''नहि-नहि, अपने जइऔक, केओ नहि अछि ।'' आ मुतुरीक माए अन्नर आबि बाड़ी जएबाक केबाड़केँ औंगठा देलक ।

अन्हार भए गेल । कनिआँक मौसी बजलीह, ''आब हम बिलमि नहि सकैत छी । ओ बाट तकैत होएताह ।'' समधिनि किछु खा लेअए कहलथिन । कनिआँक मौसी जीह कुचैत बजलीह— ''राम, राम, राम! ई की कहलहुँ, समधिन, ई की कहलहुँ ? जाहि घरमे बेटी देल ताहि घरक पानि पिअब, कहू तँ ? '' बिदा होइत काल कनिआँक मौसी समधिनि सबकेँ गरा लगबैत बजलीह—

बिदा करू सखि हे, हम चललहुँ, हृदय छाड़ि एहि ठाम ।
कटत राति-दिन कनइत-कनइत हिचुकि हिचुकि अविराम ।।

गामसँ बाहर भए महफा पाँतरक बाट पर अन्हारमे समाए गेल । एम्हर सनेसक पाँचो भार पुरुषपातकेँ देखएबा लेल ओरिआ कए राखि लेल गेल । कनिआँक मौसीक प्रस्थानक उपरान्त हुनकर रूप-गुणक प्रसंग खूब चर्चा भेल । सभ केओ प्रशंसा कएलक । केओ रूपक तँ केओ गुणक । केओ गहना-गुड़िआक तँ केओ पाकल केराक । एक माणिके टा एहन छलि जे बाजलि,— ''अरे रहए दिअऽ ! बड़ भेलीह अछि बड़का घरक । रूप तँ रूपे छनि ! मुदा दाँत छनि फार-सन आ गाल मालपूआ-सन ।'' हँगुराक माए बाजलि—''बोल तँ एकोटा मीठ नहि, जे किछु बजलीह, सभ टा खसर-खसर ।'' मुतुरीक माए बाजलि, ''चालि धसर-धसर ।'' शंकरी बाजलि, ''हँ गए, ''हँसब फसर-फसर ।'' शुकरी बाजलि, ''आ नजरि मटर-मटर ।'' पलेभरि मे एको हि गुणमे दोषसन्निपात भए गेल । नवकी कनिआँ सँ मौसीक प्रसंग कतेको प्रश्न कएल गेल । ओ बेचारी एतबे बाजलि, ''टाँगी मौसी''।

सतरहम परिच्छेद

घरमे आगि कोना लागल ?

आइ अनन्तपुर गाममे हाहाकार मचल अछि । काल्हि अधरतिएसँ बाघसिंहक हवेली मे आगि लागल छैक । सभ घर जरि खाक भए गेल । धानक बखारी सुड्डाह भए गेल । कारी-कारी झरकल देबाल मात्र ठाढ़ अछि । एखन धरि आगि मिझाएल नहि अछि । घरक भीतर चार खसि पड़ल अछि आ धू धू कए जरि रहल अछि । कोरोक बाँस फटाफट फाटि रहल अछि । कतहु देबाल पर लटकल बाँस तँ कतहु खढ़क आँटी औखन जरि रहल अछि । मोटका-मोटका खाम्भ अग्नि-स्तम्भ जकाँ लगैत अछि । चौखटिमे आगि, केबाड़ मे आगि, चारूकात आगिए आगि । भंडारमे आगि लागि गेल अछि । धुआँक बड़का गोल उठि रहल अछि । जेठक मासक दिन ! चार सुखा कए टाँट भेल । ककरहु लग जएबाक साहस नहि । बसात कहाँ कतहु छल ? केवल माटि-पीटल छत बाला घरमे एखनहु आगि नहि लागि सकल अछि । केबाड़मे तँ लागिए गेल छैक । घैलक घैल पानि उझिलि हरबाह केबाड़क निकट पहुँचबाक चेष्टामे अछि ।

मेलासँ यात्रीसभ घुरि आएल अछि । छओ घड़ी दिन चढ़ि गेल अछि । नीचाँ आगि, उपर आगि, घरसँ खढ़ो नहि बाहर भए सकल । आगि दोपहर रातिमे लागल छल । स्त्रीगण ओँघाएल पोँघाएल कोनो तरहेँ केवल देहक पहिरन लए पड़ाइलि छलीह । ओसभ कलमक गाछक छाँहमे बैसलि घरमे लागल आगिकेँ देखि-देखि बनबिलाड़ि जकाँ आर्त्तनाद कए उठैत छथि । गाए-बरदक गरदाम खोलि हरबाह पहिनहि दूर पड़ा गेल छल । ओ प्रयास कएने रहैत तँ कतेको वस्तु बाँचि गेल रहितैक । मुदा दोसरक खातिर अपन जान के गमाबए । अपराह्न भए गेल । बाघसिंहक घरक नेनासँ बूढ़ धरि केओ दँतमनिओ नहि कएलक अछि । बेटा-पुतोहुलोकनिकेँ ठकमूड़ी लागि गेल छनि । बूढ़ा पुरोहित कैलू रथ बहुत बुझा-सुझाकेँ दतमनि करओलनि । अपन घरसँ गुड़-चूड़ा आ फुलही बाटीमे भरि-भरि माड़ आनि-आनि सभकेँ कनेक-कनेक खुऔलनि-पिऔलनि आ एहि प्रकारेँ हुनकर चित्तकेँ शान्त कएल । स्त्रीगणमे केओ खएलनि, केओ नहि । जे नहि खलएनि से लोटाक लोटा पानि घटाघट पीबि बाघसिंहक घर दिस टकटकी लगओने पड़ि रहलीह ।

बखारी छोड़ि आन ठामक आगि मिझा गेल अछि । कोनो-कोनो घरसँ कनेक-कनेक धुआँ आबि रहल छैक । प्रायः दू घड़ी राति बीतल होएत । भाइक संग बाघसिंह आ समस्त गौआँ एक गाछक नीचा बैसल छथि । बाघसिंह पूछल—"आगि कोना लागल ?" सभक इएह पूछब छलैक, "आगि कोना लागल ?" उत्तर देत के ? कैलू बाजल—"आगि

लगाओत के ? वाघसिंहक दरबाजा पर के आबि सकैत अछि ? सभटा हिगुला देवीक माया थिक ।'' सभ केओ हुनकर मुह ताकए लागल । ठीके बात । गोविन्द रथ वजलाह—''उहुँ, हिगुला देवीक नहि, ई तँ बूढ़ी मंगलाक कोप थिक । देखैत नहि छह मंगराज प्रत्येक वर्ष हुनक पूजा करबैत अछि । हम कतेक बेर कहल, पूजा कराबगह । मुदा केओ ध्यान नहि देलक । आव देखलह ने ! हम बिना बुझने-सुझने कोनो बात नहि बजैत छी । भगवती रूसलि नहि रहितथि तँ पछुआड़क ओलतीक जौड़क ढेर मे आगि कतए सँ अबितैक ?''

माणिक बाजलि, ''ओसभ गप्प चाहे जे किछु हो, नबकी कनिआँक पाएर बड़ अलच्छ छनि । जहिआसँ हुनकर पाएर एहि घरमे पड़ल अछि तहिआसँ एक पर एक अमंगल होइत रहल अछि ।'' श्यामाक माए बाजलि— ''सोलहो आना ठीक । डरेँ हम वाजि नहि सकैत छलहुँ । देखलिऐक नहि, चैतमे कतहु किछु नहि, आ गाएकेँ साँप डँसि लेलक । की पहिने गाम मे साँप नहि छल ? मुदा कहिआ गायकेँ कटने छलैक । हम तँ दू बीस आठ वर्षक भए गेलहुँ, मुदा ई कहिओ ने सुनल जे बाघसिंहक गाए केँ साँप काटि लेलक ।'' मकरा हरवाह बाजल, ''से नहि तँ आर की ? दुइए वर्षक भीतर मकुनी हाथी सन-सन दू टा वरद थस लए लेलकनि ।'' अर्जुन हरबाह बाजल—''एही आमक मासमे आमकेँ माल-जाल चरैत छल, मुदा एहि बेर आमक दर्शनो नदारद ।'' हरवाह आ ओकर बहु नौआ-नौआइन आदि सभ अनुमान, युक्ति आ प्रमाणक प्रयोग द्वारा निष्कर्ष पर पहुँचल जे घर जरबाक कारण नबकी कनिआँक अलच्छ पाएर थिक । एही निष्कर्षकेँ पुष्ट करैत माणिक फेर बाजलि,—''देखलह नहि, कनिआँक मौसीक अएना तिनिओ दिन नहि भेलनि कि विनाश पाछू धएनहि चल आएल ।''

बाघसिंह पूछल, ''कनिआँक मौसी के ?'' माणिक महफा चढ़ि कनिआँक मौसीक आएब, डालीजोड़ाक फतेहसिंहक अश्वारोहणपूर्वक देवदर्शन-यात्रा इत्यादि पूर्वकथित सकल वृत्तान्त जेना जे देखलक, जेना जे सुनलक, ताहिमे नोन-तेल सानि सुना देलकनि । एकर अतिरिक्त मौसीक संग आएल भारक संख्या आ साँठल पदार्थक वर्णन करबो ओ नहि बिसरल । केओटनी सावीक माए बाजलि—''चूड़ा बेचबाक लेल कैक बेर गोविन्दपुर जाए देखि आइलि छिऐक, कनिआँ मौसीक रूप ठीक ओहने छलनि जेहन रामचन्द्र मंगराजक हबेलीक चम्पाक ।'' शंकर हरबाह बाजल, ''कटहरक भार जे अनने छलैक ने, ओ तँ मंगराजक हरबाह छल ।'' बाघसिंह-बन्धु एक दोसराक मुह तकलनि । आ बजलाह—''कहू तँ । कँदरा पाड़ासँ हमसभ तँ रस्ते धएने आबि रहल छी, महफा-तहफा, घोड़ा-तोड़ा कतहु तँ किछु नहि भेटल ।'' केंदरा पाड़ाक बाट आ डाली जोड़ा फतेह सिंहक गाम दिस राता-राती लोक दौगल । घूमि कए ओ जे संवाद देलक, तकर निष्कर्ष इएह जे सभटा बुढ़िआक फूसि । गाममे एहि घटना पर कतेको दिन धरि चर्चा होइत रहल । कात-करोट धरि गप्प पसरल । सभक इएह अनुमान भेलैक जे ई मंगलाक माया थिक । डालीजोड़ाक फतेहसिंह एहि बातक जिज्ञासामे अएलाह तँ बेटीक बिदागरी करओने गेलाह । लोक बजैत अछि ओ जेना अन्न पानि त्यागने छलि, ताहिसँ ई निश्चित छलैक जे जँ बाप बिदागरी कराए नहि लए जइतथिन तँ ओकर प्राण गेले बुझू ।

अठारहम परिच्छेद

मलिकाइनि

एक दिन काल सबहुकेँ खाएत । जगमे कथा-मात्र रहि जाएत ।

साओन मास । राधाष्टमीक दिन भिनसरका पहर । झलफल एखनहु छलैके । पह पूरा फाटल नहि छलैक । लोक ओछान छोड़ने नहि छल । हँ, बहुतोक नीन अवश्य टूटि गेल होएतैक । कोनो विशेष आवश्यक काज नहि हो तँ जाड़ आ भदबारिक भोरमे ओछाओन किछु काल धरि अपनामे सटओने रहैत छैक । मंगराजक घरक खबासिनी मरुआ बामा हाथमे लोटा लेलक आ दहिना हाथसँ केबाड़ खोलि बाहर भेलि । सहसा ओकर आँखि तुलसी चौरा पर पड़लैक कि देखि ओ अवाक् भए, ठामहि काठ भए गेलि । चौरा लग उज्जर-सन ओ की थिक ? तुलसी-चौरा मंगराजक अँडनाक बीचोबीच अछि । एहि संसारमे मलिकाइनिक कहबाक जँ किछु अपन छनि तँ से थिक ई चौरा । तुलसीक पूजा करब हुनक जीवनक व्रत छनि । फुलबाड़ीसँ गाछ आनि अपने हाथेँ रोपने छलीह । भोरे उठि तुलसी-चौराक चारूकात झाड़ब-बहारब, गोबरसँ नीपब, नहाए-सोनाए ओकर जड़िमे पानि ढारब, मुट्ठी भरि अरबा चाउरक नैवेद्य चढ़ाएब, संध्याकाल साँझ देब— इएह सभ काज मानू हुनक दिन भरिक कर्त्तव्य भए गेल छल । साँझ देलाक बाद माथ पर आँचर लए पूरा आध घंटा धरि ओ तुलसीकेँ प्रणाम करैत रहैत छथि; चुपे मुहेँ की-की गोहारि करैत छथि से तुलसी महारानिए जानथि । मरुआ डेराइत-डेराइत तुलसी चौरा लग गेलि । नीक जकाँ निहारि देखलक, "अएँ ! ई की ? मलिकाइनि ? अए मलिकाइनि, अए मलिकाइनि !" हुनकर देहकेँ हाथसँ हिलओलक । राति बेस पानि पड़ल छलैक । कपड़ा-लत्ता बोदरि भेल छलनि । देह बालुमे लथपथ भेल काठ-जकाँ अकड़ि गेल छलनि । बरफ-सन हिमाल भए गेल छलनि । मरुआ दारुण चीत्कार कए उठलि आ कानि-कानि घओना करए लागलि, "मलिकाइनि अए मलिकाइनि ! कतए छोड़ि गेलहुँ अए हमर मलिकाइनि ! चुट्टी-पिपरीक भूख आब के बुझतैक अए मलिकाइनि ! दुखित पड़ब तँ पथ-पानि के करत अए मलिकाइनि !" मरुआक कानब सुनि हबेलीक सभ लोक दौगि आएल । आँगनमे थाहाथाही करए लागल । स्त्रीगण झौहरि करए बैसि गेलि । कनिआँसभकेँ माथो झपबाक होस नहि छलनि, कनैत-बिलपैत ओसभ भूमिमें औंघड़ाए रहलि छलीह । सभसँ बेशी विलाप चम्पा कएलक । ओ बाड़ीक मोहखासँ गलीबाला मोहखा धरि दौगि-दौगि झौहरि कए रहलि छलि । सभ केओ करुण क्रन्दन कए रहल छल । ककरा के सम्हारए ।

छनहिमे ई समाचार बिजलौका-जकाँ गामक एक कोनसँ दोसर कोन धरि पसरि गेल । स्त्रीगण रातुक ऐंठ-कूठ धोअब-माजब छोड़ि आ पुरुषपात अपन दैनिक कृत्य छोड़ि मलिकाइनिक गुण-गान करए लागल । जकरा कोनो सम्पर्क नहि छलैक ताहु महिला सभक कोंढ़ फाटि गेलैक । केओ बाजलि, "आइ महाष्टमीक पुण्यतिथिमे गामक लक्ष्मी बिदा भए गेलीह ।" केओ बाजलि, "मंगराजक घरक श्री एतबे दिन लिखल छलनि । आब श्रीहीन भए गेलनि ।" पति-सेवाक प्रसंग गामक स्त्रीगण मलिकाइनिक चर्चा करैत छथि । हुनकर चरित्र जेहन निर्मल छलनि, धर्ममे आस्था सेहो तोहने अटल छलनि । स्त्रीक सर्वस्व तँ पतिक सिनेहे होइत अछि । बेचारी मलिकाइनि सधवा तँ छलीह, परंच विधाता हुनकर कपारमे पतिक सिनेह नहि लिखने छलथिन; मुदा तकर चिन्ता कि पश्चात्ताप हुनका नहि छलनि । मनमे ई अबधारि लेने छलीह जे पतिक सेवे स्त्रीक धर्म थिक, आ स्वामीक सेवहि मे पत्नीक सुख अछि । पतिक सेवे नहि, मानव मात्रक सेवा हुनका लेल परम सुखद वस्तु छल । बेटासभ तँ ओही दिनसँ लग आएब छोड़ि देने छलनि जहिआ सँ ओ सभ आनक बेटीक हाथ धएलक । ई बात नहि जे पुतोहु उपेक्षा करैत छलनि, मुदा हुनका ओ मान-सम्मान नहि भेटलनि जे सासु-सन गुरुजनकेँ अपन पुतोहुसँ भेटबाक चाही । ई कहिओ देखबामे नहि आएल जे सासुक रोगो-बेयाधिमे कोनो पुतोहु कोनो दिन सासुक हाथ-पाएर छूने होथि । मुदा एहिमे तँ मलिकाइनिक अपन दोष छलनि । ककरो पर रोब देखाएब; मलिकाइनि होएबाक बोध कराएब; बेटी, पुतोहु, खवास, खवासिनी आदि केँ डाँटब वा शासनमे राखब ओ नहि जनैत छलीह । तथापि एहि बातसँ ओ दुखी नहि छलीह । हुनका लेल सभ भल । जे माननि सेहो भल जे नहि माननि सेहो भल, इहो हींगु-राइ ओ हो हींगु-राइ । यदि केओ दस टा गारिओ पढ़ि देनि तँ गोड़-बौकि जकाँ अकबका जाथि ।

जेना शालग्रामक बैसब आ सूतब केओ नहि बुझैत अछि तनिहा केओ हुनका ककरो संग मैत्री वा झगड़ा-झंझटि करैत नहि देखलक, कहिओ ककरो लग बैसि सुख-दुखक गप्प करैत नहि देखलक । हँ, हबेलीमे जँ ककरहु-आङ साङ होइक तँ ओ दिनकेँ दिन आ रातिकेँ राति नहि बुझथि; निरन्तर परिचर्चा करैत रहथि । दुखिताहि कनिआँ होथि कि खबासिनी-बहिकिरनी, लाख मना कएलो पर ओ ओकर हाथ-पएर दबाइए देथि । घर हो कि बाहर, यदि केओ भूखल-पिआसल अछि तँ ओकरा बिना खोअओने अपने अन्न-जल नहि करथि । गामक दीन-दुखी, बूढ़ि, अनाथ आ असहाय विधवाक खोज-पुछारी ओ सदा करैत रहथि । जँ सुनितथि जे ककरो घरमे अन्न नहि छैक तँ मालिकसँ नुका कए, बेटी-पुतोहुसँ नुका कए सेर-दू सेर चाउर पठाए देथि । ककरहु मुट्ठी भरि मसुरीक दालि, ककरहु चुटकी भरि नोन, ककरहु कनिक तेल, ककरहु एक आध कदीमा, ककरहु किछु झिगुनी-रामझिगुनी आदि जखन जकरा खगता होइक पठबा देल करथि । गामक ककरो बेटी-पुतोहुकेँ कलेस उठैक तँ खर-खबासिनी पठा कए पुछारी करथि । किछु देथुन कि नहि देथुन, दीन-दुखीकेँ खोज-पुछारी कएने बड़ तोष होइत छलैक । सुनैत छी, मलिकाइनिक

प्रयासँ अनेक रिनिआ-दुखिआ रैअति मंगराजक ग्राससँ छूटल छल । मंगराज जँ ककरहु पर कोनो जोर-जबरदस्ती कएलनि आ ओ अपन बेटी-पुतोहुकेँ पठा कए मलिकाइनिक कानमे कोनहुना अपन व्यथा-कथा पहुँचबा देलक, तँ ओकर काज भेले बूझू । एहि लेल हुनका मंगराजसँ गारि-गंजन, सुनए पड़ैत छलनि आ चम्पा व्यंग्य-वचनमे कतेक की कहि दैत छलनि । मुदा तखन मलिकाइनि एकदम बहीर बनि जाइत छलीह । ककरो उपकार कए देला पर हुनका जेना कोटि निधि भेटि जाइत होनि । शिबू पंडित साधु भाषामे बजैत छथि, "मलिकाइनि दया, स्नेह, भक्ति, प्रभृति स्वर्गीय गुणक मूर्त्तिमती देवी छथि ।"

मुदा मलिकाइनिक एकटा विचित्र स्वभाव छलनि । हम अद्यावधि ई निर्णय नहि कए पओलहुँ अछि जे एकरा दोष कही कि गुण । अहाँ स्वयं बूझि लिअऽ । बात गढ़ि-गढ़ि नोन-तेल लगाए नाटकीय ढंगसँ कहबाक छटा हुनकामे नहि छलनि । आ बात ततेक मन्द स्वरेँ बाजथि जे बाहरक द्वारि पर आइ धरि हुनक बाजब केओ नहि सुनलक । हँ, जँ हबेलीमे मालिक कोनो खर-खबासिनी पर तमसाए मारि-पीटि वा गारि-फज्जति करए लागथि तँ ओ बिना किछु बुझने-सुझने बीचमे फानि जाथि, आ विविध युक्तक संग ओकर निर्दोषिता साबित करबाक नाना चेष्टा करए लागथि । एहन अवसर पर हुनका सत्य कि असत्य तकरो सुधि नहि रहैत छलनि । एहिसँ मालिकक कोप हुनके माथ पर उछलि जाइत छलनि । दोसराक खातिर विशेष कए कोनो अपराधीक रक्षाक हेतु फूसि भाखब आ दोसराक अपराधक कारणेँ स्वयं लांछित होएब कोनो बुद्धिमानीक काज नहि थिक । तथापि हुनक ई स्वभाव आइ धरि बदललनि नहि—स्वभावो नैव मुच्यते । केओ दोषी रहए वा निर्दोष, ककरहु दुखमे देखितहि ओ विचलित भए उठैत छलीह ।

एक बात आर । हबेलीक भीतर खबासिनी-खबासिनीक बीच अथवा कनिआँ-कनिआँक बीच झगड़ा-झंझट भेला पर ओ सदिखन दुर्बलक पक्ष लैत रहथि । ई तँ स्पष्टतः पक्षपात भेल । बूझि-सूझि उचित पक्षक समर्थन करब एक गुण थिक, मुदा हुनकामे एहि गुणक नितान्त अभाव छल ।

मलिकाइनिमे एकटा बड़का दोष छलनि । हँ, बड़का दोष कहए पड़त । एहि दोषक कारणेँ मालिक सदिखन अप्रसन्न रहैत छलाह । मलिकाइनिमे गृहिणीक बुद्धि लेश-मात्रो नहि छलनि । ओ ई नहि बुझैत छलीह जे टाका-पैसा केहन अनमोल पदार्थ थिक । आकांक्षा कहिओ ने छलनि, आ तेँ टाका कहिओ हुनक मुट्ठीमे नहि आएल । जँ दैव-योग सँ कहिओ दुअन्नी-चौअन्नी वा अठन्नी हुनकर हाथमे पड़िओ जाइत छलनि तँ धान उसिनबाक बासनक नीचा आ कि कन-कोराइक ढाकीक तरमे राखि दैत छलीह, अथवा चारक कोनो बातीमे खोंसि रखैत छलीह । ओहिसँ गामक कोनो धी-बेटी सासुर जाए लगैत छलि तँ ओकरा नूआ, कि एक जोड़ फुदनाबाला रेशमी जुट्टी, आकि एक मौनी लाइ-लड्डू कीनि दैत छलीह । से नहि भेल तँ ई पाइ ओहन लोकक भाग्यमे पड़ैत छल जकरा घरमे कोनो दिन बुतात नहि रहैक । एहन दानक गप्प सुनल जाइत अछि, कहिओ केओ देखलक नहि ।

जे हो, मलिकाइनिमे दोष रहनि वा गुण, आइ तँ घर-बाहर सभ केओ हुनका लेल कानि रहल अछि । नहि कानि रहल अछि केवल मुकुन्दा हरबाह । ओ चोटकल मुह बौने आँखि मुनने सुखाएल-टटाएल नम्बा टाँग पसारने देबालसँ औंठगल बैसल अछि । मुकुन्दाक तीनू कुलमे आर केओ छैक कि नहि, से केओ नहि जनैत अछि । ओकर उमेर, जाति, कुल, गुण, निवास आदिक प्रसंग पूछू नहि ? निर्धन हरबाहक परिचय कथी लए केओ पूछत । ओ अपने बजैत अछि, ओएह मलिकाइनिक जन्मक समय चमैनिकेँ बजएबा लेल गेल छल । नान्हि टा मलिकाइनि ओकरे कोरामे नैहरसँ सासुर आइलि छलीह । बौकाक बात बौकाक माइए बूझैत अछि । से केवल मुकुन्दे मलिकाइनिक मनक बात बुझैत छल । कोनो बात पर मलिकाइनिकेँ दुख होइनि तँ मुकुन्दा आवि टुकुर-टुकुर हुनकर मुह निहारए लगैत छल । ओकर मुह देखि मलिकाइनि अपन माथ झुका लैत छलीह । ओही टकटकीमे अथवा ओही मौन वक्तव्यमे सब कथूक समाधान भए जाइत छल । मलिकाइनि बिना ढाढ़स पओनहि चुप भए जाइत छलीह । मलिकाइनिक कनेको दुखी भेला पर जकर आँखिसँ झर-झर नोर खसए लगैत छल, सएह आइ हुनका मुइलि पड़लि देखि कनैत नहि अछि । किएक ? जकर संसारक समस्त सुख, समस्त शांति समस्त आशा, समस्त भरोस, समस्त सांत्वना, समस्त स्नेह एकहि संग समाप्त भए जाइत अछि से कनैत नहि अछि । ओ तँ रहि-रहि केवल फौं फौं निसाँस छोड़ैत अछि । लगैत अछि, एहि कारणेँ शुष्क हृदय फाटि नहि पबैत अछि ।

मंगराज सिरमामे बैसल मलिकाइनिक मुह अपलक निहारि रहल छथि । निश्चल स्तब्ध दूनू आँखिसँ नोर बहल जा रहल छनि । आइ धरि मंगराजक आँखिमे नोर केओ नहि देखने छल । ई घटना आइए देखल गेल । लोक बजैत अछि, नेह-छोह, माया-ममता, शील-संकोच, धर्म-कर्म आदि मंगराजक मनकेँ स्पर्शो नहि करैत छलनि । ओ एहि धारणा केँ नीक जकाँ गहि लेने छलाह जे 'टकाएव मनुष्यानां चतुवर्गफलप्रदा ।' टके हुनक ध्यान छल, टके हुनक ज्ञान । मौन भए बैसि सोचैत तँ हुनका कतेको बेर देखल गेल अछि, मुदा एहन समयमे हुनक आँखिसँ एक प्रकारक ज्योति निःसृत होइत रहैत अछि । जेना जलनिधि-बात उत्ताल तरंग-माला सागर-तटमे लीन भए जाइत अछि तहिना हृदयगत नाना आशा-चिन्ताक तरंग हुनकर भ्रूलताक उपर रेखाक आकार धारण कए लीन भए-भए जाइत अछि । परन्तु आजुक भावना किछु आन रूपक अछि । आँखि आधा मुनाएल, स्पन्दनशून्य, अश्रुपूरित । तँ की मंगराज मलिकाइनिक लेल कानि रहल छथि ? प्रिय वस्तुक वियोग मनुष्यक लेल असह्य होइत अछि । तँ की मंगराजो कहिओ पवित्र दाम्पत्य-प्रेमक स्वर्गीय माधुर्यक अनुभव कएने छलाह ? नहि, तकर आभास तँ कतहु नहि भेटल अछि । मलिकाइनिक संग मधुर भावक गप्प करैत हुनका केओ कहिओ नहि देखल । तखन आइ एतेक व्याकुल किएक छथि ?

से जे हो, सहज विश्वासक बल पर हमरा आइ बुझाए रहल अहि जे ओ अबस्से

मलिकाइनिक बिछोहक यंत्रणाक अनुभव कए रहल छथि । जकरा अहाँ अग्निक समक्ष वेदी पर हाथ धए अर्द्धांगिनीक रूपमे ग्रहण कएने छी से नीक हो कि बेजाए, ओकरा प्रति माया तँ होएबे करत । एहि नैसर्गिक मानव धर्मक अतिक्रमण करब सोझ नहि छैक । जे स्त्री धर्म-कर्ममे सहधर्मिणी, प्राणाधिक प्रिय संतानक जननी, जे स्त्री सुख-दुखक एकमात्र सहभागिनी, जे स्त्री रोगमे शुश्रूषाकारिणी, विपदमे मंत्रदात्री, आ शरीरक रक्षामे धात्री होइत अछि,—अहाँ यदि नितान्त पाषाण होइ, ओकर गुण-गरिमाकेँ अनुभव करबाक शक्तिक अहाँमे घोर अभाव हो तँ-तकरा जीवनकालमे अहाँ सिनेह कएने होइ वा नहि, परंच ओकर मृत्यूपरान्त विच्छेदक यंत्रणा अवश्य भोगए पड़ैत छैक । आ जे व्यक्ति एको बेर साध्वी, सच्चरित्रा, पतिपरायणा धार्मिक पत्नीक गुण-गरिमाकेँ हृदयसँ अनुभव कए लेने अछि तकरा ओकर विच्छेद-यंत्रणा केहन असह्य होएतैक तकर वर्णन करबामे समर्थ भाषाक सृष्टि सम्प्रति नहि भेल अछि । तकरा तँ केवल पत्नी-वियोग-विधुर व्यक्तिए बूझि सकैत अछि । साँप जकरा डँसैत अछि सएह व्यक्ति विषक यंत्रणा जनैत अछि, कहिकेँ बुझाओल नहि जा सकैत अछि । सएह व्यक्ति जनैत अछि जे समस्त शोणितवाहिनी शिरा छिन्न-भिन्न भेल जा रहल अछि, हत्पिंड शुष्क भेल जा रहल अछि । ई सएह व्यक्ति बूझैत अछि जे जगतक समस्त सुन्दर पदार्थक सौन्दर्य, समस्त माधुर्यक मधुरिमा, समस्त सुमनक सुगन्धि, समस्त संगीतक तान-लहरी, समस्त पवित्रता चिताग्निमे छाउर भए जाइत अछि । संक्षेपमे कहि सकैत छी जे ओ व्यक्ति अपनाकेँ मृत लोकक बीच जीवित आ जीवित लोकक बीच मृत बूझैत अछि ।

मंगराजक जीवनमे दू टा धार प्रवाहित भेल छल । एकटा छल उत्ताल तरंगमयी सर्प-कुंभीरसंकुला, कूलप्लाविनी चर्मण्वती, आ दोसर छल अन्तस्स्रोता पूत-सलिला कूलपावनी फल्गु । सम्भवत: मंगराज आब बूझि गेलाह अछि जे फल्गुक अन्तिम प्रस्थान भए गेल । मद्यपायीक समक्ष जँ एक पात्रमे पानि आ एक पात्रमे सुरा राखल हो तँ ओ अबस्से सुरापात्रक विशेष आदर करत । जखन जलपात्रक नितान्त अभाव भए जाएत तखनहि ओकरा ई बुझबामे अओतैक जे सुरा उन्मादकारिणी भलहि हो, जल तँ जीवन थिक ।

मंगराजक दशा देखि हमरा अनुमान भए गेल जे हुनकर हृदयमे दुख आ अनुताप दूनू वर्तमान छनि । दुखमे लोक कनैत अछि, अनुतापमे कनैत नहि अछि । दुख हृदयक प्रज्वलित अग्निपिण्ड थिक, अनुताप तुषानल थिक । तँ की हुनका आब एहि बातक पश्चात्ताप भए रहल छनि जे हुनक अपन दुष्कृतिक संग, अपन निष्क्रियताक संग मलिकाइनिक मृत्युक निकट सम्पर्क रहल छैक ? हुनक हाथसँ संख्यातीत दुष्कृति कएना गेल, तैओ हुनका केओ कहिओ कहाँ पछताइत देखलकनि ? मुदा के कहत ? क्षण-क्षण परिवर्तनशील मानव-स्वभावकेँ के बूझि पाओत ? विधाता तँ जगतक समस्त नर-नारीक सृजन एके माटिसँ कएल अछि । जेना सभ लोकक शरीर शोणित, मांस, अस्थि, मलमूत्र आदिसँ गठित अछि, तहिना सभ लोकक चित्त सेहो समान रूपेँ दया, माया, स्नेह, ममता, हिंसा, द्वेष, निष्ठुरता आदि

वृत्तिसँ निर्मित अछि । ई समस्त वृत्ति यदि ठीकेठाक समानभावसँ कार्यरत रहए, तँ मनुष्य मनुष्य रहैत अछि । आ जखन कोनो वृत्ति प्रबल भए सीमाक उल्लंघन करैत आन वृत्तिक उपर अपन आधिपत्यक विस्तार करैत अछि तँ मनुष्यक मनुष्यता लुप्त भए जाइत अछि। ओहि समयमे ओ देवता बनि जाइछ वा राक्षस । अर्थात् लोकक मानस स्वर्गीय आ नारकीय दू कारक वृत्तिसँ गठित अछि । स्वर्गीय वृत्ति मनुष्यकेँ देवरूपमे परिणत कए दैत अछि तँ नारकीय वृत्ति ओकरा राक्षस बना दैत अछि । यदि अहाँ ई सुनी जे केओ दयाभिभूत भए कोनो दोसर व्यक्तिक जीवन-रक्षाक निमित्त अपन जीवनक विसर्जन कए देलक, तँ की अहाँ ओकरा देवता नहि कहबैक ? आ जँ अहाँ सुनब जे केओ व्यक्ति कनक वा चानीक गहनाक हेतु शिशुक हत्या कएलक अछि तँ अहाँ बिना देखनहि पुराणमे वर्णित राक्षससँ ओकर मिलान कए लेब। हँ, तखन ई उदाहरण विरल होइतहुँ एहन नहि अछि जे यत्र-तत्र देखल जाए । मनुष्य अनन्त कालसँ मनुष्य अछि आ रहत । मनुष्यक जन्मक कारण आ मनक उपादान समान रहितहुँ ओकर वाह्य प्रकृति सदा फूट-फूट रहल अछि आ रहत । कोटि-कोटि मनुष्यक बीचोमे एक व्यक्तिक मुह-कान दोसराक रूपक संग कहिओ एनमेन ओहिना नहि मिलैत अछि । मनक प्रकृति सेहो ओहिना अछि । कोनो चित्तवृत्ति ककरो-ककरोमे प्रबल होइत अछि तँ ककरोमे दुर्बल । ककरो-ककरोमे कोनो चित्तवृति सुतले रहि जाइत अछि । एहनो देखल गेल अछि जे समय-विशेष पर घटना-चक्रक परिवर्तनसँ समस्त सुप्त वृत्ति जागि उठैत अछि । के जनैत छल जे तड़िपिब्बा आ दुराचारी जगाइ-मथाइ परम वैष्णव भए जएताह ? आ ईसा-विद्वेषी अत्याचारी पाल(सन्त पाल) सेहो एक दिन पूजनीय तथा महर्षिक पद पाबि जएताह ? आ गाधिनन्दन राजर्षि विश्वामित्रक सहस्र-सहस्र युगव्यापी तपस्या तथा तपोदिक ज्वलंत ब्रह्मनिष्ठा मेनकाक निमेष मात्रक अपांग-दृष्टिसँ भ्रष्ट भए जाएत ? विशेष साकांक्ष भए देखब तँ एहि प्रकारक आकस्मिक परिवर्त्तनक मूल कारण घटना एवं संसर्ग बुझाएत । भगवान् शंकराचार्यक महावाक्य सभकेँ स्मरण रखबाक चाही:

क्षणमिह सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका ।

सनातन ब्राह्म धर्मक इएह उपदेश थिक जे अहाँ पापसँ घृणा करू, पापी सँ नहि ।

जाहि वृत्तिक वश भए मनुष्य पछताइत अछि, सएह वृत्ति आइ मंगराजक अन्दर प्रबल नहि भए उठल से के कहि सकैत अछि ? हम अन्तर्यामी नहि छी; तखन मंगराजक मनक भाव कोना बूझब ? बुझितहुँ रहैत, तैओ बखान कए अहाँ कँ ई बात बुझा देबाक शक्ति हमरा मे कहाँ अछि, जे दुख आ अनुताप कोन प्रकारेँ हुनकर मनकेँ एकहि संग आक्रान्त कए लेलक अछि, हुनक कंठकेँ अवरुद्ध कए देलक अछि तथा हुनक वाह्य चेतनाकेँ शून्य बना देलक अछि । जेना गोङबाजि नहि सकबाक कारणेँ हाथ-पाएर हिला-हिला अपन मनक भाव प्रकट करबाक चेष्टा करैत अछि, तहिना हम ईसभ एतेक राश अंट-संट बाजि गेलहुँ ।

हे पाठकमहोदय, क्षमा करब । प्रसङ्ग पर आउ । देव-दुन्दुभी अहिबातक नगाड़ा बाजि उठल । शुभ कौड़ी बीछि-बीछि मंगल-पेटिकामे तहिआ कए रखबा लेल आतुर गामक सुलक्षणा सधबासभ बाट दिस टकटकी लगओने अपन-अपन देहरि पर ठाढ़ि छथि । आब इति श्री करैत छी ।

हरि हरि बोल रे मन, हरि हरि बोल ।

उन्नैसम परिच्छेद

पुलिसक जाँच

गोविन्दपुरक राति जेना प्रतिदिन बीतैत अछि, ठीक तहिना आइओ बीति गेल किन्तु दिनकरक दर्शन नहि भेल । मेघ झहर-झहर कए रहल छल । 'भोरक मेघ नहि टिकए, भोरक पाहुन नहि टिकए ।' मेघ फाटल । कमठान समाप्त भए गेल अछि । ककरहु आब खेत पर जएबाक नहि छैक । केओ ओसारा पर बैसल मसाला कूटि रहल अछि तँ केओ गोठुल्ला बथान साफ कए रहल अछि । केओ-केओ माथ पर झाँपी (छतरी) धएने हाथमे डोरी आ एक हाँसू लेने बीड़ीक दम पर दम सोटैत कान्ह पर जाला रखने घास काटए चलल अछि । केओ चार पर चड़ि कुम्हरक लत्तीक मूड़ी सोझरा रहल अछि । घरमे नोन नहि होएबाक बात सुनि आगि तपैत हरि पुहाण विविध-युक्ति-प्रदर्शनपूर्वक अपन बहुक अपरिमित व्ययशीलताकेँ प्रमाणित कए रहल अछि । बहुड़िआसभ अन्हरोखे पछुआड़ सँ निवृत्त भए पोखरि चललि छथि । ताँती-टोल करघाक 'झस-दुम, झस-दुम' क शब्दसँ मुखर अछि । ताँतिनि ओसारा पर बैसि खड़र-खड़र करैत लटाइ नचा रहलि अछि ।

बेर अनुमानतः पहर दिनसँ उपर भेल होएतैक । शाम साहुक हरबाह गोपाल सामल माथ पर झाँपी आ कान्ह पर कोदारि लेने निहुड़ि-निहुड़ि खेतक आरि बान्हि रहल छल । बाट कातक खेत रहैक । मालिकक हरबाह घुसुरिया गोबरा जेनाक घर दिस झटकारने जा रहल छल कि गोपलिथा पर ओकर आँखि पड़लैक । हाथ उठाकए संकेत कए लग बजओलक । कहलैक, "हम एक बड़ भारी काजसँ जा रहल छी । बड़ गुप्त बात छैक । तोरा पर विश्वास अछि तेँ सोर पाड़ि कहि रहल छिऔक ।"ओकर कानमे चुपेचाप किछु कहि बाजल, "बुझलही ? खबरदार ! ई बात आर ककरो कानमे नहि पड़बाक चाही । मालिकक मनाही छनि ।" घुसुरियाक ओतएसँ जाइत-जाइत, कनेक दूर पर बाटेमे मकर जेना पाण भेटि गेलैक । ओकरो कानमे चुपेचाप किछु-किछु कहि, गुप्त रखबाक उपदेश दैत आगाँ बढ़ल । तकर बाद दनेइ साहु, बिनोदिया, नटबरिया, भीमाक माए आ आर कतेको लोक भेटलैक, आ ओकरहुसभकेँ ओही प्रकारेँ चुपचाप किछु कहि ओहिना गोपनीयताक उपदेश देलक ।

गोपलिया आब काज की करत, सोझे साहु लग छौड़ल । हरि साहु शाम साहुकेँ कहलक, हरिया बरियाकेँ कहलक, जेनाक माए शामक माएकेँ कहलक, श्रीमती कनिआ-

बौआसिनिकेँ कहलक; सौंसे गाममे काना-कानी चलैत रहल । केओ बाजल, ''जमादार तुरन्ते पहुँचि जाएत ।'' आन केओ ओकर बात कटैत बाजल, ''नहि हओ ! हत्याक मामिला थिकैक, दरोगा स्वयं घोड़ा चढ़ि दौड़त ।'' किन्तु एकटा अमिज्ञ लोक बाजल, ''ई की हमर-तोहर घरक गप्प थिकैक । देखबह, कटकसँ स्वयं कम्पनी पलटन लए पहुँचि जाएत । गाममे धर-पकड़ मचत-एहिमे ककरहु सन्देह नहि छैक ।'' पलभरि मे समूचा गाम निस्तब्ध भए गेल । कनिआँसभ कौआ डूब दए आँगन पड़ाइलि । नूआ छाड़बाक अवसर नहि भेलैक । नूआ लदर-फदर करैत छैक, पाएरक लगसँ पानि टघरल जाइत छैक । घैल जे हड़बड़ीमे पूरा भराएल नहि देश-हितैषी नटकिया नेता जकाँ छल-छल निनादमय भाषण करैत जा रहल अछि । बेंतबाला गुरूजीक अकस्मात् अंतर्धान भए जएबाक कारणेँ चटिसारक चटिआ सभ बाटमे भारी हल्ला मचबैत दौड़-धूप कए रहल अछि । खुनिया आसमीकेँ बान्हि लए जा रहल पुलिस जकाँ एकटा छँटगर चटिआ एक छोट बालककेँ पकड़ि लेने जा रहल अछि ।

घुसुरिआ आबिकए मालिककेँ समाद देलक जे गोबरा जेना गाम पर नहि अछि । कल्हुकी रातिसँ घर नहि आएल अछि । मालिक पहिने हरबाहकेँ पठओलनि आ फेर अपने ताँती टोलक घर-घर घूमि अएलाह, मुदा कतहु कोनो लोकसँ भेट नहि भेलनि । जकरे ओहिठाम जाधि बिलैआ लागल देखथि । घर शून्य भेटनि । मंगराज नितान्त आकुल-व्याकुल आ विखिन्न मनसँ भीतरसँ बाहर आ बाहरसँ भीतर कए रहल छथि । ककरोसँ भेट नहि भए सकलाक कारणेँ निश्चय नहि कए पबैत छथि जे की करी की नहि । घुसुरिया जेना हरबाही पेना लेने बाड़ीक छहर-देबारी बाला अँगन इसँ कुकूर रोमि रहल अछि । एक गिदड़ केओलाक झाँझमे वैसि सतृष्ण नयने ओलती दिस टुकुर-टुकुर तकैत चुपचाप बैसल अछि ।

बेर दू पहरसँ उपर भेल । गोविन्दपुर गामक पुबारि कातमे एकटा टाँगन घोड़ा पर एकटा विशालकाय सबार देखल गेल । सबारक बड़का-बड़का दाढ़ी ओकर छातीकेँ झपने छलैक । ओ देहमे छओ कलीक ढील आस्तीन बाला चपकन पहिरने छल । माथ पर जामदानी कपड़ाक टेढ़का टोपी, आ पाएरमे ढील खालता पएजामा छलैक । घोड़ा टिक-टिक करैत नहु-नहु कदमताल चलि रहल छल । आगू-पाछू पाँच गोट लाठीधारी चौकीदार तलमलाइत दौड़ल जाए रहल अछि । सभक आगू गोबरा चेना कान्ह पर लाठी लेने दौड़ि रहल अछि । ''ओ मंगराजक दरबाजाक सामने पाछाँ मुहेँ ठाढ़ भए गेल । सबार पुछलकैक—''इएत घर ने ?'' गोबरा जेना हाथ जोड़ि बाजल, ''हँ, खोदा बन्द।'' सबार घोड़ासँ उतरल आ 'बिसमिल्ला' कहि एकटा दीर्घ साँस छोड़लक ।

एक घड़ी पछाति बाट पर एकटा आओर घोड़सबार मूर्ति देखाएल । घोड़ा लगैत अछि जेना घासक टूटल टट्टू रहए । ओकर देहक पाँजरक हड्डीक देखार होएब ओकर वयः श्रेष्ठताक प्रमाण थिकैक । पछुलका दूनू टाँग घसाठक ठेला आ घाओसँ भरल अछि । आँखि

धसि गेलैक अछि आ बड़का-बड़का दू टा कोइआ बाहर आवि गेलैक अछि । पीठ पर नोचाएल जमड़ी बैसल छैक । तकरा उपर लाल बनातक चारजामा गद्दी अछि । परन्तु सबार भीमकाय अछि । पहिरना सेहो बड़का लोक -सन छैक । मणियाबंदी चरिपढ़िआ धोती, देहमे चौबंदी मिरजइ, आ माथ पर बीचो-बीच सीअल छओपतिया फूलक पाढ़िबला रेशमी डोपटाक मुरेठा अछि । घोड़ाक पाछू एक चौकीदार कान्ह पर बाँसक लाठी, दहिना हाथमे छड़ी लेने घोड़ाकेँ मुहसँ टिटकारी दैत चलि रहल अछि । सहीस, एक पाण युवक, पगहा धएने आगू-आगू चलि रहल अछि । पगहा तनलासँ घोड़ा आगू दिस गरदनि उठओने बड़ कष्ट सँ मन्द-मन्द चलि रहल अछि । पहिल सबार जेकाँ इहो सबार मंगराजक दोआरि पर आबि ठमकि गेल । आ एक आदमीक कान्ह पर दूनू हाथक भार दैत उतरए लागल, मुदा कान्हक आस रहितहुँ ठेहुन भरेँ खसि पड़ल आ लगले उठि-पुठि कए आस देनिहार व्यक्तिक गाल पर एक थापड़ लगओलक, अर्थात् दर्शक ई बूझथि जे खसबाक कारण थिक ओ आदमी; नहि तँ एहन पक्का सबार कतहु एना खसए । सबारक हेठ होइतहि सहीस जा घोड़ाकेँ पकड़ए ता ओ तीन-चारि बेर माटि पर ओंघरा गेल-ठीक ओहिना, जेना भक्त लोकनि जगन्नाथ महाप्रभुक रथक आगू-आगू श्रद्धा-बालुका पर ओंघड़ाइत छथि । तीन-चीरि बेर औंघड़ा लेलाक बाद घोड़ा उठिकेँ ठाढ़ भेल । जा घोड़ा औंघड़ाइत.... रहल ता सबार सेहो दाँत कीचि-कीचि अपन देहक ठाम-कुठामक दिनाए कुड़िअबैत रहल ।

शेख एनायत हुसैनक गणना कटक जिलाक एक नम्बरक दरोगा सभ मे अछि । फारसी नीक जकाँ जनैत छथि । उड़िया नालायक इल्म थिक । तेँ ओ उड़िया पढ़ैत-लिखैत नहि छथि । सरकारी कागत-पत्तरमे फारसिएमे दस्तखत करैत छथि । एही कौशलक बलेँ केंदरापाड़ाक एंहि एके थानामे ई बारह वर्षसँ डटल छथि । एतेक दिनमे केवल परुका साल किछु गोल-माल सुनल गेल छल । सदर कचहरीक सरिश्तेदार आ पेशकार केँ फरमाइशी पवनी पठएबामे किछु विलम्ब भए गेल छलनि, तेँ बदलीक गप्प उड़ए लागल छल । मुंशी चक्रधर दास सेहो एक दक्ष पुलिस अमला छथि । चौकीदारसभसँ सदिखन ई गप्प सुनल जाइत अछि जे मजिस्टर साहेब हिनक रिपोर्ट पढ़ि-पढ़ि बड़ प्रसन्न होइत छथि ।

मंगराजक कचहरीक बाहरी अँगनइमे पुलिसक कचहरी लागल अछि । स्वयं दरोगा शेख एनायत हुसैन एक सतरंजी पर दाढ़ी फलकओने बैसल छथि । आगू दहिना कात मुंशी चक्रधर दास मोथीक सौंफ पर बिछाओल घोड़ाक झूल पर बैसल छथि । आगू करीब बीस हाथ पर सिपाही गुलाम कादिर आ हरिसिंह तथा पाँच गोट चौकीदार ठाढ़ अछि । रामचन्द्र मंगराज पकड़ि लेल गेलाह अछि आ हुनक समक्ष आँखि खसौने बैसल छथि । मंगराजक घरक चारू कात पहरा छनि । बाहरक लोककेँ भीतर आ भीतरक लोककेँ बाहर जएबाक हुकुम नहि छैक । पहिने स्त्रीगणकेँ हटाए, एक कात कए देल गेल, तखन खाना तलाशी भेल । धानक बखारीमे लोहाक गज भोंकि-भोंकि जाँचल गेल । भातक बरतन देखल गेल । दू-चारि ठाम माटि खूनल गेल । दू-चारि ठाम चार उधेसल गेल । किन्तु कतहुसँ कोनो

संदेहास्पद वस्तु बरामद नहि भेल । हँ, मंगराजक कोठलीमे बाँसक तीन चारि हाथ लाम आ मूठि भरि मोट एक लाटी टा भेटलैक । बाड़ी दिसक पछुआड़क ओलती तर मोथीक पुरान पटिआमे लेपटाएल एकटा स्त्रीक लास पड़ल छलैक । ओहिठामसँ उठाए ओ लास कोनटाक देहरि पर आनल गेल । गोबरा जेना चिन्हओलक, शव सारिया ताँतिनिक थिक । दरोगा दाढ़ी पर हाथ फेरैत बजलाह, ''की रामचन्द्र मंगराज ? आब की विचार अछि ? रतनपुरक डोमक मामिला मोन अछि की नहि ?'' मुंशी बाजल, ''मंगराज प्रायः मानि लेने छलाह जे एके माघेँ जाड़ जाइत अछि ।'' गुप्त रूपेँ ताकाहेरी कएला पर हमरा ई पता लागल अछि जे रतनपुरक डोमकेँ जहल पठएबाक बदलामे मंगराज दरोगाकेँ एक हजार टाका घूस गछने छलाह, तकरा पूरा नहि कएल । ठकि-फुसिआ कए टारि देने छलाह । एखन दरोगा ओएह बात मोन पाड़ि रहल छलथिन ।

मामिलाक जाँच-पड़ताल शुरू भेल । मुंशी चक्रधर दास अपन विशाल वस्ता खोलि सिरिश्ता पसारि देल । सामने चिनिआ माटिक मोसिदानी आनि राखल गेल । मोसिदानीक कान्हमे डोरी बान्हल छल आ मुहमे कोढ़िलाक मुनना लागल छलैक । मुंशी सीसोक मूठि बाला चक्कूसँ पहाड़ी लत्तीक कलम बनाओल आ कागतक एक टुकड़ी पर ओकर परीक्षा कएल— श्री गुरूदेव उद्धार करताह । श्री जगन्नाथ महाप्रभुक चरणे शरण । श्री बलदेवजीक चरणे शरण । श्री लिंगराज महाप्रभुक चरणे शरण, इत्यादि देवी-देवताक नाम लिखि मुंशीजी कचहरीक काजमे हाथ लगाओल ।

मुद्दइ - सरकार कम्पनी बहादुर ।

मुद्दालह - रामचन्द्र मंगराज साकिन गोविन्दपुर जि. कटक ।

मुकदमा - सारिया नामक ताँतिनिक हत्या, ओकर घरसँ नेत नामक एक गाए तथा अन्यान्य वस्तुक लूटि ।

खाना तलाशी भेल । सिपाही आ चौकीदार पूरा गामक चक्कर काटि ई खबरि अनलक जे गाममे एकोटा पुरुषक पता नहि अछि । केबाड़क दोगसँ स्त्रीगण जे जबाब देलनि, ताहिसँ बूझि पड़ैत अछि जे एक पण आदमी कुटमैता गेल अछि, चारि पण माल-जाल तकबा लेल गेल अछि, दू पण जगन्नाथक दर्शनमे गेल छथि । दू पण दुखित अछि । केवल दू पण नीक लोक, जे अनगौआँ गबाह थिकाह, अपन कर्त्तव्य बूझि स्वयं हाजिर छथि । गामक लोक जे हाजिर नहि भेल ताहि पर दरोगाकेँ बड़ तामस भेलनि आ सिपाहीकेँ उल्लू, गदहा, बेकूफ, नालायक आ किदन-कहाँदन कहए लगलाह । गाम भरिमे कुहराम मचि गेल । पटापट गारि, फटाफट केबाड़ तोड़नाइ चलए लागल । सन्निपातक रोगी गुदड़ी ओढ़ि यमदूतकेँ एक-दू दिन तँ टरका सकैत अछि, मुदा पुलिसकेँ फाँकी के देत ? गामक पुरुषपात घर छाड़ि सोझे पड़ाए गेल । दू दिन धरि बतीस गबाहक जुआनी बयान टीपल जाइत रहल । प्रथमे दिन दू चौकीदारक पहरामे मुरदा जाँच लेल कटक चलान कएल गेल । मुंशीजी कएदी द्वारा निर्मित अढ़ाए जिस्ता कोकटी कागतमे सभटा जुबानी बयान लिखि गेलाह ।

अपनेलोकनिक जनतव हेतु ओहिमे सँ किछु गबाहक बयान एहिठाम प्रस्तुत कए रहल छी ।

१नम्बर गावाह, तरफ सरकार कंपनी वहादुर—नाम गोबरा जेना । बापक नाम गुदिया जेना, मतोफा । जाति पाण । बएस ४५ वर्ष । पेशा गामक चौकीदारी । साकिन गोविन्दपुर । परगना बालूबिशा, जिला कटक ।

''हम मौजे मजकूरक चौकीदार छी । भरि राति ठाढ़ भए गाममे पहरा दैत छी । कल्हुकी राति पहरा दैत रही । आधा राति भेल होएत कि सुनल सारिया ताँतिनि मंगराजक बाड़ीक पछुआड़मे चिचिआ रहलि छलि—'मारि देलक, मारि देलक ।' लगैत छल जेना बाँसक लाठीसँ केओ ओकरा डेंगा रहल होइक ।''

पुछला पर उत्तर देलक—''नहि, ओहि काल हम मंगराजकेँ नहि देखल ।'' फेर बाजल, ''हँ-हँ, हुनक बाजब सुनने छलहुँ । ई गाए सारियाक थिकैक । एकर नाम थिकैक नेत । प्राय: एक मासँ मंगराजक आँगनमे बान्हल देखल जाइत अछि । एतए कोना आएल से हमरा बूझल नहि अछि ।'' फेर बाजल, ''मंगराज बान्हि अनने छथि ।''

ई औंठा छाप गोबरा जेनाक थिक से सही ।

२ नम्बर गवाह-सना रणा प्रथमहि हाजिर भए कहलक, ''हमरा कोनो बात बूझल नहि अछि ।'' दरोगाजी बड़ तमसएलाह आ आदेश देल जे एकरा चटिसाल घुमा आनल जाए । आध घंटाक वाद सिपाहीक सुरक्षामे उधसल केश, धूरालागल देह; हाथ आ गाल पर मारिक चेन्हक संग फेर हाजिर भेल आ बाजल, ''हजूर, हम सभ किछु सत-सत कहव । हमर नाम थिक सना रणा । बापक नाम बना रणा । जाति माली । हएस तीस। पेशा गामक देवीक पूजा आ खेती । सा. गोविन्दपुर । पं-बालूकुस । जि. कटक ।

''हम सारियाकेँ चिन्हैत तँ छी मुदा नहि जनैत छी जे ओ कोना मुइल । बरख-डेढ़ बरख भेल होएतैक; एक दिन भिनसरमे मंगराज एक हरबाह द्वारा हमरा बजबौलनि । फूलक गाछक अढ़मे लए जा कए हमरा कहलनि, देख सना, तोरा हम कहैत छिऔक, हमर तोँ एक टा काज कए दे । हम जे कहैत छिऔक से काज जँ तोँ कए देबेँ, तँ हम तोरा ओहासी बाला नीक खेत जोतबा लेल देबौक । आ ताहि संग दू टा टाका सेहो देबौक खाजा-मधुर खएबा लेल । हम पुछलिअनि—की करए पड़त ? मालिक कहलनि, ई जे भगिया ताँती अछि ने ओकर वहु सारिया बाँझ निपुत्तरि अछि । बूढ़ी मंगलाक आगू सभ दिन बेटा लेल प्रार्थना करैत अछि । तोँ जा कए कहि अबहीक जे भगवती सपन देल अछि जे तोँ पूजा दे, भगवती तोरासँ साक्षात् गप्प करतीह आ तोरा बेटा देथुन । हम जेना कहलनि तहिना दू-तीन बेर जाए भगिया आ सारियाकेँ बुझौलिऐक । ओ ध्यानसँ सुनलक, मुदा उत्तर नहि देलक । एक दिन भगिया तेसर पहरमे अपना दोआरि पर बजा कए लए गेल आ पुछलक जे पूजा होएत, कोन-कोन सामग्री चाही, कतेक खर्च पड़त । हम ओकरा सभ किछु बुझा देलिऐक । पूजाक सामग्री किनबाक हेतु हम ओकरासँ दस आना दू पाइ लए लेलहुँ । एक

दिन शनि कैं साँझ पड़ला पर हम, मंगराज, जगा भंडारी आ कोदारि लेने एक हरबाह ई चारि गोटे मंगलाक समीप पहुँचलहुँ । मंगराज जेना कहलनि, भगवतीक थानक पाछूमे एक पैघ-सन खाधि खूनल गेल । खाधिमे जगा भंडारी नुकाएल । खाधिक मुह खढ़-पातसँ झाँपि देल गेल । भोरे सारिया आ भगियाकैं बरत करए कहि आएल छलिऐक । दूनू गोटे भरि दिन निराहार रहल । निशीभाग रातिमे जखन सगर गाम सूति रहल तँ हम ओकरा बजा अनलिऐक । ओ पूजा कएलक, भोग लगओलक, आ अनेक प्रकारसँ भगवतीक बिनती कएलक । हमर कहने भगिया आ सारिया गरदनिमे वस्त्र लपेटि माथ झुकओलक आ भगवतीक आगाँ साष्टांग पड़ि रहल । हमहू बिनती करैत रहलहुँ, हे मा मंगले, सारियाकैं अपने मुहे वर दिऔक, ओ अहाँक सेवा बहुत दिनसँ करैत आबि रहलि अछि । हे देवी अहाँ कतेकोकैं वरदान देलिऐक अछि, एकरहु दिऔक । खाधिमे सँ जगा उत्तर देलक— 'सारिया, तोँ बहुत दिनसँ हमर आराधना कए रहलि छेँ । प्रतिदिन नहा कए घुरैत काल प्रणाम करैत जाइत छेँ, आँजुर भरि जल चढ़ा जाइत छेँ । ओ जल हमरा भेटैत अछि । आइ हम तोरा वरदान दैत छिऔक, तोरा तीन टा बेटा होएतौक, तोरा बहुत रासि टाका भेटतौक, सोन भेटतौक; तोँ हमर मन्दिर बना दे । काल्हि अन्हरोखे दूनू प्राणी, ताँती टोलसँ अभुक्त अबिहेँ, आ जतए हमर पूजाक मन्दार फूल पड़ल भेटौक ततए धरती खुनिहेँ । जे किछु भेटौक तकरा घर लए जा कए रखिहेँ आ नित पूजा करिहेँ । तोरा ओएह वस्तु तोड़ाक तोड़ा दैत रहबौक । आ यदि हमर आज्ञा नहि मानलेँ तँ भगियाक मूड़ी मचोड़ि देबैक । से सुनितहि सारिया-भगिया दूनू गोटे कापए लागल । बकार नहि फूटैत छलैक । पूजा समाप्त कए हम किछु प्रसाद देलिऐक, आ गाम पर पहुँचा देलिऐक । ओकरा देलाक बाद बचल सभटा प्रसाद हम अपनहि लए लेलहुँ । ओकरा घर पहुँचा कए घुरलहुँ, तँ जगा हँसैत खाधिसँ बाहर भेल । फेर हम दूनू गोटे गाछ लग गेलहुँ आ मालिकक देल एक मोहर गाड़ि ओहि पर एकटा मन्दार फूल राखि देलिऐक, आ गाम पर घुरि अएलहुँ । ओकर दोसरा दिन हम भगिया गाम पर गेलहुँ । हमरा देखि दूनू गोटे हिचुकैत कहए लागल—''आब हम मन्दिर कोना बनाउ ? कोनो बाट देखा दिअऽ ने ।'' हमरे बातपर ओ अपन छओ बिगहा आठ कट्ठा जमीन मंगराजक ओहिठाम भरना राखि कर्ज लेलक । सरकारक जमादार आबि भगियाक घर उजाड़ि गेल । जमादारक समक्ष मंगराजक हरबाह घर उजाड़लक । ओकर समस्त वस्तुजात ओ उठा कए लए गेल । घर उजड़लाक दिनसँ भगिया बताह भए गाम-गाम बौआइत रहल । सात-आठ दिन होइत छैक, हम सारियाकैं देखने छलिऐक, मंगराजक दोआरि पर कनैत ।

प्रश्न कएला पर उत्तर देलक, ''ई तँ नहि बूझल अछि जे मंगराज भगियाकैं कतेक टाका देलनि मुदा खेतक रजिस्टरीक हेतु कटक लए जएबा काल सारियाक हेतु ओ एक नूआ अनने छलाह । मन्दिर बनबएबा लेल मंगराज गोड़ बीसेक गाड़ी पाथर खसबओने छलाह । ओहि दिन मंगराज हमरा चारि आना देने छलाह । आर किछु नहि, हमरा आओर किछु नहि बूझल अछि ।

(दस्तखत-सना रणा)

३ नम्बर गवाह-नाम मरुआ । बापक नाम लक्ष्मण तिहाड़ी, जाति ब्राह्मण, अवस्था ज्ञात नहि । सा. हाल गोविन्दपुर । जि. कटक ।

जिरह कएला पर बाजलि, ''हमरा बूझल नहि अछि जे सारिया कोन व्याधिसँ मुइल । आइ आठ दिन भेलैक, ओ हमर बाड़ीक आगाँ बैसलि छलि । ओ दिन-राति बड़बड़ाइत रहए—''हमर छओ बिगहा आठ कट्ठा, हमर छओ बिगहा आठ कट्ठा, हमर नेत, हमर नेत ।'' आ बड़बड़ाइत-बड़बड़ाइत चिचिआ उठए, छाती फाड़ि-फाड़ि बपहारि काटए लागए । मलिकाइनिकेँ देखितहिँ हुनक पाएर पर ओंघड़ाए कानए लागए । मलिकाइनि सेहो कानए लागथि । चम्पा ओकरा तीन बेर बाढ़नि झाँटि बैलओलक, तैओ ओ पड़ाए नहि । आठ दिनसँ ओ किछु खएने पीने नहि छलि । मलिकाइनि अपन थारीक भात केराक पात पर ओकरा लग राखि आबथि, तैओ ओ खाए नहि ; कुकूर कैं नहि तँ गाए कैं खोआ देअए । कहिओ-कहिओ मलिकाइनि लग मे बैसाए बोल भरोस देथिन तँ कओर दू कओर खा लेअए । मलिकाइनि अपनहु सात दिनसँ अन्न बारने छलीह । खएबा लेल कहिअनि तँ आर बुकौर फाटए लागनि । तैँ हम किछु कहबे नहि करैत छलिअनि । सप्तमी दिन पूजाक भानस सम्पन्न कए ओ बूढ़ी मंगलाक थान जा रहलि छलीह । ओही कालमे सारियाक बाजब सुनि ओ नैवेद्यक भात ओकरा आगू परसि देलनि आ हबेली जाए पड़ि रहलीह । तहिआसँ फेर कहिओ उठलीह नहि । गत अष्टमीक दिन हुनक गंगा-लाभ भए गेलनि ।''

जिरह कएला पर उत्तर देलक, ''मलिकाइनिकेँ कोन व्याधि छलनि से तँ हमरा नहि बुझल अछि, मुदा स्नान-पूर्णिमाक आठ दस दिन पहिनहिसँ ओ किछु दुखिताहि छलीह । स्नान-पूर्णिमा दिन चम्पा महफामे चढ़ि कतहु गेलि छलि आ जखन घुरि आइलि तँ जानि नहि हँसि-हँसि की-की बाजलि छलि । ओही दिनसँ मलिकाइनिक व्याधि बढ़ि गेलनि । रातुक खाएब छाड़ि देलनि । कलौओ कि कोनो कलौ जकाँ खाथि । आठो पहर कनिते रहथि । सारियाक खेत छोड़ि देबा लेल मालिकक पाएर धए-धए बहुत नेहोरा कएलनि, किन्तु मालिक नहि टेरलथिन । चम्पा तमसा जाएत ताहि डरेँ मलिकाइनि आर किछु बाजि नहि सकलीह, केवल अन्न-पानि बारि देलनि । मुकुन्द वैद्यक ओहिठामसँ औषध आनल गेल । औषध ओ खएलनि नहि, खाली माथमे भिड़ा राखि लेलनि ।''

जिरह कएला पर बाजलि, ''हम एहि घरमे लगभग दस वर्षसँ छी । हमर नैहर पुरीक ब्राह्मण-शासनमे छल । हमर पतिक नाम थिकनि रामनाथ तिहाड़ी । सुनैत छी, विवाहक समय हम साते वर्षक छलहुँ, आ हमर पति तीन कौड़ी चारि वर्षक । हमर पति अपन खेत-पथार बेचि-बाचि हमर पिताकेँ आठ बीस टाका देने छलथिन । विवाहक समय हमर पतिकेँ साँसक रोग छलनि । ओही व्याधिसँ हुनक स्वर्गवास भए गेलनि । हमरा सासुरमे केओ नहि छल । बाबू गेलाह आ पतिक जे किछु बचल-खुचल छल, तकरा बेचि

हमरा अपना ओहिठाम लए अनलनि । बाबूक ओहिठाम प्राय: पाँच सात वर्ष रहलहुँ । गाममे ललिता दास नामक बाबाजी छलाह । हम हुनका लग जाए चैतन्य-चरितामृत सुनल करैत छलहुँ । एहि पर भाएसभ आपत्ति कएल । हम बाबाजीक संग धए रातिए राति वृन्दावन पड़ा गेलहुँ आ कटकक तेलंगा बजारमे रहए लगलहुँ । मालिक मोकदमाक प्रसंगेँ कटक गेल छलाह । हुनक संग लागि एहिठाम चलि अएलहुँ आ तहिआ सँ एही हवेली मे छी ।''

४ नम्बर गबाह-नाम बाइधर महांती । बापक नाम डमरूधर महांती । जाति करण । बएस ५६ वर्ष । सा. कनकपुर । प्र. झंकड़ । जि. कटक ।

''आइ करीब बीस वर्षसँ हम एहि फतेहपुर सरसंड तालुकमे गोमास्ता छी । पहिने मेदिनीपुरक करामत अलीक जमीनदारी छलनि । ओहू समयमे हमही गोमास्ता रही । सम्प्रति रामचन्द्र मंगराज सूदिमे पाबि जमीन्दारी भोगि रहल छथि ।

(दरोगा गबाहसँ बहुत जिरह कएल; गबाह सेहो बहुत राश उत्तर देलक । ओहि सभ बातकेँ छोड़ि-छाड़ि हम एहिठाम गबाहीक केवल सारांश लिखि रहल छी)

गबाहक उत्तर-''मंगराज कोनो घरक पाइसँ ई जमीनदारी नहि कीनल । कीनल अछि लगान-ओसूलीक पाइसँ । मंगराज पहिल वर्षक मालगुजारी ओसूलि जमीनदार दिलदार मियाँकेँ दए देल । दोसर खेपक टाका ओसूल कए जहिआ मेदिनीपुर गेलाह तहिआ सँगमे हमहूँ छलिअनि । जमीनदारकेँ कहलनि— 'पूर्वक जमीनदार बाघसिंह-वंशक वंशधर लोकनिक चढ़ओलासँ आ हुनको सभक मेल आ नेतृत्त्वमे लगान-बन्दी विद्रोह चलि रहल अछि । एको पाइ ओसूल नहि भेल। आब की होएत ? काल्हिए लाटबन्दी छैक । ' मंगराज हैंडनोट लिखा लेल आ लाट (देय राजस्व) चुकएबा लेल ओएह रुपैया मियाँकेँ कर्ज मे देल । एम्हर रैअतिसँ सेहो ई कहि-कहि सूदि ओसूलैत रहलाह जे जमीनदार कर्ज लेलनि अछि । प्रत्येक खेपमे एहिना होइत छल । अन्तत: मंगराज मोसाहिबसभकेँ पर्याप्त घूस-घास दए सूदि आ मूर कुल तीस हजार टाकाक हैण्डनोट लिखवा लेल । दिलू मियाँ निशाँ मे भेर छलाह, दसखत कए देलनि । मंगराज फेर घुरिकेँ कहिओ मेदिनीपुर नहि गेलाह, कटकहिमे मामिला-मोकदमा कए जमीन्दारी दखल कए लेलनि ।

जिरह कएला महांती बाजल—''हँ, भगिया ताँतीसँ छओ बिगहा आठ कट्ठा जमीन मियादी केवाला करबा लेलनि अछि । केवालाक कागत पर डेढ़ सए रुपैया लिखल अछि ।'' तमस्सुक लिखाइ, मोकदमा इत्यादिमे कतेक लागल, एहिसभ प्रश्नक उत्तर छल—''रजिस्टर देखि कैँ कहि सकब ।'' (गबाह रजिस्टरमे देखलक, लिखल छल पैंतिस रुपैया दस आना सतरह छेदाम) ।

गबाह कहलक हँ, मालिक भगियाक विरुद्ध कटकक कचहरीमे मामिला मोकदमा कएने छलाह । मामिलाक अर्जी, डिगरीक कागज आ नीलामी नोटिस आदि सभ चीज हमरा लग अछि । भगियाकेँ किछुओ नहि भेटलैक । कचहरीक चपरासी आबए तँ मालिकसँ

इनाम लए हमरासँ रसीद लिखाए चल जाए । सारिया कोना मुइल से हमरा नहि बूझल अछि । ई गाए भगियाक थिकैक । बाइधर महांती ।

(दस्तखत)

५ नम्बर गवाह-बा नाम चम्पा । बापक नाम बूझल नहि । जाति एही घरक लोक । सा. गोविन्दपुर । जि. कटक । हम सारियाकेँ नहि चिन्हैत छी । ओकर घर एहि गाम मे नहि छैक । ओ हमर द्वारि पर नहि मुइल अछि, कतहु आनठाम मरि एहिठाम आनि पाड़ि देलि गेलि छलि । ओकरा जर भेल छलैक, मरि गेलि । हमर मालिक ओकरा किछु नहि कहलथिन । हमर मालिक बड़ नीक लोक छथि । बहैत पानिमे पाएर नहि रोपैत छथि । मलिकाइनि ज्वरसँ मरि गेलीह । शोकसँ खाएब त्यागि देल । बड़ कनलहुँ (गबाह कानए लागलि, दरोगाक धमकओला पर चुप भेलि) । ई गाए हमर अपने घरक बाछी थिक । ''

फेर बाजलि, ''सारियाकेँ दाम दए ई गाए कीनल अछि ।''

चम्पाक औंठा छाप-सही ।

राति बेसी भए गेलाक कारणेँ कचहरी बंद भेल । दरोगा, मुंशी आ चौकीदार गोबरा जेना, तीनू बड़ी राति धरि बैसल विचार-विमर्श करैत रहल । उपयुक्त गबाह आनल गेल आ फेर दोसर दिन गबाही लेल जाए लागल ।

६ नम्बर गबाह-''हमर नाम बना जेना । बापक नाम दना जेना । जाति पाण । अवस्था १८ । पेशा हरबाही । सा. भक्रामपुर । प्र. बालूबिसी । जि. कटक । हम सारियाकेँ चिन्हैत छी । ओकरा घर पर कतेको बेर गेल छी । ओकर घर सौंतुनियामे छैक । बमनटोलीमे, नहि नहि, पाण-टोलीमे ।'' फेर बाजल, ''नहि-नहि, एही गाममे । आठ दिन भेल होएतैक, मंगराज ओकरा पकड़ि अनने छलाह आ लाठीसँ पिटने छलाह । बाँसक एही लाठीसँ लठिअओने छलाह । (गबाह लाठी देखओलक) । गत द्वादशीक दिन आध पहर रातिक समय रामचन्द्र मंगराज ओकरा मारने-पिटने छलाह; हम अपना आँखिए देखने छलिऐक । सारियाक पीठ पर ओ बीस लाठी मारलनि । हम सादूक माल ताकए आएल छलहुँ । हमर घर एहिठामसँ दू कोश पर अछि । मालिकक संग हमरा कोनो झगड़ा-झंझट नहि अछि । गोबरा जेना चौकीदार हमर बहनोइ नहि थिक ।''

(ई लाठी आ औंठा छाप बना जेनाक । सही) ।

७ नम्बर गवाह-नाम धकेइ जेना । बापक नाम नांगुड़ जेना । जाति पाण । बएस बूझल नहि । पेशा हरबाहि । सा. रामपुर । । प्र. बालूबिसी । जि. कटक ।

गत नवमीक आध पहर राति मुद्दालह रामचन्द्र मंगराज बाँसक एही लाठीसँ सारियाकेँ पिटने छलाह । हम से देखने छलहुँ । हम नोन कीनबाक हेतु दोकान पर आएल छलहुँ । राति भए गेलाक कारणेँ दोकाने पर पड़ि रहलहुँ । धमाधम सुनि दोकानक चार पर चढ़ि गेलहुँ आ ओतहिसँ देखलहुँ ।'' फेर बाजल, ''नहि, नहि । हम मंगराजक चार पर चढ़ि

देखलहुँ । ओतएसँ देखा रहल छल । हम एहि गाएकेँ चिन्हैत छी । कतेको बेर एकरा हम अपना हाथेँ दुहने छी । एहि गाइक नाम 'बउला' छैक । ई गाए भगिया ताँतीक थिकैक । रामचन्द्र मंगराज ओकर घरसँ चोरा अनलनि अछि । सिंह काटि चोरा अनलनि अछि ।''

मुद्दालह दिससँ जिरह कएला पर उत्तर देलक—''गोबरा जेना हमर मसिऔत भाए नहि थिक । ओ हमरा बजा नहि अनलक अछि । हम तँ अपने मनसँ गबाही देअए आएल छी । ओ हमरा खाएक नहि देलक । हम अपने गाम पर सँ चूड़ा आ चाउर बान्हि अनने छी । नवमीकेँ आइ बीस-बाइस दिन भए गेलैक । आइ कोन तिथि थिकैक से हमरा बूझल नहि अछि ।''

ई निशान लाठी आ औंठा धकेइ जेनाक थिक से सही ।

८ नम्बर गबाह-नाम खनु चंद । बापक नाम निता चंद । जाति ताँती । उमेर २८ । पेशा वस्त्र बीनब । सा. गोविन्दपुर । जि. कटक ।

''ई गाए भगियाक थिकैक से हमरा बूझल अछि । भगिया हमर पड़ोसी थिक । जहिआ सरकारी जमादार आबि भगियाक घर उजड़बा गेलैक, तहिआ मंगराज गाए खोलि लए गेलाह आ अपन हवेलीमे बान्हए लगलाह । गाए किएक खोलि ललनि से हमरा नहि बूझल अछि । मंगराजक हरबाह जा कए भगियाक घर उजाड़ि आएल छल आ घरक सभ चीज-वस्तु उठा अनने छल । भगिया आ सारिया दूनू गोटे बाट पर छाती पीटि-पीटि कानि रहल छल । सरकारी जमादारक अएलाक कारणेँ हमसभ अपन-अपन घरक केबाड़ बन्द कए नुका रहल छलहुँ । चौकीदार गोबरा जेना हमरा हाक दए रहल छल । मुदा हम कोनो उतारा नहि देलिऐक । हमर आँगनसँ उत्तर देलकैक । ओ कहलकैक, खनु गाम पर नहि अछि ।

ई नाओ निशान खतु चंदक थिक से सही ।

असामीक उत्तर—नाम रामचन्द्र मंगराज । पिताक नाम धनी नायक । जाति खंडायत । वएस ५२ । पेशा जमीन्दारी । सा. गोविन्दपुर । जि. कटक ।

उत्तर देलनि- ''सारियाकेँ हम नहि मारलहुँ । भगिया हमरासँ कर्ज लेने छल । मोकदमा कए हम ओकर छओ बिगहा आठ कट्ठा जमीन डिगरी करा लेलहुँ आ मोकदमाक खर्चक तरेँ गाए लए लेलहुँ ।

(दस्तखत) रामचन्द्र मंगराज ।

ठीक ओही कालमे कोनो एकटा बताह ओतए आबि गेल । डाँड़मे एक चेथरा मात्र खोंसने छल । माथक केश उधसल छलैक । पूरा देह धुरिआएल छलैक । हाथमे माटिक एक बासन लेने छल । खूब नाचल, सारिया-सारिया बाजि-बाजि गीत गओलक । ओकरा देखि गौआँसभ 'आह-आह' कएलक आ बाजल, की रओ भगिया, तोरा कपारमे इएह लिखल छलहु ? मंगराज पर दृष्टि पड़ितहिँ ओ हुनका हबकबा लेल दौगल । चौकीदार

ओकरा पकड़ि लेलकैक । सम्हरैत नहि रहैक तँ दरोगाक आदेशसँ बान्हि देलक । दरोगा मामिलाक जाँच-पड़ताल खतम कएलनि । बत्तीस गवाहक साक्ष्य लेल गेल । ओहिमे चारि गवाह राखि लेल गेल; शेष सभ छोड़ि देल गेल ।

असामी चलान भेल ।

मंगराज दोपहरिआमे चलान भेलाह । हाथमे हथकड़ी छलनि । चौकीदार आ सिपाही चारु कातसँ घेरि लए जा रहल छलनि । बीचमे मंगराज माथ पर अँगपोछा रखने मुह खसओने चलि रहल छलाह । गौआँ सब ठाढ़ भए, काली माताक वहराएल जुलूस-जकाँ देखि रहल छल । आगू-आगू दरोगा छल, पाछू-पाछू मुंशी । मंगराजक ई दुर्दशा देखि गामक केओ व्यक्ति व्याकुल छल कि नहि से कहबामे हम नितान्त असमर्थ छी । केवल चम्पे टा 'हमर मालिक, हमर मालिक, हमर मालिककेँ कतय लेने जाइछेँ, हमर मालिक...., इत्यादि विलापकेँ करुण रागिणीमे गबैत, चिकरैत, चिचिआइत, कनैत, छाती पीटैत दौड़ि रहलि छलि । ओकर बपहारि जेना बाटमे उड़िआ रहल छल । मालिक तीन बेर मुह घुमाएकेँ ओकरा फिरि जाए कहलनि । दरोगा आ मुंशी सेहो तंग आबि गेल । मुदा के सुनैत अछि । माथ पर आँचर धरि नहि रहैक । कानि-कानि मुइलि आ रहलि छलि । एही रूपेँ करीब दू कोस गेलापर मालिककेँ सुना कए बाजलि, ''खजानाक चीज-वस्तुमे घुन लागि जाएत, मूस खा जाएत । ओकर की कएल जाए ?'' मंगराज कनेक ठाढ़ भेलाह आ पैघ-पैघ कुंजीक दू टा बड़का-बड़का झाबा ओकरा दैत बजलाह,''सभ सतर्कतासँ रखिहेँ । कोनो चिन्ता नहि करिहेँ ।'' चम्पा दूनू झाबा पूर्ण सतर्कतासँ डाँड़मे खोंसि लेलक आ बाजलि, ''अपने भोजन करब, उपासल नहि रहब ।'' गोविंदा भंडारी संग छलैक, दूनू गोटे संगहि गाम पर घुरल । घुरैत काल चम्पाक क्रन्दन केओ नहि सुनलक ।

थाना पर पहुँचलाक बाद दरोगाजी एक बेर फेर सब गवाहक इजहार पढ़बाकए सुनलनि आ मुंशीक विचारक अनुसार काटि-कूटि कए गवाहकेँ सदुपदेश देल । तकरा बाद रिपोर्टक संग बंदीकेँ कटकक मजिस्टर साहेबक ओतए चलान कए देलनि । दरोगाक रिर्पोटक नकल माही मोहर सहित हम उपर कएल अछि । इच्छा हो तँ सुनल जाए ।

दरोगाक रिर्पोटक नकल ।

धर्मावतार,

चालू अक्टूबर मास तीन तारीख मिनट आठ बजे अपनेक इलाकाक मध्य अपनेक कचहरीमे बैसि हम सरकारी काज करैत रही; मुंशी चक्रधर हमर दाहिना कात बैसि रोजनमचा लिखैत रहथि, सिपाही गुलाम, कादिर आ हरिसिंह पहरा पर तेनात रहए । एहना स्थितिमे, एहि थाना क्षेत्रक फतेहपुर सरसंड,मौजे गोविन्दपुरक चौकीदार गोबरा जेना हाजिर भए सूचना देलक जे तालुक मजकूर आ मौजे मजकूरक रहनिहारि सारिया तौंतिनिक हत्या भए गेल । हम ई खबरि पबितहि पलो भरि विलम्ब नहि कए हजुरकेँ पहिल इत्तला

(सनहा) पठाओल । आओर ई जानि जे असामी थिक कुख्यात बदमाश आ क्रूर जमीनदार अछि, आ तैं मामिला वहुत संगीन अछि, तुरन्त प्रस्थान कए सर जमीन पर पहुँचि परिपाटीक अनुसार असामीक घरकेँ चारू कातसँ घेरि बहुत सर्तकतापूर्वक खानातलाशी कए आसामीकेँ कएद कएल । तदुत्तर मसोमात मजकूराक नेत नामक एक सिलेबिआ गाए असामीक ओहिठाम सँ बरामद कएल । आओर असामी बाँसक जाहि लाठीसँ सारियाक हत्या कएल अछि से लाठी भेटि गेल । आओर असामी रामचन्द्र मंगराज अपनहि हाथेँ बाँसक एक लाठीसँ सारियाक हत्या कएल से वात एहि चारू गबाहक साक्ष्यसँ स्पष्ट साबित भेल आओर ई चारू प्रत्यक्षदर्शी गबाह भेल । आओर असामी क्रूर अछि आओर एक इमानदार मुसलमानक जमीनदारीकेँ छलसँ लए लेलक अछि जे बात एहि चारू गबाहक साक्ष्यसँ पूर्णत: साबित अछि । आओर एहि सभ स्थितिकेँ देखैत असामीक उपर हत्याक आरोप साबित होइत अछि; अत: असामीकेँ हजूरक समक्ष चलान कएल अछि । हजूर खोदाबन्द, माय-बाप , दुनियाक जहाँपनाह ! कसूर माफ हो, नौशनारी तजबीज (निष्पक्ष निर्णय) कएल जाए ।

तारीख १० अक्टूबर १८३१ ई.
दरोगा एनायत हुसैन
थाना केंदरापाड़ा ।

ज्ञात हो जे खाना तलाशीक समय असामीक घरसँ बरामद भेल चोरीक वस्तु सिपाही हरिसिंहक सुरक्षामे पठबा देल गेल । जेँकि असामी द्वारा सारियाक हत्या होएबाक कारणेँ ओकर पति भागिया चंद निछच्छ बताह भए गेल आ तैं ओ लोक पर चोट करैत अछि, आओर अपन कोनो आत्मीय लोक नहि छैक, तैं ओकरहु सरकारक ओहिठाम चलान कएल । सरकार मालिक ।

तारीख सन पन्द्रह ।

बीसम परिच्छेद

ओकील राम राम लाला

काठक रेलिडसँ पंरल हाजतक एक कोनमे घेरासँ ओंडउल एक व्यक्ति आँखि मुनने बैसल अछि । चारिटा सिपाही पहरा पर अछि । अहा, बेचारासँ दू आखर गप्पो कएनिहार केओ नहि । सब स्वजन-स्नेही सुखक संगी होइत अछि, अर्थक दास होइत अछि । बेर पड़ला पर केओ ककरो नहि । अहाँ तँ देखनहि होएबैक । ककरो द्वारि परक दुबिओ पर ककरो पाएर नहि पड़ैत छैक तँ ककरो दरबाजा पर लोकक धरोहि लागल रहैत छैक । स्थिति जे ने कराबए । कोनो विदेशी कवि लिखने छथि—'बंधुहीन जीवन होइत अछि, सूर्यहीन संसार समान ।' तँ असली मित्र लोककेँ कहिओ छोड़ि नहि सकैत अछि ।

''प्रणाम मंगराज !'', बंदी अकचका गेल । तकलक । पहिने 'प्रणाम' शब्द कतेको बेर सुनल करैत छल; आइ प्रणाम शब्द सुनितहि ओकरा लगलैक जेना निष्प्राण देहमे प्राणक संचार भए गेल हो । बंदी किछु बाजि नहि सकल । माथसँ पाएर धरि ओहि मूर्तिक दर्शन करैत रहल । विशाल मूर्ति । आजानु-विलंबित भुज । देहमे ढिल बहुँआबाला ठेहुन धरि लठकल छओ कलीक ठाम-ठाम मोसिक दागसँ युक्त चौबंदी चपकन । माथ पर हाथ भरि चाकर चौबीस हाथ नाम जरीक कोरबाला कपड़ाक मुरेठा, ओकर बामा छोर दहिना कान्ह पर आ दहिना छोर बामा कान्ह पर आ झालरि छातीक उपर त्रिकोण बनबैत । डाँड़मे तिनफुलिया मणियाबंदी धोती । पाएरमे फूलदार मरहठी जूता । कान पर पहाड़ी सीकठिक कलम । ऐंठल मोछ । मुहमे भरि गाल पान । ओहि मूर्तिकेँ देखि बंदीक मनकेँ आशा, भरोस, विस्मय, सन्देह आदि मथने जा रहल अछि । ओकरा चकार नहि फूटैत छैक । चिन्हार-परिचित स्नेही व्यक्ति जकाँ प्रणाम कएनिहार ई व्यक्ति के थिक ?

हमर अनुमान अछि जे ई मंगराजक कोनो बंधु होएतनि । एहन तर्क करबाक साहस हम एहि द्वारेँ कएल अछि जे चाणक्य-नीतिक हमरा विशेष ज्ञान अछि । नीतिमे कहल गेल अछि—'राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बांधवः ।' राजद्वार अर्थात् कचहरी मे आ श्मशान अर्थात मुरदघट्टीमे यस्तिष्ठति अर्थात् जे रहए से बान्धवः' अर्थात् से बंधु थिक—इत्यर्थः। अर्थात् ओकिलसभ कचहरीमे आ गीदड़सभ मसानमे रहैत अछि, तँ ओ बन्धु थिक, बांधव थिक । भेद अछि केवल जीवित पक्ष आ मृत पक्षक । बंदीकेँ बेशीकाल टुकुर-टुकुर ताकए नहि पड़लनि । पहरा पर ठाढ़ सिपाही गोपी सिंह चिन्हा देलकनि, ''देखू,

हिनकर नाम राम राम लाला थिकनि । कचहरीक वड़का ओकील छथि । हिनकहि ठीक सँ गहू ; हिनकर बात साहेब खूब सुनैत छथिन । ओकिल साहेब प्रसन्न भए छाती आ दूनू बाँहि पर दू बेरि नजरि खिरौलनि आ दू बेरि खखारि गर साफ करैत आत्मीय जन जकाँ बजलाह, ''मंगराज, मामिला एतेक बढ़ि गेल, अहाँ पहिने हमरा भनको नहि देलहुँ । दुनिया भरिक मोकदमा हमरा लग अछि, थूक फेँकबाक पलखति लोक नहि दैत अछि । तथापि अहाँक नाम जखनहि कानमे पड़ल कि दौड़ले चल अएलहुँ ।'' मंगराज 'फोंह' सँ दीर्घ श्वास छोड़लनि आ पुक्की मारि कानि उठलाह । कल जोड़ि पाएर पर माथ राखि देलनि ।

ओकिल साहेब बजलाह, ''उठू, उठू । आब सभ किछु हमरा पर छोड़ि दिअ । अहाँ निफिकिर भए बैसू । कोनो चिन्ता नहि । कल्हुकी राति साहेबक बंगला पर गेल छलहुँ । बहुत राश मामिलाक गप्प उठल । अहाँक प्रसंग हमरा ज्ञात रहैत तँ आइ की सँ की कए देने रहितहुँ । अस्तु, अहाँक मामिलाक पूरा हाल आब बूझल । एकदम फूसि थिक, एकदम फूसि, एकदम फूसि ! ओ जे बदमशवा दरोगा अछि ने, ओकरे ई सभटा खेल थिक । देखबैक ओहि दरोगाक हम कोन दशा करैत छी । एक बेर साहेबक संग कनेक गप्प तँ होअए दिअ ।''

मंगराज (कल जोड़ि)—ओकिल साहेब, कहू हम की करी ? हमरा प्राण-दान दिअ । अहाँ धर्म-पिता छी । हम नेना छी । हमरासँ नेनपनी भेल । आब सभटा छार-भार अहींक उपर ।

ओकील—अहाँकेँ किछुओ कहबाक प्रयोजन नहि । हमरा सभ किछु बूझल अछि । हम सभ किछु करब । परंच एकटा गप्प बुझैत छी, मामिला बड़ गम्भीर अछि । अत्यन्त गम्भीर । फाँसीक मामिला । समयपर तत्पर नहि रहल गेल तँ फाँसी निश्चित, बूझू । ताहिपर ओएह दुष्ट दरोगा पछोर धएने अछि । अहाँ तँ बुधिआर लोक छी । बेशी की कहू, कचहरीक मामिलाक बात अहाँ सभटा जनिते छी । किछु खरच-बरच लागत । खर्चासँ डरएने काज नहि चलत । मुट्ठी पूरा खोलि देमए पड़त । सुनल नहि, दरोगा की कहैत फिरैत अछि । खूनी केस थिकैक । प्राण बाँचि जाए तँ सएह बहुत बूझू । टाका अहाँ अरजलहुँ अछि, कि टाका अहांकेँ अरजलक अछि ? एहि संबंधमे अहाँ सोचि-बिचारि लिअ ।

मंगराज (कानि-कानि)—जी, कतेक टाका लागत ? हमरा हाथमे तँ एकटा छेदाम नहि अछि । संगमे कोनो लोको नहि अछि । जे नोकर-गोमास्ता आएल अछि तकरा दरोगबा हमरासँ गप्पो नहि करए दैत छैक । हमरा छोड़बा दिअ, गाम पर जा कए अहाँकेँ हजार टाका देब ।

गोपी सिंह—अओ मंगराज, एही बुद्धिसँ जमीनदारी अहाँ चलबैत छलहुँ ? एहि ठाम कि कोनो खरीद-बिकरी होइत छैक जे उधार चलत । 'मोकिल कहए बचाउ काका;

ओकील कहए लाउ टाका । टाका धरू, गप्प करू । मोकदमा जितवाक हो तँ टाकाक मोह छोड़ए पड़त । ओकील साहेब, बंदीसँ हम आर बेशी गप्प नहि करए देब । नाजिर साहेबक हुकुम छलनि केवल छन भरि गप्प करए देबाक । हम असगरे नहि छी, चारि गोटे छी ।

ओकील—सुनलिऐक, मंगराज ? सोझ नहि छैक सिपाहीसँ हाकिम धरि सभकेँ मुट्ठीमे आनब । मामिला तेहन टेढ़ अछि जे आन ओकील विनु नकद दस हजार लेने नाक पर माछी नहि बैसए देत । हमही छी जे एहन मामिला लेब । करितहुँ की ? हमरा धर्म पिता बना देलहुँ तेँ । बेश तँ एहि मामिलामे जे किछु खर्च होएत से हम करब । खर्च दस हजार टाकासँ कम किन्नहु नहि पड़त । अहाँ अपन जमीनदारी हमरा मियादी केवाला लिखि दिअ । आवश्यक नहि जे सभटा टाका खर्चे भए जाए । अहाँक छुटैत देरी हम कौड़ी-कौड़ीक हिसाब दए देब ।

मंगराज गाल पर हाथ धए किछु काल सोचलनि । साँपक पाएर साँपेकेँ सूझैत छैक । मिआदी केबालाक अर्थ मंगराज नीक जकाँ जनैत छथि । परन्तु डुबैत भसिआइत लोकक हाथमे जँ बाघक नाँगड़ि पकड़ा जाइक तँ तकरा ओ छोड़त नहि ।

ओकील राम राम लाला काजमे बड़ तेज छथि । दू घंटाक भीतरे स्टांप कीनि, केबालाक प्रारूप आ साफ प्रति दूनू तैआर करा लेलनि आ कचहरीक काजी-खानामे रजिस्टरी सेहो करा लेलनि । अंतमे ओकील साहेब कहलथिन, ''मंगराज, अहा कोनो चिन्ता नहि करू, निफिकिर भए हाजतमे पड़ल रहू । हम तँ छीहे, चिन्ताक कोनो बात नहि ।''

एकैसम परिच्छेद

कटक दौरा अदालत

आइ जजक इजलासमे बड़ भीड़ अछि । कचहरिआक तँ कथे कोन, सौदाक हेतु आएल लोको देखबा लेल दौगल आबि रहल अछि । भजन-कीर्तन कतहु भेला पर जेना दर्शक भजनिआक सजबासँ पहिनहि जूमि जाइत अछि, तहिना दर्शकक धरोहिसँ कचहरी भरि गेल अछि । भारी भीड़, कोलाहल । दू टा चपरासी 'चु --प् चो-- प्प् चो--ो--ो--ो--प्प्' चिचिआ-चिचिआ कए हल्ला आओरो बढ़ा रहल अछि । देहातक एक मातबर जमीनदार हत्याक मोकदमामे गिरफ्तार कए आनल गेल छथि । मजिस्टर साहेब सुनबाहि कए रहल छथि । पाँच दिनसँ मोकदमा चलि रहल अछि । एखन धरि मामिला सोझराएल नहि अछि । काल्हि बुध थिक, विलायती डाक जाएत । साहेब 'माइ डियर लेडी'क संबोधनसँ शुरू कए दनादन चिट्ठी लिखि रहल छथि । फौजदारी मामिला उपस्थित भेला पर हाकिमसभ विलायती अखबार पढ़ए लगैत छथि आकि चिट्ठी लिखब शुरू कए दैत छथि । इजलासक सभटा काज पेशकारकेँ सुनझा दैत छथि । साहेबकेँ तँ केवल बहसक कागतक पाँतीक पाँती पर दस्तखत मारैत जाएब आ निर्णय सुनाएब एतबे टासँ मतलब । आइ साहेबकेँ सभटा अपनहि हाथेँ करबाक होएतनि, किएक तँ आइ एक अंगरेज गबाह अछि । तेँ निर्णय सेहो अँगरेजिएमे लिखए पड़तनि । आजुक सबटा काज अँगरेजीमय अछि । किन्तु हम तँ ओड़िया छी । पाठकोसभ सएह छथि । छापाखानाक अक्षरो देशिये अछि । तेँ हमरा सभ बात देसी भाषामे अनुवाद कए लिखए पड़ि रहल अछि । साहेब चोत भरि थूकसँ लिफाफ साटि चपरासीक हाथेँ डाकखाना पठा देलनि आ बजलाह, "वेल, बाबू, मोमदमा प्रस्तुत करह । सरकारी ओकील ईशान चंद सरकार, दरोगा एनायत हुसैन, मुद्दालहक ओकील राम राम लालाकेँ हाजिर करह ।"

बंदी रामचन्द्र मंगराज कठघराक भीतर कल जोड़ने ठाड़ छथि । जज साहेबक दहिना कातक कुर्सी पर बैसल होली वाइबिल हाथमे लेने डाक्टर साहेब बयान देलनि, "हमर नाम ए.बी.सी.डी. डगलस । बापक नाम ई.एफ.जी.एच. डगलस । जाति अंगरेज । आयु ४० वर्ष । हाल साकिन कटक । हम कटक जिलाक सिविल सर्जन छी । गत ८ तारीखकेँ भोरमे सात बाजि तीस मिनटक समय सरकारी शव-परीक्षण-गृहमे हमर समक्ष सारियाक पोस्टमोर्टम कएल गेल । चौकीदार गोबरा जेनाक कथनानुसार हम कहैत छी जे शव सारियाक छल । हम जतए धरि जाँच कएलहुँ, ताहि आधार पर साहसक संग कहि सकैत

छी जे मृत्युक कारण कोनो प्रकारक प्राण नाशक अस्त्रक प्रहार अथवा अन्य पदार्थक उपयोग नहि छल । हमरा एहि बातक पर्याप्त प्रमाण भेटल अछि जे दीर्घ अनाहार आ विशेष मानसिक यंत्रणाक कारणेँ एहि स्त्रीक मृत्यु भेलैक अछि।''

जज साहेवक प्रश्न कएला पर गबाह उत्तर देलनि, ''शवमे कोनो प्रकारक आघातक लक्षण नहि छल । मात्र शोणित सुखा गेल छलैक । हृदयमे शोणित प्रायः नहिए जकाँ छलैक । पाकस्थली शून्यप्राय छलैक । मूत्राशय आ मलवाहिनी नाड़ीमे सेहो तकहु कोनो पदार्थ नहि छलैक । एहि समस्त लक्षणक आधार पर हम एहि निर्णय पर पहुँचलहुँ अछि जे ओ अनाहारसँ मुइल ।

सरकारी ओकीलक प्रश्न पर ओ बजलाह, ''हँ, शवक पीठ पर तीन निशान छैक । गौबरा जेना हमरा विशेष रूपसँ देखओलक । नीक जकाँ परीक्षण कएला पर पाओल जे दाग चोटक नहि थिक । मृत्युक किछुए काल पहिने धीपल लोह अथवा कोनो आने घीपल चीजसँ दागल बुझाएल ।''

सरकारी ओकीलक जिरह कएला पर उत्तर देलनि—''नहि, हम चक्कूसँ शव नहि चिरलहुँ, देशी डाक्टर गौरी शंकर आ कम्पाउण्डर बासुदेव पट्टनायक ई दूनू व्यक्ति हमरा समक्षहि चीर-फाड़ कएल ।''

ओकीलक पुछला पर गबाह कनेक खिसिआ कए उत्तर देलनि,''हम दस वर्षसँ सिभिल-सर्जनी करैत आबि रहल छी । पहिने सेनामे छलहुँ । लंदन कालेमे पढ़ि डाक्टरी पास कएने छी ।''

फेर जिरह कएला पर उत्तर देलथिन, ''पहिने हम अस्पताल-सहायक छलहुँ । बर्माक लड़ाइमे हमर पदोन्नति भेल ।''

जज साहेब बंदीक ओकील दिस ताकि पुछलनि, ''किछु पुछबनि ?''

बंदीक ओकील राम राम लालाक प्रश्न—(ओ डाक्टरक दिस तकि प्रश्न कएल) ''बेश, फाइलक उपर बंदीक जे लाठी राखल अछि तकर कोनो दाग शवक पीठ पर छल कि नहि ?''

जज साहेब-ननसेन्स ! आर की पूछबाक अछि, पूछिऔन।

ओकील गबाहसँ फेर जिरह कएल—''बेश, अहाँ कहि रहल छी जे सारिया भूखेँ मुइल; से ओ अपने मने उपवास कए रहलि छलि कि बंदी ओकरा भूखलि रखने छलैक ?''

जज साहेब—ई कोनो बात नहि भेल ! कहैत चलू, कहैत चलू ।

फेर जिरह— ''बेश, सारिया वन्दीक द्वारि पर मुइल तकर कोनो प्रमाण अछि ?''

जज साहेब अप्रसन्न भए बजलाह— सुनू, अहाँ यदि एना बिनु पेनीक प्रश्न करब तँ अहाँक ओकीली खतम कए देल जाएत ।

ओकील—हजूर खोदाबन्द, माए-बाप । जगतपति । *

*ओकील-पाठक, ध्यान देब । ई मोकदमा साठि बरख पूर्वक थिक

बंदीक उत्तर सुनलाक बाद दूनू पक्षक ओकीलक बहस भेल । खूब शास्त्रार्थ भेल । अढ़ाए घंटा धरि बहस पर बहस चलैत रहल । एहि बीच चारि हाथ लाम अखबार आ टिफिन सेहो साहेब प्राय: समाप्त कए गेल छलाह । जँ हाकिम बन्द नहि करओने रहितथि तँ बहस बरोबरि चलिते रहैत ।

हाकिमक आदेशानुसार सिरिस्तेदार रोबकारी (वाद-विवरण)लिखि कए अनलक । विवरण बारह ताओ कागत पर लिखल गेल छल । दस्तखत मोहर सहित रोबकारीक नकल लेल अछि । हँ, जेँकि एखन धरि हम सभ बात संक्षेपमे कहैत आबि रहल छी तँ एहि नकलमे सँ केवल ओएह अंशसभ प्रकाशित करब, जाहिसँ पाठक मोकमाक पूरा हाल बूझि जाथि ।

रोबकारी कचहरी अदालत ओ फौजदारी सेसन जज कचहरी कोर्ट इजलास एच. आर. जैकसन स्क्वायर सेसन जज मिलकियत श्री युक्त ईस्ट इंडिया कम्पनी बहादुर, उड़िया खंड, जिलः कटक ।

सरकार बहादुर मुद्दई बनाम रामचन्द्र मंगराज सा. गोविन्दपुर प्र. असुरेश्वर जि. कटक मुद्दालह । सारिया नामक एक ताँतिनि-महिलाक हत्या आ ओकर घरक चीज मामिला वस्तुक लूटि लए जएबाक ।

फाइलक सभ कागजात एवं दूनू पक्षक समस्त कथन, ओकीलसभक जवाब-सबाल देखला एवं सुनला पर ज्ञात भेल जे ई मोकदमा पुलिस चालानी थिक । जिलाक मजिस्टर साहेब असामीक उपर हत्याक अभियोग लगा कए ई मोकदमा सेसन सुपुर्द कएल अछि । असामीक दोष साबित करबा लेल पुलिस आठ गोट साक्षीक बयान लेलक अछि । हम अत्यन्त सतर्कता आ मनोयोगसँ गबाहसभक परीक्षा कएल अछि आ दूनू पक्षक ओकीलक बहस सुनि एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ अछि जे असामी जेना पुलिसक आरोप अछि, सारियाक हत्या लाठीक प्रहारसँ असामी नहि कएलक । ओकर मृत्युक कारण दीर्घकालक अनाहार आ मानसिक पीड़ासँ भेल । हमर एहि विश्वासक आधार ई अछि जे प्रथम-हत्याक मामिलाक प्रधान गबाह सिभिल सर्जन स्पष्ट रूपसँ कहल अछि जे शवपर कोनो प्रकारक चोटक चेन्ह नहि छल ।

गबाहीसभसँ हमरा पर्याप्त प्रमाण भेटल अछि जे ई मोकदमा सोलहो आना जाली थिक । हमरा विश्वास अछि जे प्राथमिकी लिखओनिहार गोबरा जेना चौकीदार एहि जालक सूत्रपात कएनिहार थिक । ओकर प्राथमिकीक संग शेष समस्त बयान मिलओला पर ई बूझि पड़ैत अछि जे ओ मिथ्याकेँ सत्य सिद्ध करबाक लेल पर्याप्त चेष्टा कएलक, परंतु अदालतक जिरहक समक्ष अपन पक्षकेँ बचएबामे असमर्थ रहल । मोकदमाक प्रत्यक्षदर्शी गबाह बना जेना आ धकेइ जेना जे असामीक हाथक लाठीसँ सारियाक पिटएबाक बयान देलक अछि से दूनू गबाह चौकीदारक संबंधी थिक । ओकर घर मंगराजक हवेलीसँ दू कोस दूर छैक । आओर आध पहर रातिमे जागल रहि असामीक काजकेँ देखब ओकरा

लेल एकदम असम्भव छैक । पुलिस घटना-स्थलक जे नकसा दाखिल कएलक अछि ताहिसँ स्पष्ट प्रतीत होइछ जे जाहि स्थान पर ठाढ़ भए असामी द्वारा सारियाक हत्या करबाक बात कहल गेल अछि, ताहि दूनूक बीच तीन-तीन पाँत घरसभक व्यवधान अछि । सुतराम, तकरा भेदि दृष्टि जाएब नितान्त असम्भव, तथा अन्यान्य पार्श्वघटना, एवं जिरह कएला पर साक्षी सभ द्वारा देल गेल बेमेल उत्तरसँ एहि साक्षीसभ पर अविश्वास करबाक पर्याप्त कारण विद्यमान अछि । ई बेचारा-सभ सोझमतिआ देहाती अछि, तेँ दोसराक चढ़ओला पर एहन कार्य करबामे प्रवृत्त होइत अछि आ अपन काजक भीषणताकेँ बुझबामे अक्षम अछि । आओर गोबरा जेना जिरहक सामने बेरि बेरि फूसि बजैत पाओल गेल अछि तेँ हम ओकरा फौजदारी सुपुर्द करैत छी ।

असामीक पूर्व दुश्चरित्रता साबित करबा लेल पुलिस कैक गोट जे बयान लेलक ताहिसँ हमरा ई प्रमाण भेटल अछि जे असामी आन लोकक सम्पत्ति हस्तगत करबा लेल बुद्धिक प्रयोगमे पूर्ण निपुण अछि । तथापि कोनो व्यक्ति पर कहिओ आपराधिक बल-प्रयोग कएल अछि तकर कोनो प्रमाण नहि भेटैछ । स्पष्ट अछि जे एहन व्यक्ति द्वारा हत्या करब असंभव । आओर हत्या करबाक कोनो कारणो नहि अछि ।

मृत सारिया वा भगिया चंदक परतान, ढरकी, करघा, लटाइ, चरखी आदि बिनबाक बीज-वस्तु आ फुलही लोटा आदि आश्रमी वस्तु पुलिस असामीक घरसँ बरामद कएलक अछि । परन्तु असामी दिवानी अदालतमे जे सूची प्रस्तुत कएल अछि, ताहिसँ ज्ञात होइत अछि जे भगिया असामीक हाथ जे छओ बिगहा आठ कट्ठा जमीन कटबन्धक रखने छल, ताहि मामिलाक अदालती खर्चक तरेँ असामी नीलाम कराए ओसभ वस्तु कीनि लेलक । अवश्ये, ई बात मानि लेबाक पर्याप्त कारण विद्यमान अछि जे ओहि कटबन्धकक मोकदमा वा नीलाम आदिक समस्त मामिला छल-प्रपंचसँ भरल अछि, मुदा जेँ वर्तमान मामिलासँ ओकरा कोनो संबंध नहि छैक तेँ एहि ठाम हम ओहि पर विचार नहि कए रहल छी । असामी जे भगिया चन्दक छओ बिगहा आठ कट्ठा लाखराज जमीन लए लेलक आ ओकर सर्वस्व छीनि लेलक ताहिसँ दुखी भए भगिया बताह भए गेल होएत आ सारिया अनाहार सँ प्राण त्यागि देने होएत-हमरा से विश्वास अछि । किन्तु एहि लेल असामी पर हत्याक आरोप नहि लगाओल जा सकैत अछि ।

असामीक आँगनसँ पुलिस नेत नामक एक सिलेबिआ गाय उपर कएलक अछि । दूनू पक्ष ई स्वीकार कएल अछि जे ई गाए भगीचंदक छलैक । असामीक कहब छैक जे ओकर मोकदमाक खर्चक तरेँ अदालतक कर्मचारी द्वारा कएल गेल सार्वजनिक नीलामीमे ओ ई गाए डाक बाजि कीनलक । किन्तु ई बात सोलहो आना फूसि थिक । एहि हेतु दिवानी अदालतक दस्तखत आ मोहरसँ युक्त नीलामीक जे कागत प्रस्तुत कएल गेल अछि ताहिमे नेत गाइक कतहु उल्लेख नहि अछि । हमरा एहि बातक प्रचुर प्रमाण भेटि गेल अछि जे असामी शठता आ प्रतारणा द्वारा दोसराक सम्पत्ति हथिआ लेबामे खूब निपुण अछि ।

पहिने ओ एकटा अदना लोक छल । असत् मार्गे ओ बहुत राश धन-सम्पत्ति अरजि लेलक अछि, आओर गामक जमीनदार एवं मातबर लोक होएबाक कारणेँ आ भगी चन्दकेँ असमर्थ तथा प्रतिरोध करबामे अक्षम बूझि स्वाभाविक लोभसँ प्रेरित भए ओ उक्त गाए हरि लेलक अछि । एहि समस्त कारणकेँ दखैत

आदेश होइत अछि जे—

असामी रामचन्द्र मंगराज हत्याक आरोपसँ मुक्त कएल जाथि, आओर नेत नामक गाए हरि लेबाक अपराधी ओकरा छओ मासक सश्रम कारावास तथा पाँच राए टाका जुर्मानाक दंड देल जाए, आओर जुर्माना नहि चुकएबाक स्थितिमे तीन मासक आओर कारावासक दंड देल जाए । इति

मइ मास १७ तारीख सन् १८३७ इस्वी । एन. आर. जैकसन
सेशन जज ।

इजलास उसरि गेल । जज साहेबक बग्गी चल गेल । चारि सिपाही एक बंदीकेँ हथकड़ी पहिराए हाजतसँ जहल पहुँचाबए चलल । ओकील राम राम लाला कचहरीक सामने बड़क गाछ तर बैसल छलाह । बन्दी पर आँखि पड़ितहिँ दूरहिसँ जोरसँ कहि उठलाह—"देखलहुँ मंगराज, आइ अहाँक लेल साहेबसँ कोना लड़लहुँ । देखि लेलहुँ ने ! फाँसीसँ बचा देलहुँ । चिन्ता नहि करब, सोझे जहल चल जाउ । अहाँ जा एको टाड़ा तेल नहि पेरने रहब ता हम उच्चमत न्यायालयमे अपील कए अहाकेँ छोड़ाए लेब ।"

हमरा निश्चित खबरि अछि जे अपीलक प्रसंग किछुओ नहि कएल गेल अछि ।

बाइसम परिच्छेद

गोपी साहुक दोकान पर

विरूपा नदीक कछेर । गोपालपुर घाट । कटक जएबाक बाट एहीठामसँ फूटल अछि । लोक एहिठाम नदी टपैत अछि । एहिठाम पहिने गोपालपुर गाम छल । गत भादवक अष्टमी दिन जे बुढ़िआ बाढ़ि आएल, ताहिमे गाम भासि गेल । गाम तँ भासि गेल मुदा ओकर नाम रहि गेलैक । घाटक उपर एक झमटगर बड़क गाछ छैक । गाछ तर गोपी साहुक दोकान अछि । दोकान सात हाथ लम्बा पाँच हाथ चाकर अछि । ओकर बीचसँ आधा भागमे कोठली अछि, आधा भाग खुजल अछि । आगूमे दू हाथ असोरा अछि । दैवयोगसँ कोनो बाट बटोही जँ रातिमे ओतए रहि जाइत अछि तँ एहि खूजल स्थान पर भानस करैत अछि। गोपी बूढ़ भए गेल अछि, खेती-पथारी पार नहि लगैत छैक । परुकाँ साल बुढ़िआक स्वर्गवास भेलासँ मानू ओकर डाँड़ टूटि गेलैक । बेटा बूढ़ाकेँ कोनो काज-धंधा करए नहि कहैत छैक । मुदा गोपी संचमंच भए बैसएबला लोक नहि । कहबिओ छैक, बेकारीसँ बेगारी भला । वर्ष भरिसँ ई दोकान चला रहल अछि । पहर दिन उठला पर खा-पी कए दोकान पर चलि अबैत अछि, आ साँझखन दोकानमे नालाबाला बड़का टा ताला लगा कए आङन चलि अबैत अछि । घर दोकानसँ आध कोस पर छैक । दोकानमे चाउर, दालि, नोन, चूड़ा, तमाकू आदि नाना वस्तु रखैत अछि । साँझ खन दोकान बंद करैत काल सभ सौदा छिट्टामे भरि गाम पर लए अनैत अछि । गोपी गौआँसबसँ कहैत रहैत अछि, आइ-काल्हि ओ बड़का शाहखर्ची भए गेल अछि । साँझखन सरिसो-मसुरी भरि हफीम नहि खाए तँ रातिमे नीन नहि होएतैक । आ हफीम खाएत तँ जाधरि चूड़ा कि सातु मुहमे नहि लेत ता कोनो काजे नहि कए सकत । तमाकूक आदति तँ छैके । जे हो, खर्च तँ अपने कमाइसँ चलैत छैक । बेटासभ दोकान करबा लेल जे पूजी देने छलैक, ताहिसँ जे पाइ-दूपाइ आबि जाइत छैक ताहीसँ काज चलि जाइत छैक । मूल पूजीकेँ नहि छूबैत अछि ।

भदबारिक मास थिकैक । भरि दिन मेघ लागल अछि । दू-तीन अछार बरसिओ गेलैक अछि । पानि पड़ए टपर-टपर, बादमे थाल छपर-छपर । बाट-बटोहीक पता नहि छैक । बेरो घड़िए भरि शेष होएत । मेघ लागल छैक तेँ एखनहिसँ अन्हार पसरल-जकाँ लगैत अछि । गोपी दोकान दिस ताकि बड़बड़ाएल, "जानि नहि, ककर मुह देखि उठलहुँ । एक पाइक तमाकुओ नहि बिकाएल ।" पथिआमे सौदा समेटि माथमे गमछा बान्हि गोपी असोरा पर बैसि आकाश दिस तकैत बड़बड़एल,"एखन बेर खसल नहि अछि ।" आ

नदीक घाट दिस तकैत रहल जे कतहुसँ कोनो बटोही पार भए किनसाइत आबि जाए । नदीक घाटकेँ एकटक देखैत भजन गाबए लागल—

साँझ पड़ल दिन बीतल रे समय अकारण गेल ।
हरिक भजन नहि कएलहुँ रे अब पछताबक भेल ।।
बहि गेल बएस नदी जकाँ रे काल-सिन्धुमे गेल ।
से पुनि घुरि नहि आओत रे उसरल जीवन-खेल ।।

''हओ दोकानदार, रहबा लेल जगह भेटतैक ?'', गोपी चेहा कए देखलक, दोकानक सामने दू टा बटोही ठाढ़ अछि । डाँड़मे खड़ुकी पहिरने, माथमे गमछा लपेटने, पीठ पर छोट-छीन पोटरी लटकओने, कान्ह पर ताड़क पातक छतरी लगओने एकटा पुरुष रहए; आओर ओकर पाछू-पाछू पटंबरी पाढ़िक साड़ी पहिरने, कुंभकर्णी पाढ़िक एक सूती नूआ चौपेति उपरसँ ओढ़ने एकटा स्त्री । स्त्रीक सर्वांग झाँपल छलैक, केवल नकमुन्नी आ ओहि पर नचैत मजूर देखा रहल छल । लोक कहैत अछि भेखे भीख । कपड़ा-लत्ता देखि गोपीकेँ बुझा गेलैक जे पक्का महाजन अछि । दोकानक असोरासँ झटपट उतरि ओ दूनू गोटेकेँ प्रणाम कएलक आ बाजल, ''हँ, आउ-आउ, दोकान पर आउ । सभ वस्तु देब, मानस-भात करू।'' दूनू गोटेक पाएर देखि गोपी दू लोटामे पानि देलक आ कोठलीक प्रशस्त स्थान पर टूटल-फाटल सन पटिआ बिछा देलक । पहिने स्त्री पाएर धोलक आ भीजल वस्त्र छाड़ि पटिआ पर जाए, पलथी मारि बैसि गेलि । ओकर देहमे गहना देखि गोपी गप्प-शप्पमे 'जी, आज्ञा, मालिक, मलकाइनि' आदि सम्बोधनक सङ्ग गप्प करैत रहल । ओ स्त्री गोपीक भक्ति देखि प्रसन्न भए गेलि । आँचरक खूँटसँ चौअन्नी खोलि गोपीक दिस फेकैत बाजलि, ''हओ, आब भानसक चीज-वस्तु देह ने ।'' गोपी सतृष्ण आँखिएँ चौअन्नी उठा लेलक, दूनू हाथसँ ओकरा उलटा-पुलटा कए दू-तीन बेर निहारलक, दू बेर ओकरा चुमलक, दू बेर माथमे भिड़ओलक आ साँचीक खूँटमे बान्हि नाभि लग खोंसि लेलक । गोपीक आकृतिकेँ देखि लगैत छल जेना ओ फेर मनहि मन दोहरा रहल हो—''आइ जानि नहि ककर मुह देखि उठलहुँ जे सौदा देबासँ पूर्वहि चौअन्नी हाथ आबि गेल ।'' दोकान खुजबाक दिनसँ आइ धरि एना तँ कहिओ नहि भेल छलैक । गोपी भानसक सभ चीज चाउर, उड़ीदक गोट दालि आ नोन जुमाए देलक आ लुत्ती फूकि-फूकि आँच सेहो पजारि देलक । स्त्री भात रान्हए बैसलि आ पुरुष उगहनि आ घैल लए पानि भरए चलल । स्त्री पुछलैक, ''बूढ़ा, एहिठाम दूध-घी किछु भेटत ? दूध-घी नहि रहए तँ हमरा धसिते नहि अछि ।'' गोपी बाजल—''जी, ठीके कहल, ठीके । नहि भेटल तहिँ ने ! नहि तँ की ई सभ वस्तु कतहु सरकारक कंठ तर जाए । जलखइ लेल उत्तम महीन धोल-फटकल चूड़ा रहैत, गाइक खाँटी दूध रहैत, मिसरी नहि तँ कम सँ कम नबका दक्षिणी गुड़ रहैत, सचार लेल सौरा नहि तँ कम सँ कम दरही माछ रहैत, मालभोग केरा रहैत, खेरहीक दालि रहैत, दूध-घी रहैत । की करू ? सरकारक पदारविन्दक पराग-रज हमर भाग्यसँ कोना

ने कोना एतए आबि गेल । सरकार किछु पाइ दितिऐक तँ गाममे घूमि-फिरि ताकि अबितहुँ ।'' स्त्री फेर एक चौअन्नी फेकि देलक । गोपी पहिनहि जकाँ ओकरा खूँटमे बान्हि गाम दिस दौगल । लगभग आधा राति बितला पर गोपीक छोटका बेटा वृन्दावन केराक पात एक दोनामे दू-तीन तोला घी, माटिक एक कोहीमे सेर भरि दूध आ दूगोट भाँटा दोकानक असोरा पर रखैत बाजल, ''सरकार, बाउ पठओलक अछि, ओकरा रतौन्ही छैक, अपने नहि आबि सकल ।''

दोकानमे आब दुइए गोटे रहि गेल-स्त्री भानस करैत आ पुरुष ओरिआओन करैत । दूनू गोटेमे गप्प शुरू भेल ।

स्त्री—सुनलेँ रे गोविन्दा, सुनलेँने ? कान खोलिकेँ सुनि ले ने । सभ केओ हमरा 'मलिकाइनि' कहि रहल छल । जतए कतहु जाएब लोक हमरा मलिकाइनिए कहत । कह तँ, तोरा केओ मालिक कहलकौक ? चल, कटक चल । देखिहेँ, तोरा की सँ की बना देबौक । चारि दिन भेल, तोरा बुझबैत-सुझबैत थाकि गेलहुँ ।

गोविन्दा—नहि नहि, चम्पा मलिकाइनि, चलू अपन गाम चली, ओतहि रहब । खेत-पथार कीनब, खेती करब, हरबाह राखब ।

चम्पा—अरे, लोक ठीके कहैत अछि जे

सबसँ अधम अन्हरिया राति ।
ताहूसँ अधम भंडारी जाति ।।

अरे, खेती-पथारीसँ की होएतौक ? जेहो किछु संग अनलहुँ अछि, सेहो सब बरख-दू बरख मे बिला जाएत ।

गोविन्दा— नहि-नहि, से नहि होएत । हम तँ गामे जाएब । कतेक दिन भेल, गाम परक कोनो हाल-चाल नहि भेटल । हमरा मनमे उचाट लागि गेल अछि । से नहि, तँ हमर बखरा दए दिअऽ । हम चल जाएब; अहाँकेँ जे मन हो से करैत रहू ।

चम्पा— अएँ बखरा ? बखरा कथीक ? बड़ भेलाह अछि बखरा लेनिहार । कहलकै जे

पूआ खाए पड़ोसिनि, देखलो न जाए ।
सीहनि गोइठा गूड़ सङे खाए ।

ओतहु धन-सम्पति हमर छल, एतहु हमर अछि । चोरा कए तँ नहि अनलहुँ अछि । आइ सात दिन भए गेल, की वर्षा की थाल, एहि गामसँ ओहि गाम, एहि ओलतीसँ ओहि ओलती, बौआ-ढहना कए तोँ मारि देलेँ हमरा । कह तँ, मालिकक आराम-कोठलीमे जे तीन ठाम अशर्फी, चानीक रुपैया, सोनाक गहना छलैक से के गाड़ने छल ? सुनसान रातिमे हमही खाधि खुनैत छलहुँ, आओर, हम आ मालिक दूनू गोटे मिलि ओकरा गाड़ैत छलहुँ । तोँ की जानए गेलेँ ! ई सभटा धन हमर नहि तँ आर ककर छैक ?

गोविन्दा—मानल जे रुपैया गाड़ने छलहुँ, सभ किछु कएने छलहुँ, मुदा जँ कुंजी नहि भेटल

रहैत तँ किछु हाथ लगैत ? कुंजी अनबाक बुद्धि के देलक ? हमहीं ने ।

चम्पा— ओहो ओहो ! पाएर घुघरू-नहि एक, छुच्छे पटंकब कतेक । बड़ बुद्धिबाला भेलाह ! हमरा की बुद्धि नहि अछि । देखलैं, ओहिदिन मालिकक पाछू-पाछू धीपल बालु मे दू कोस दौगैत-दौगैत तरबामे फोका भए गेल । कनैत-कनैत कंठ बाझि गेल । से कि तोंही फुरओन छलैं ? खूब कहैछँ तों । हम जे ओहि मसोमात बाभनिक संग संबंध जोड़ि रातिमे ओकरा संग रहलहुँ, आ ओकर घरमे राखल पेटीसँ सनदक कागत बाहर कए अनलहुँ सेहो की तोरे फुरओने ?

गोविन्दा आर किछु नहि बाजल । रुसिकैं असोरा पर आबि बैसि रहल । चम्पा सेहो चुप भए गेलि । एके गुरूक चेलबा, एके दूनूक खेलबा । चतुर-चतुराक गप्प चलैत रहल । ने केओ उन्नैस आ ने केओ बीस । केओ पाछू हटनिहार नहि । दूनू गोटे एक दोसराकैं नीक जकाँ चिन्हैत अछि । चम्पाकैं होइत छैक जे गोविन्दा जँ गाम गेल तँ सभटा सोन-चानी आ सभटा रुपैया एहि नौआक घर चल जाएत । फेर घुरिकैं आबि नहि सकत । संगहि, गोविन्दाक माए आ बहुक गप्प सेहो मोन पड़लैक । एम्हर गोविन्दा ई सोचए लागल छल जे जँ चम्पा कटक शहरमे रहए लागत तँ ओकरा वशमे राखब सम्भव नहि होएत । पतचटनी पिलिआ आगाँ मे नब पात देखि पहिलुका पात पर पाएर दैत आगू बढ़ि जाइत अछि । जेना विपरीत दिशाक बल समान रहने दूनू अपन-अपन स्थान पर थिर रहि जाइछ, तहिना दूनू अड़ल रहल ।

राति पाँच-छओ घड़ी बीति गेल होएत । दालि-भात रन्हा गेल छल । चम्पा पल भरि बिलमि की ने की सोचलक आ लग आबि फुसफुसा कए निहोरा कएलक, "देख गोविन्दा, तोँ तँ कहैत छैं, ओहि पारसँ चारिए कोस पर तोहर घर छौक । तखन चल कटके । हम किछु टाका दए देबौक, तोँ आबि गाम पर पहुँचा जइहैं । आ यदि हमर बात नहि मानबें, तँ टाका आ सोन के कहए, फूटल कौड़िओ नहि देबौक । आ, बड़ भूख लागि गेल अछि, आ, खा-पीबि ले ।" गोविन्दा सेहो भूखसँ छटपटा रहल छल । खएबा लेल उनमुनाइओ गेल छल । मुदा जहाँ ओ उठबा-उठबा पर भेल कि चम्पा अन्हारमे ओकर उनमुनाइत मुह नहि देखि ओकर चुप्पी पर खिसिआ गेलि आ बाजए लागलि, "अरे मुहझौंसा, जो ! नोकर कैं मालिक कहिऔक तँ माथ पर चढ़ि बैसत । अरे जो, ठुसबैं तँ ठूसि ले ! नहि ठुसलैं तँ नहि ठुसलैं, हमरा की !"

गोविन्दा उठैत-उठैत सहसा बैसि गेल आ चम्पाकैं आँखि गुड़ारि तकलक । मनमे कहलक, हँ, हम बहिआ आ तोँ मलिकाइनि । मुदा, मुह खोलि बाजल नहि । गोविन्दा बड़-बड़ सौभाग्यक सपना देखि रहल छल । कतेक खेत-पथार होएत, हर-बरद होएत, हरबाह-चरबाह होएत, कतेक दुधगरि गाए खूटा पर बान्हल रहत, कतेक खदुका ऋण-पैंच लेल दरबज्जा पर बैसल रहत ! सभ सपना एकहि चोटमे भड़कुस्सा भए गेलैक । आशा बिलाए गेलैक । दिन भरि थाल-पानिमे चलैत-चलैत देह थाकि चूर भए गेल छैक,

ताहि पर सँ प्रबल भूख लागल छलैक । गोविन्दा एतेक काल धरि सोचमे वैसल छल । आब जखन चम्पा 'नोकर' कहि अपमान कएलक तँ पूरा देहमे आगि लागि गेलैक; जेना तारुमे वीछ बीन्हि लेने होइक । किछु बाजि नहि भेलैक । आब बुझैत अछि, ओकरा सन-सन जँ दू गोटे रहए तैओ चम्पासँ जीति नहि सकैत अछि । कतेको बेर मंगराजक पट्ठा जुआन हरबाहकेँ ओकर डंटासँ पिटाइत ओ देखलक अछि । भुस्सामे राखल सुनगैत चिनगी जकाँ ई भावना भितरे-भीतर ओकर मनकेँ डाहने जा रहल छलैक ।

चम्पा दू पात पर भात परसलक । भातक बीचमे बाटी जकाँ खाधि बना दालि ढारलक । दूधक जे कोही दए गेल छलैक तकरा उठा एक बेर बाहर दिस ताकि अपन भात पर ढारि लेलक । गोविन्दा अन्हारमे बैसल-बैसल देखि रहल छल । दूध ढारैत देखि ओकरा बुझएलैक जे केओ ओकर देह पर अँगोरा उझिलि देने हो । मनमे कहलक, एक रती दूध मे तँ ई हाल, सोन-चानीक बेर की होएत ।

चम्पा सोर पाड़लकैक, "रओ, इएह छौक तोहर भात । खएबेँ तँ खा ले । बेसी गोड़ धरए हमरा नहि अबैत अछि ।" ई कहि चम्पा मुह-हाथ धोए पंजा भरेँ बैसि गेलि आ सुड़-सुड़ कए पैघ-पैघ कओर मारैत क्षणहिमे पूरा पात चाटि गेलि । चूल्हि लग हाथ-मुह धो, फेर एक बेर बाहर दिस तकलक आ बजओलक, "रओ आ, खा ले ने ।" कोनो उत्तर नहि पाबि तमसाएल बाजलि, "अरे, एकरहि कहैत छैक अघाएल बककेँ पोठी तीत ।" गोविन्दाकेँ ई बात तेना लगलैक जेना पजरल आगिमे केओ खढ़ झोँकि देने हो । एकर बाद चम्पा मोटरीक आधा कपड़ा पटिआ पर बिछा देलक आ मोटरीकेँ जुगुता कए माथ तर राखि चित्ते ओलड़ि गेलि ।

गोविन्दा असोरा पर ओहिना बैसल चिन्तामे डूबल रहल । ओ आब नीक जकाँ बूझि गेल छल जे नागिनिसँ ओकर मणि लए लेब सोझ नहि । गोविन्दपुरक लोकसँ हम जे किछु सुनल अछि ताहिसँ हमर अनुमान अछि जे गोविन्दाकेँ किछु आओर-आओर आशा छलैक । स्त्रीसँ मान, प्रेम, भक्ति, अनुगामिता । आदिक आस राखब पुरुषक सहज स्वभाव थिक । चम्पाक आचरणसँ लगैत छैक, ओ चाहत तँ गोविन्दासँ प्रेम करत; नहि चाहत तँ ओकरा लेखेँ गोविन्दा एक टा नोकर मात्र थिक आ सदा नोकर रहत । गोविन्दा एही स्थितिमे कखन धरि बैसल रहल तकर सुधि ओकरा नहि रहलैक ।

घोर अन्हरिआ राति । हाथकेँ हाथ नहि सूझए । दछिनाही बसात सन-सन बहैत । थम्हि-थम्हि कए अढार पर अछार । बड़क गाछ अन्धकारक अकादारुण गदा जकाँ ठाढ़ भेल भंयकर शब्द करैत । बादुर दल छोट-छोट श्यामवर्ण पताका जेकाँ चारूकात उड़ि-उड़ि कए ओहि करिआ गदा मे लटकल, आ किछु वाह्य आकाशमे फहराइत आ बीच-बीचमे, बड़क फर कचर-कचर कए खाइत । बरक फड़ टपटप नीचाँ खसैत । चारूकात पैशाचिक ध्वनिसँ मुखर । कोठलीक भीतर चम्पाक फोँफ काटब आरो डेराओन लागि रहल छल । ओही तमोमय गदाक नीचाँ दू जानवर 'खें खें' कए एक दोसराकेँ हबकि रहल

छल । से सुनि गोविन्दा चेहा उठल । बाहर दिस तकलक । कोठलीमे जरैत डिबिआक प्रकाश क्रमशः क्षीण होइत जा रहल छल । ओहि दीपक मन्द प्रकाश ओहि घरक तिमिर-तल पर ओहिना पड़ि रहल छल जेना अनन्त व्योम पर क्षितिजसँ निःसृत आसन्न साँझक अन्तिम एकाकी रक्ताभ किरण पसरैत अछि । गोविन्दा नीक जकाँ निहारि कए देखलक । आमक पखुआ खाइत-खाइत दू टा गीदर कटाउझ कएलक । एक गीदर दोसराकेँ हबकि भगाए देलक आ समस्त पखुआ पर अपन अधिकार जमाए लेलक । गीदरक एहि काजकेँ देखि, जानि नहि, गोविन्दाकेँ की की भावना भेलैक । ओ उठि बैसल आ चारूकात ध्यानसँ निहारलक । आस्ते, अत्यन्त आस्तेसँ उठि चम्पाकेँ आपादमस्तक निहारि आएल । ताख पर लोहखरक झोड़ा जे राखल छलैक से आस्तेसँ उठा अनलक आ जानि नहि ओहिमे सँ की की बहार कए लेलक । डाँड़मे कसि कए गमछा बान्हि लेलक आ ओहि वस्तुकेँ कसि कए पकड़ि लेलक । एक बेर फेर दबले पएरेँ चम्पाकेँ बड़ मनोयोगसँ एकटक निहारैत रहल ओहिना जेना बनैआ चीता माटि पर भेर भए सूतलि सुगरनीकेँ देखैत हो । ओकर दूनू आँखि चढ़ल छलैक आ दहिना हाथेँ कोनो वस्तुकेँ कसि कए पकड़ने छल । ईसब ओ ततेक आस्ते आ सतर्कतासँ कए रहल छल जे श्वासोकेँ नहि चलए देअए । दहिना पाएर उठबितहिँ एकटा ज्योति चम्पाक उपरसँ होइत देबाल पर पड़ल । गोविन्दा अकचका कए एकाएक ओसाराक नीचा आबि गेल । चारूकात निहारलक, कतहु किछु नहि छलैक । पूर्वहि जकाँ घोर पैशाचिक शब्द । गाछक नियला ठाढ़िसँ किछु तिमिर-खंड पाँखि फरफरा कए भागि गेल । गीदर जे पखुआ खा रहल छल, लंक लेलक । ओकर हाथमे जे वस्तु छलैक से प्रकाश पड़ितहिँ चमकि उठल ।

गोविन्दाकेँ रहस्य बुझबामे पाँगठ नहि रहलैक । पहिने सँ बेशी साहस बटोरि ओ पाएर जँतने आस्ते-आस्ते कोठलीमे पाएर देलक, आ जेना चीता सुगरनी पर झपटैत अछि तहिना चम्पा पर झपटल । ठीक ओही कालमे पेनी धरि जरल डिबिआ भक दए धधकि फक दए मिझाए गेल । कोठलीमे एक कारुणिक घिघिऐनीक संग हाथ-पाएर पटकबाक शब्द किछु काल धरि होइत रहल, आ सहसा मिझाए गेल । घिघिअएबाक शब्द सुनि गीदर हड़बड़ा कए पड़ा गेल । गाछक डारिमे लटकल बादुरसभक पाँखि कर्कश ध्वनिक संग फड़फड़ाए लागल । ओही काल एकटा तेज बसातक झोँक आबि गाछक डारिकेँ दोकान दिस नमाए कए झकझोरि देलक । ओहि ठामक अदृश्य अन्धकारमे क्षणभरि लागल जेना प्रलय आबि गेल हो ।

तैसम परिच्छेद

कर्मफल

गोपालपुरक समीप विरूपा नदी बड़ चाकर अछि ! ओकर पाट आध कोससँ कम नहि होएतैक । किंन्तु प्रवाह ओतेक चाकर नहि छैक । नदीक प्रवाहक्षेत्र कम चाकर होइते छैक । प्रवाह नदीक दछिनबारि कछेर दिस छैक । गोपालपुरक घाट दिस बालुए-बालु । ओहने कोनो बड़का बाढ़ि आएल तँ पानि घाट धरि पहुँचि पबैत अछि । दस-बारह दिन सँ कोनो तेहन वर्षा नहि भेल छलैक तँ नदीक एहि कातमे छाड़नि जकाँ पड़ि गेल छल । परसू तेसर पहरसँ कनेक-कनेक पानि पड़ि रहल अछि । पाँतीक पाँती, थोकाक थोका फेन भासल जा रहल अछि । कुम्हर-सन फेनपुंज कतहु-कतहु भाउरिमे फँसि छहोछित भए जाइत अछि आ छोट-छोट खंडमे पसरि जाइत अछि । कतेको काठक धरनि, डारि-पात, घास-फूस भसिआएल जा रहल अछि । बाढ़िक कारणेँ एहिठाम गौमुँहा गोहिक उपद्रव बहुत बढ़ि गेल अछि । थूथूनबाला गोहि तँ ओहुना सए-सए भेटत । तँ एहिठाम ठेहुन भरिसँ बेशी पानिमे पैसबाक साहस ककरहु नहि होइत छैक । ताहिपर नबका पानि पाबि तँ गोहि आओर बेशी माति जाइत अछि । नबका बाढ़िक कोनो भरोस नहि, फेनोसँ गोहि बहराए चोट कए दैत अछि । घाट पर राति-दिन एक डँगी खूटल रहैत अछि । एहिसँ गौआँ आ सौदाबारी कएनिहार लोकसभ पार उतरैत अछि । सरकारी डाक पार करएबा लेल घटवाह माझी खोपड़ी बान्हि राति-दिन बाट तकैत रहैत अछि । सरकारसँ दू टाका महिनवारी भेटैत छैक । गामक लोक नगद किछु नहि दैत छैक, अगहनमे धान कटबाक समय घटवार खेत-खेतमे घुमि सभ खेतसँ एक-एक बोझ धान पौनीमे ओसूलि अनैत अछि । हाटक दिन केओ हटबाह कनेक-मनेक तरल सुकठी, केओ एक दूटा भाटा, एक चुटकी नोन, कि दू बून तेल दए दैत जाइत छैक । कोनो-कोनो दिन कोनो पैघ महाजन आकि अनचिन्हार बटोही आबि जाइत छैक तँ ओ किछु पाइ-कौड़ी खाजा-मधुर खएबा लेल दए दैत छैक । परन्तु थानाक दरोगा, मुंशी, कानूनगो आदि सरकारी अमला, कैं पार करबाक दिन कनैठी, चटकन आ गारिक दस्तूर कहिओ कम नहि होइत छैक । नाविक चाँदिया बेहेरा कहैत अछि, एही घाटक घटबाहि करैत-करैत हमर बएस बीति गेल । ओकरा सन ऐंठल घमंडी घटबाह एहि खंड-मंडलमे भेटब कठिन ।

राति बीति गेल अछि । राति भरि वर्षा झहरैत रहल । झाँट सेहो बड़ जोरगर रहए ।

एखन पानि वा बसात ठमकल अछि, परंतु मेघ ओहिना मड़रा रहल अछि । कतहु-कतहु फाँक छैक जाहि बाटेँ छोट-छोट तारा अकारण चमकि-चमकि हुलकी मारि दैत अछि आ फेर नुका रहैत अछि । ठीक एही समय एकटा बटोही छोट-छीन मोटरी पीठ पर लटकओने घाट लग नदीक कछेरे देने घूमि रहल छल । काते-काते चारि-पाँच सए डेग जाए-जाए पुनः घाट पर घुरि-घुरि अबैत छल । लगैत अछि जेना ओ हेलि कए घाट पार करबाक गओँ तकैत हो, मुदा साहस नहि भए रहल छलैक । अन्ततः घाट पर ठाढ़ भए हाक देलक, ''हओ घटबरिआ भाइ, हओ घटबरिआ भाइ ।'' चाँदिया बेहेरा बालुमे लग्गा गाड़ि पैघ रस्सासँ ओहिमे डेँगी खूँटि देने छल आ घाटक कातक खोपड़ीमे सुति रहल छल । बटोही फेर एक बेर जुगुता कए टाहि मारलक, ''हओ घटबरिआ भाइ, हओ घटबरिआ भाइ ।'' टाहि मारि ओ स्वयं अकचका-जकाँ गेल आ पाछू दिस तकलक । घटबार नीन पड़ि गेल की ? एतेक हाक देलो पर किएक नहि उत्तर दैत अछि !'' बटोहीकेँ बुझल होइक वा नहि, हमरा तँ पक्का बुझल अछि जे घटबार घड़ी भरि राति रहितहिँ उठि बैसैत अछि । शास्त्रकारक कहब छनि ब्राह्ममूहुर्तमे शय्या त्याग करी । ई बात नहि जे शास्त्रक आज्ञा-पालनार्थे चाँदिया एतेक भोर उठैत हो । कहिओ काल रातिक अन्तिम पहरमे हाक पड़ि जाइत छैक । तेँ एतेक भोरे जागि जाइत अछि । एकटा बात आरो । साँझ पड़ैत घाट बन्द भए जाइत अछि । झटपट दू-चारि कओर खाए ओ साँझे सुति रहैत अछि । तखन भरि राति केओ कतेक सूतत । खोपड़ीक भीतर चाँदिया चुक्कीमाली भए ठेहुन पर माथ रोपि बैसल अछि । आगूमे आगिक बोरसि राखल छैक । भुस्साक आगिकेँ दूनू हाथसँ खोरि-खोरि पसारि-पसारि तपैत अछि । प्रायः ओ सोचि रहल अछि जे एहि कुसमयमे ई बटोही कतएसँ आएल । सरकारी अमला तँ ई अवश्ये नहि थिक । ई तँ भाइ-भाइ करैत अछि । सरकारी आदमी रहैत तँ घरबालीसँ सम्बन्ध जोड़ैत टाहि दैत । केओ होथु । टाहि मारैत, रहथु । पह फटले पर उठबनि । फेर टाहि आएल, ''घटबरिआ भाइ, कने बहराउ तँ अओ । मधुर खएबा लेल किछु दए देब ।'' ई सुनि चाँदिया अपनाकेँ रोकि नहि सकल । मधुर खएबा लेल किछु देल जएबाक बात सुनितहिँ दू-तीन बेर खखसि देलक । घटबारक कोन कथा, मधुरक चर्च सुनि केहन-केहन पैघ-पैघ लोक खकसए लगैत अछि । चाँदिया खोपड़ीक भितरेसँ उत्तर देलक, ''तोँ के टाहि मारैत छह ? एखन थम्हह; राति बीतए दहक । एखन तँ लाख टाका देलो पर बाहर नहि होएब ।''

बटोही - सुनह, हओ घटबार भाइ ! कटकमे हमरा एकटा मोकदमा अछि; जल्दी जाएब बड़ जरूरी अछि । लेह पाँच टाका । झट दए पार कए दएह ।

पाँच टाका ? ई की ? अएँ एक व्यक्तिक खेबा पाँच टाका ? चाँदियाक जीवनमे एहन घटना तँ कहिओ नहि घटल छल । एक बेर पाँच टाका ओकरा हाथमे कहिओ पड़लैक अछि कि नहि, ताहिमे हमरा घोर सन्देह अछि । क्षण भरि पहिने लाख टाका भेटलो पर खोपड़ीसँ नहि बाहर होएबाक जे संकल्प कएने छल तकरा लगले बिसरि गेल । लाख

मे पाँच टाका घुरा देला पर शेष कतेक रहतैक ? एहि पर तर्क करब प्राय: व्यर्थ बुझलक । शंका ई छलैक जे बटोही घुरि ने जाए । राति बितला पर खेबामे एक पाइ आ बड़ भेल तँ एक अधन्नी, एहिसँ बेसी नहि देत । चाँदिया खोपड़िएसँ हाक देलक, ''थम्हह, इएह अबैत छी ।'' आगिक उपर फूक मारि चिलम सुनगओलक आ हाथमे लग्गा-पतवार लए खोपड़ीसँ बाहर आएल । खडुकीकेँ लपेटि डाँड़मे कसि कए बान्हि लेलक । माथमे गमछा लपेटि लेलक । गमछाक मुरेठाक उपर झाँपी (छतरी) पहिरि लेलक । बटोहीकेँ कहलक ''लाबह, जे देबाक छहु से लाबह । तोँ छलह तँ खोपड़ीसँ बाहर भेलिअहु, आन केओ रहैत तँ किन्नहु नहि उठितहुँ ।

बटोही पाँच टाका दए देलक । घटबार एक दू तीन, चारि-पाँच करैत तीन बेर गनि लेलक । कहल गेल अछि— पानि पीबी छानि कए, पाइली गनिकेँ । चिलम पर जोरसँ दम मारैत ओकर इजोतमे रुपैया एक बेर फेर देखि लेलक । ढट्ठाक खूँटमे बान्हि डाँड़मे नीक जकाँ खोंसि लेलक आ फेर आकाशमे चारू भर तकलक । राति बीति गेल छलैक । बटोही नावक अगिला माँगि पर बैसल । घटबार कहलकैक, ''ठीकसँ सम्हरि कए बैसह ।'' ओ दहिना हाथेँ तीन बेर डेँगीकेँ छूबि मथा लगा लेलक, आ 'जय गंगा मैया' कहि नाओ पर चढ़ि गेल । ऊपरसँ सूपक सूप पानि बरसि रहल छलैक । नाओ सम्हारब कठिन भए रहल छलैक । जा पतबार चलाबए-चलाबए डेँगी बहुत नीचाँ दिस भासि गेलैक । लग्गा ठेकबैत- ठेकबैत छओ आना धार पार कए गेल छल आ दस आना बाँचि गेल छलैक । राति प्राय: बीति गेल छलैक आ पह फटबा पर छलैक । गोपालपुर घाट लग पराती सुनि पड़लैक—

ए-ए-ए.....
मृगया चलल लखन रघुवीर । यती एक पहुँचल तनिक कुटीर ।।
कहल हे सीय भीख दे मोहि । नहि तँ सराप देब हम तोहि ।।

बटोही डेँगीमे बैसल बरोबरि गोपालपुर घाट दिस ताकि रहल छल । अन्हारक भेदन करैत गीतक अविरल बहैत स्वर-लहरी ओकर कानमे पड़ि रहल छलैक । से सुनि-सुनि ओ चंचल भेल जा रहल छल । हड़बड़ा कए ठाढ़ भए गेल आ ओहि दिस ताकए लागल । घटबारक पूरा ध्यान डेँगी चलएबामे लागल छलैक । गीतक बोल ओकर कानमे नहि पड़ि रहल छलैक । बटोहीक ठाढ़ भेलासँ डेँगी डगमगाएल तँ ओ कहलकैक, ''हओ, बैसि जाह, बैसि जाह ।'' बटोहीक भाव देखि घटबार सेहो घाट दिस तकलक आ बाजल, ''ओह, डाकलए हरकरा पहुँचि गेल !''आ ई कहैत ओ डेँगी फेरि लेलक । बटोही व्याकुल भए बाजल, ''हओ घटबरिआ भाइ, डेँगी नहि घुराबह ! हमरा पार करा दैह, तखन घुर बिअहा ।'' राति बीति गेल छल । कनेक-कनेक प्रकाश छिटकि गेल छलैक । घटबार देखलक, बटोहीक पूरा देह शोणितक छिटकासँ भरल छैक । कपड़ामे शोणित, हाथमे शोणित, मोटरी पर शोणित सभ शोणिते शोणितामय अछि; जेना शोणितक फगुआ खेला

कए पाएरसँ माथ धरि लाल पलास बनि गेल हो । घटबार चेहाएल । पुछलकैक, ''ई की हओ ? ई शोणित कतए सँ अएलहु ? ककरहु मारिकेँ आबि रहल छह तोँ ?'' बटोही झटपट मोटरी उठओलक आ जा नाविक हाँ हाँ करए ता ओ धारमे कूदि गेल । पन्द्रह-बीस हाथ हेलि कए गेल होएत कि एक गौमुहा गोहि ओकरा टपसँ धए लेलक । मोटरी किछु दूर धरि भसिआइत-भसिआइत डूबि गेल । चाँदिया देखैत रहि गेल ।

ई के आदमी छल ? कतए सँ आएल छल ? पाठक बूझए चाहथि तँ ध्यान देथि । हम भेलहुँ ग्रन्थकार । प्राय: सर्वज्ञ । ओ गोहि जे एहि बटोहीकेँ पकड़ि लए गेल, से किएक लए गेलैक, कतए लए गेलैक, ओकरा संग सद्व्यवहार कएलक कि असद्व्यवहार ई समस्त गुप्त विषय हमरा नीक जकाँ बूझल अछि । तथापि जेँ चाँदिया बेहेरा कोनो कारण-वश एहि बातकेँ कतेको दिन तक नुकओने रखने छल तेँ हमहुँ एकरा प्रकाशमे अनबा लेल प्रस्तुत नहि छी । ओ आदमी जखन डोँगीसँ छड़पि पानिमे कूदल छल, तखन बीत भरि नाम एक सनद ओकर मोटरीसँ ससरि डोँगीमे खसि पड़ल छल । चाँदिया ओकरा खोपड़ीमे नुकाए राखि लेने छल । किछु दिनक बाद कोनो पाठशालाक गुरूजी पार उतरबा लेल अएलाह तँ चाँदिया ओ सनद पढ़बओलक । गुरूजी बचलनि—

''श्री श्री मुकुन्द देवक राज्य कालक सातम वर्षक फागुन कृष्ण पक्षक द्वितीया तिथिकेँ दू घड़ी बेर चढ़ला पर गोविन्दपुरक जमीनदार रामचन्द्र मंगराज महाजन स्वयं एही गामक निवासी वैश्यसुत शाम साहूकेँ देल सनद । ई सनद एहि हेतु लिखि देल जे हमर पुत्र भीमा साहूक विवाहक हेतु अहाँसँ दस रुपैया कर्ज लेल, जे अगिला पूसमे हमर खरिहानसँ अपनेक बखारमे गउणीसँ प्रचलिक भाओक अनुसार धान जोखि कए ओकर सूदिमे ओकरे आधा अथवा मूल 'माण' क आठ बिस्वाक परिमाण जोखि लेब । ताहि हेतु ई सनद प्रमाण थिक । एकर गवाह छथि चन्द्र सूर्य आ दसो दिक्पाल ।''

तहिआसँ तेरह दिन धरि चाँदिया बेहेरा नाओ खेबैत काल एक बेर प्रतिदिन ओहिठामक पानिकेँ निहारि लेल करैत छल ।

चौबीसम परिच्छेद

हत्याक मामिलाक जाँच

बेर पहरभरि वा लगभग छओ घड़ी भेल होएत । आइ बुनछेक अछि । गोपी साह् दोकानदार एकटा फाटल-चिटल गीरह देल कारी चेथरा-सन अँगपोछा माथ पर रखने दोकानक पथिआ कान्ह पर आ फराठी हाथमे लेने दोकान पर आएल । दोकान खोलि खुजलाहा भाग पर दृष्टि देलक । जे देखलक ताहिसँ मानू ओकरा मूर्च्छा आबि गेलैक । ठकमूरी लागि गेलैक, जतए छल ओतहि खाम्ह-जका ठाढ़ रहल । बकार बन्द भए गेलैक । ने कहिओ एहन देखने छल आ ने सुनने छल । एक स्त्री मुइल पड़लि छलि, चार दिस आँखि निपोड़ने उतान । चारि आँगुर जीह बाहर भेल । पूरा घर शोणिते-शोणिताम । पात शोणिते-शोणिताम, चूल्हाक मुह शोणिते-शोणिताम, भातक कोहा शोणिते-शोणिताम । लगैत अछि जेना केओ शोणितक फुचुक्का मारि-मारि पूरा घर आ देबालकेँ रँगि देने हो । गोपी दौगल-दौगल गाम पर गेल आ पूरा खेरहा सुनओलक । गौआँसभ देखबा लेल दौगल । गामक चौकीदार संतिया जेना फाँड़ी (नाका) खबरि देबा लेल दौगल । मक्रामपुरक बालागस्ती नाका गोपालपुरसँ डेढ़ कोस दूर । तेसर पहरमे बालागस्तीक जमादार शेख तुराव अली सिपाही पित्तू खाँक संग घटना-स्थल पर पहुँचलाह । शेख तुराव अली बड़ रोबदार हामिक छथि । लग-पासक चौकोसीक लोक हुनक नामेसँ थर-थर कँपै अछि । गाभिनि गाए डगर छोड़ि कात भए जाइत अछि । जमादार साहेब सरजमीन पर घटनाक निरीक्षण लेल पहुँचि दाढ़ी आ नाक घुमबैत लासकेँ देखए लगलाह । स्त्रीक शव छल । पटंबरी पहिरने छलि । हाथ आ गरामे सोन आ चाँदीक कतेको गहना छलैक । गरदनि ठीक ओहिना छेबल छलैक जेना पठानक जब्बह कएल मुरगीक होइत छैक । शोणितमे सराबोर एक अस्तूरा कातमे पड़ल छलैक । शव कनेक-कनेक सड़ए लागल छल । छत्ता पर बैसल मधुमाछी जकाँ हजारक हजार माछी काटल घाओ पर बैसल छल आ भन-भन करैत पूरा दोकान उड़ि रहल छल । लास चित्त पड़ल अछि, चारि आँगुर जीह बाहर कएने अछि आ ओकरा कटैत दाँत पर दाँत चढ़ल छैक । आँखि औखन कोड़ो देखि रहल अछि । खूजल केश शोणितसँ लथपथ अछि । दूनू कात चारि आँगुर मोट शोणित जमि कारी भए गेल अछि । ओहिसँ एक तीव्र दुर्गन्ध आबि रहल छैक । दूनू गाल कथ जकाँ डम्फ भए गेल अछि । पेट उड़ीदक बड़ जकाँ फूलि गेलैक अछि । बुझेलैक जेना एक व्यक्ति एक हाथसँ ओकर झोँट पकड़ि आ एक पाएरसँ ओकर मुह दाबि दोसर हाथमे अस्तूरा लए ओकर गरदनि रेतलक अछि । गरदनि रेताइत काल स्त्री पाएर पटकने होएत, जाहिसँ कोठलीमे खाधि

भए गेलैक अछि । दुर्गन्ध आ डेराओन लासक कारणेँ जमादार बेशीकाल ओतए अँटकि नहि सकलाह; बाहर आबि उपरे-उपर अपन ज्ञानबलसँ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे ई मामिला हत्याक तँ थिक, परंच डकैतीक नहि । डकैती भेल रहैत तँ शवक देह पर ई गहना नहि रहैत । जमादारक हुक्मसँ दू टा हाँड़ी (डोम) शवक टाँगमे डोरी बान्हि घीचैत नदीक बछेरमे लए गेल । घीचैत काल पटंबरी खोलि लेल गेल, जाहिसँ निवस्त्र शव आरो भयाओन लगैत छल । सरकारक ओहिठाम पठएबा लेल जमादार शवक उपर सँ सभटा गहना खोलबाए झोरामे रखबा लेलनि । पाएरमे काँसाक काड़ा मात्र रहए देलनि । तँ हाँड़ी कुरहरिसँ पाएरक छाबा काटि ओकरा बाहर कएलक आ अपनहि राखि लेलक ।

अगिला दिन भोर खन मामिलाक जाँच-पड़ताल शुरू भेल । लगपासक पाँच गामसँ सिपाही आ चौकीदार सन्दिग्ध लोकसभकेँ पकड़ि । अनलक । सभ घटना-स्थल पर आनल गेल । जमादार साहेब बड़क गाछतर बैसि जाँच शुरू कएल । तीन-चारि सए सन्दिग्ध लोक पकड़ि आनल गेल छल । मुदा सभकेँ जमा कए राखल नहि गेल । पुछारीक बाद लोक छुटि-छुटि जाइओ रहल छल । सन्दिग्ध लोककेँ आनि पहिने शवक निकट बैसाए कए राखल जाइत छल । शव फूलि चौगुना मोट भए गेल छल । जीह कोसा-सन लागि रहल छलैक । दुर्गान्धिक बात छोड़ू, निवस्त्र स्त्रीमूर्ति तँ सरिपहुँ अछि, परंच तरबा तँ एकरा छैक नहि, तखन चलैत कोना रहल होएतैक ? राक्षसी तने थिक ? सन्दिग्धकेँ बेशीकाल धरि शवक निकट बैसए नहि पड़ैत छलैक । दुर्गन्धि आ आदंकसँ तुरन्ते जमादारक सोँझा आबए पड़ि जाइत छलैक । बड़क गाछ तर जमादारक कचहरी लागल छल । नदीक बालु-भरल तटपर दस-पन्द्रह गंडा गिद्ध एकटक ध्यान लगओने बैसल छल । किछु गिद्ध उड़ि-उड़ि निकट आबि जाइत छल । पएरक तरबा लेल एक दोसरासँ नोचा-नोची आ कटाउझ कए रहल छल । एतबेमे एक गीदर आएल आ ओहि दूनूसँ छीनि लेलक । गिद्ध हटि कए पाँखि समेटि बैसि गेल । चारि हाँड़ी गमछासँ नाक बन्हने कान्ह पर लाठी लए कुकूर आ गिद्धकेँ रोमि रहल छल । जमादार अनेक लोकक बयान लिखि लेलनि ।

दोकानदार गोपी साहु इजहार देलक, "जी, हमर तँ तीन हीस जिनगी बीति गेल एक हीस रहल अछि, आब एहि अवस्थामे हम की फूसि बाजब ? आइ एकादशी थिक, मुह मे जलो नहि देलहुँ अछि । एहि विष्णुवृक्षक नीचा सत-सत कहैत छी । हम एहि प्रसंग मे किछु नहि जनैत छी । छओ मासँ हम गाम पर रोगाह छी, दोकान पर तँ अबितो नहि छी ।"

घटबार चाँदिया बेहेरा इजहार कएलक, "वर्षा आ झाँटक कारणेँ लोक नदीपार नहि करैत अछि । तँ हम चारि दिनसँ एम्हर अएबे नहि कएलहुँ ।" एहिना गामक कतेको लोक इजहार देलक ।

बेर खसि पड़ल । गाममे आर लोक नहि छल । सभक इजहार लए लेल गेल । जमादार आ सिपाही बैसि कए विचार करए लागल जे मामिला काल्हिओ चलाओल जाए कि आइए समाप्त कए लेल जाए । तखनहि डारि पर सँ एकटा चील्ह चटक कए देलक । ताहिसँ जमादारक आधा दाढ़ी उज्जर भए गेलनि । तोबा-तोबा करैत जमादार साहेब ठाढ़ भए

गेलाह । गिद्ध दिस ताकि कम्बखत, बेकूफ, हरमजादा आदि प्रचलित सम्बोधनक उच्चारण कएल ओ तमसा कए गारि पढ़वामे प्रवृत्त भए गेलाह । चौकीदारो गिद्धकेँ गारि पढ़ए आ ढेपा मारए लागल । जमादारक नमड़ल दाढ़ीकेँ धोबामे तीन बधना पानि लागि गेलनि ।

मामिलाकेँ समाप्त करबाक उद्देश्यसँ जमादार पुन: बैसि लोकसभसँ कहलनि, ''सुनैत जाइ जाउ । केओ जनैत-चिन्हैत नहि छैक । लगैत अछि, ई कोनो बटोही छलि । एकर हत्या नहि भेलैक; एकरा साँप कटलकैक अछि ।'' गोपी साहु दोकानदार आगू आबि बाजल, ''धर्मावतार, साँपक एहिठाम बड़ बेशी प्रकोप छैक। नहि जानि बाढ़िमे कतएसँ हजारक हजार साँप एहिठाम आबि जाइत अछि । साँपक आतंकसँ तँ एहिठाम गाम उपटि गेल । हम काल्हि एहिठाम आएल छलहुँ, देखलहुँ जे एक बड़का टा पनिआ दराध बुलि रहल अछि । हम डरेँ पड़ा गेलहुँ ।''

छड़ीदार मुटुरू मलिक बाजल,''धर्मावतार, ठीके एहिठाम बड़ साँप अछि । हम एक दिन एही बाटेँ हजूरक ओहिठाम जाए रहल छलहुँ । एही गाछतर पन्द्रह टा नाग सूतल छल । हम देखितहि लंक लेलहुँ ।'' मूँगपुर मौजेक छड़ीदार बुधेइ धपट सिंह कहल, परसुका राति जखन ओ स्त्री एहि घर मे सूतलि छलि, तखन द्वारिक बाहर एक बिखधर घूमैत रहए ।''

जमादार सभक बयान लिखि लेलनि आओर कोनो पछिमाहा भिखारि बटोहीक गाम मे भीख माँगि घुरैत रहबाक आ गत राति गोपालपुर मौजेमे ओकरा साँप द्वारा काटल जएबाक, आ शव पर साँपक दाढ़ होएबाक, आ कोनहुँ आन प्रकारक चोट अथवा घावक चेन्ह शव पर नहि होएबाक, आ कोनो अन्य प्रकारक सन्देह तथा एहि मृत्युक प्रसंग कोनो दाबी नहि होएबाक एक रिपोर्ट केंदरापाड़ाक दरोगाक ओहिठाम पठाए मामिला समाप्त कए देलनि । जमादारक आदेशसँ चारि हेला शवक गरामे रस्सी बान्हि खीचैत ओही नदीमे भसिआ देलक । घटबार चाँदिया बेहेरा देखलक जे एहू शवकेँ ठीक ओही ठाम गोहि पकड़ि लए गेल जाहिठाम ओहि बटोहीकेँ पकड़ने रहए ।

डोँगीमे नदी पार करैत काल जमादार सिपाहीसँ कहलनि, ''देखलेँ ने । एतेक पैघ मामिलमे दुइओ सए हाथ नहि आएल ।'' सिपाही बाजल,''भगवाने मालिक छथि, जेहन हुनक इच्छा ।''

गोपी साहु ओहि दिनसँ दोकान पर जाएब बन्द कए देलक। काल्हि तीन दिन धरि बदरी लधने रहल । ओहि बदरीमे दोकानक ठाठ खसि पड़ल । दोकानक कोन कथा ओ बाट सेहो कटि कए भासि गेल । चाँदिया बेहेरा आध कोस नीचा हटि हरिपुरक समीप डोँगीबान्हब शुरू कएलक । रातिकेँ के कहए, दिनहु मे डरेँ ओम्हर नहि जाइत अछि । ओहि बड़क गाछ पर बैसल चुड़ैनि डारिकेँ हिलबैत रहैत अछि । कतेको गोटे प्रचण्ड रौदमे ओहि चुड़ैनिकेँ बालु उड़ा धुरखेल करैत देखलक अछि । ओहि स्थानक नाम आब गोपालपुर घाट नहि रहल । लोक ओकरा आब 'चुड़ैनिआँ मैदान' कहैत छैक ।

पचीसम परिच्छेद

मंगराजक घरक हाल

छओ बिगहा आठ कट्ठा की ? कहल जाइत अछि, विश्वप्रसिद्ध हीरा कोहिनूर जकरा लग रहैत छैक तकर वंशक अन्त कए दैत छैक । अल्लाउद्दीनसँ रणजीत सिंह धरि एहि बातक ज्वलंत साक्ष्य वर्त्तमान अछि । परन्तु सएह कोहिनूर जाहि दिन हमर पूजनीया महामान्या प्रत्यक्ष कमलास्वरूपा श्वेतद्वीपवासिनी भारतेश्वरीक शिरोभूषण बनल तहिआ सँ बिलेतक महिमा एहि महीतल पर दिन-दिन व्याप्त होइत गेल अछि । जे विष आनक हेतु प्राणघातक होइत अछि सएह देवाधिदेव उमापतिक कंठस्थ भए हुनक महादेवत्वकेँ प्रकाशित करैत अछि । सारांश ई जे जँ उपयुक्त पदार्थ उपयुक्त स्थान पर प्रयुक्त हो तँ कोनो टा अनिष्ट नहि करैत अछि । बड़का वस्तुक गप छोड़ू, तुच्छसँ तुच्छ वस्तु एहि छओ बिगहा आठ कट्ठा जमीनहिकेँ देखू । लोक कहैत अछि, गोविन्दपुरक निचला बाधक ई छओ बिगहा आठ कट्ठा खेत-सन उपजाहु आन कोनो टा खेत नहि अछि । किन्तु अछि ई भारी अलच्छ । बाघसिंहक वंश बिलटि गेल । सारियाक सम्पत्तिओ गेलैक, जानो गेलैक । आब मंगराजक वंशक हाल देखू । ओहो ओही विनाशक बाट पर आबि गेल अछि । खेत लेना छबो पख, छबो मास नहि भेल कि देखि लिअ हुनकर दशा ।

मंगराज जहिआ गेलाह तकर चारिम दिन भोरे-भोर देखल गेल जे हुनक आराम-घर चारि ठाम ठेहुन-ठेहुन भरि खूनल अछि । ओहि भोरहिसँ हबेलीमे चम्पा आ गोविन्दा देखल नहि गेल । ब्रह्मपुरक चओरमे ओहि दूनू गोटाकेँ आगू-पाछू भेल कटक जाइत जेसभ देखने छल से गाम आबि ई गप्प छोड़लक । बेटासभ जे बापक डरेँ सकदम रहैत छलथिन, तनिकर पओबारह छनि । जेठ बेटाकेँ किछु-किछु सनक तँ पहिनहुँ छलनि, आब दिन-राति गाजा सोटैत मानू पूरा बताह भए गेल छथि । मझिला आ छोटका बेटाकेँ नाको पोछबाक सुधि नहि रहैत छनि । मकर संक्रांति आबि रहल छैक तँ ओ दिन-राति बटेर बझएबामे लागल रहैत छथि । दिनराति धानक बिकरी होइत रहैत अछि ।

आइ गाम सुगबुगा उठल अछि । मंगराजक घर-आँगन नीलाम होएत । पहर दिन बितैत-बितैत पुलिस जमादार, सिपाही छड़ीदार आदि आठ दस गोटे मंगराजक हबेलीक दरबज्जा पर थहाथहि करए लागल । जज साहेब मंगराजकेँ हजार टाका जुर्मानाक दंड देने छलथिन्ह । से आइ हुनकर चल सम्पत्ति नीलाम कए जुर्मानाक टाका ओसूल कएल जाएत ।

जमादार घरमे पैसि चीज-वस्तु उठा-उठा दोरुक्खामे जमा कए रहल छथि । खौंतामे धामन पैसि गेला पर चिड़ैक बच्चाक जे हाल होइत छैक तेहने हाल पुतोहुलोकनिक छनि । घरसँ बहरा-बहरा हबेलीक पछुआड़क बाड़ीमे छटपटा रहलि छथि । बेटामे सँ एकोटा गाम पर नहि छनि । मुनीमजी किछु कहबा-कहबा पर भेलाह कि जमादारक गुड़ारल आँखि देखि सकदम भए गेलाह, आ आब गाल पर हाथ धए दोरुक्खामे बैसल छथि । मुकुन्दा सभक बात पर 'जी हजूर','जी हजूर' करैत थाकि गेल अछि ।

दोरुक्खामे चीज-वस्तु नीलाम कएल गेल । नीलाम तँ नीलाम थिक । दुइए माटि बहल बरदक जोड़ाक दाम साढ़े चारि टाका वा पाँच टाका कहिआ के सुनने छल ? लगहरि गाए एक-एक टके आ ताहि संग बाछी फोकट मे । शुरूमे तँ गामक लोक डाक नहि बजैत रहए मुदा पाछू दाम देखि एक दोसरा पर उपरा-उपरी करए लागल । जमादार तँ नीलाम कए रुपैया लए गेलाह मुदा जे अन्य माल-जाल, गाए-बरद बाँकी रहि गेल से सभ बहबाड़ि भए एहि पाँतरसँ ओहि पाँतर, एहि गलीसँ ओहि गली बौआए लागल । ओकरा के बान्हि-छेकि राखत । कतेक तँ बंगला गोआरक गाँठमे गेल आ कतेक अनेर बौआइत-बौआइत आन-आन गाममे बन्हा गेल । हरबाहकेँ दू-दू वर्षक दरमाहा बाँकी छलैक । सुनैत छी जे ओ सभ गाछ-बिरिछ, नारिकेरिक बाड़ी आ माल-जालसँ अपन पौना ओसूलि लेलक अछि ।

आधा कातिक बीति गेल, मुदा आँसुक खीर भगवतीकेँ नहि चढ़ल । पाण हरबाहसभ पड़ा गेल । पड़एबेटा नहि कएल, गाइक नाँगड़ि पकड़ि-पकड़ि पार उतरि गेल ।

गामक तिल-सन गप्प हाट पर ताड़ भए जाइत अछि, से कथा फूसि नहि । चारूकात ई बात उड़ि गेल अछि जे साहेब जमीनदारी मंगराजसँ छीनि एक ओकीलकेँ दए देलनि । ओकील साहेब अगिला मकर-संक्रान्ति दिन दू सए सिपाही आ पाँच घोड़ा सहित पालकी चढ़ि गाम दखल करए आबि रहल छथि । प्रजा सुनलक तँ बाजल,"कोउ नृप होहु हमहि का हानी, चेरि छाड़ि नहि होएबि रानी । केओ घोड़ासँ कहलक, हे अश्व ! हे अश्व, तोरा चोरा कए केओ लए जएतहु । घोड़ा बाजल, ताहिसँ हमरा की ? दाना-पानि एहूठाम, दानापनी ओहूठाम । मुदा शत्रुपक्षक लोक बड़ प्रसन्न अछि, किएक तँ ओसूली नहि भेलैक ततबे नहि, मंगराजक आदमीसभ डरेँ आ लाजेँ गाम छाड़ि-छाड़ि पड़ाएल । दुष्टलोक सभ मंगराजक आदमीकेँ देखैत अछि तँ गाछ-बिरिछकेँ सुनाए-सुनाए फदका पढ़ए लगैत अछि ।

छबीसम परिच्छेद

बाबाजी ललिता दास

कालिहएसँ गाममे अनघोल मचल अछि । हाट, बजार,बाट-घाट, वर्त्तन मजबाक इनार-पोखरि, ढेकी-घर, जाँत-घर,जतहि जाउ ततहि एके गप्प । कतहु कनफुसकी होइत तँ केओ चिचिआ-चिचिआ बजैत । कोनो कुशल गप्पी माथ हिला-हिला, हाथ चमका-चमका ओएह कथा कहि रहल अछि, आ पाँच-सात श्रोता स्थिर मन आ स्थिर चित्तसँ सुनि रहल अछि । गप्प नाना रूप धारण करैत पसरल जाए रहल अछि । मुदा हम अहाँकेँ केवल सारांश सुनबैत छी ।

जहिआ मंगराज कटक गेलाह तकर सातम दिन एकटा महात्मा गोविन्दपुर अएलाह आ एतहि भागवत-घर स्थापित कए लेलनि । बाबाजीक नाम थिक ललिता दास । अधेड़ बएस, रंग पिण्डश्याम, देह थुलथुल, माथ मुड़ल, बीचमे तारबूजक डंटी जकाँ टीक । गरामे पाँच छड़ तुलसीक मोट-मोट कंठी । बाबाजी मुखान्धहिमे उठि प्रातःकृत्यसँ निवृत्त भए जाइत छथि आ आधा नाक पर सँ केश पर्यन्त त्रिपुण्ड तथा डेड लेटर आफिससँ घुरल चिट्ठी जकाँ सर्वांग चानन-टीका कएने हरिनाम सुनएबा लेल गाम दिस चलि पड़ैत छथि । कौपीन पहीरने, ओकर उपरसँ रामनामा ओढ़ने, हाथमे झोरी लटकओने महात्माजी गाममे घुमि-घुमि लोककेँ हरिनाम सुनबैत छथि । साँझमे खजुरी पर भजन-कीर्त्तन करैत छथि, आ तकरा बाद चैतन्य-भागवतक परायण । साँझ कए भागवत-घरमे बहुत लोक जुटि जाइत अछि । गामक दस-बारह गोट बूढ़-बुढ़ानुस ताँतीक संन्यास लेबाक गप्प सेहो उठैत अछि । महात्मा नितान्त निर्लोभ छथि । केओ किछु दैत छनि तँ 'हरे केष्ट, हरे केष्ट' कहि उठैत छथि । एहन साधु कहिओ केओ नहि देखलक । आइ दू दिन भेल, महात्मा कतहु अन्तर्धान भए गेलाह अछि, आ मंगराजक हबेलीक मरुआक खोज हुनका सङ्गहि सेहो भए रहल अछि । केओ-केओ बजैत अछि जे ओ महात्माक संग वृन्दावन धाम चलि गेलि अछि । जँ सन्ते ओ साधु-महात्माक सङ्ग तीर्थ करए गेलि हो तँ हम ओकर चरित्रक विषयमे कोनो मन्तव्य व्यक्त कए साधु आ साध्वीक निन्दा-जनित महापातक अर्जित करबाक इच्छुक नहि छी । केवल एकटा बात सुनैत छी तँ मन कोनादन करए लगैत अछि । मरुआ छोटकी बौआसिनिक बड़ विश्वासपात्र छलि । सतत हुनके लग रहैत छलनि । मरुआक निपत्ता होएबाक संगहि छोटकी बौआसिनिक कनतोड़ीमे राखल गहना सेहो निपत्ता भए गेल । बिआहक समय नैहर-सासुरमे सोहाग ओ मुहदेखनामे भेटल टाका सेहो सभ टा ओही

कनतोड़ीमे छलनि । कनतोड़ी मुह बओने अछि, वस्तु गाएब । एहि चीज-वस्तुक गाएब होएबाक प्रसंगमे मरुआक नाम लेल जाए रहल अछि । छोटकी बौआसिनि तँ चिकरि-चिकरि कहि रहलि छथि । सभ केओ कानि-खीचि चुप भए गेल । मरुआकेँ ताकए के जाएत ?

जाहि दरबाजा पर दिन हो कि राति लोकक भीड़ लागल रहैत छल ओतए दूभि जनमि गेल अछि ।

बूझू जे किछुए मासक भीतर ओहि ठामक सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, गौरव आ आधिपत्य सभ किछु स्वाहा भए गेल ।

"निर्जगाम यदा लक्ष्मी: गजभुक्तकपित्थवत् ।"

सताइसम परिच्छेद

अपूर्व मिलन

लोक अपन-अपन कर्मक फल भोगैत अछि । नीक वा अधलाह, जेहन कर्म करब तेहन तकर फल अवश्य भोगए पड़त । हे बुद्धिमान्, अहाँ अति निर्जन एकान्तमे अत्यन्त सतर्कताक संग कोनो कर्म कए संभवत: ई सोचैत होएब जे मनुष्यक दृष्टि-परिधिसँ बाहर खेतमे पाड़ल बीआ केओ नहि देखैत अछि, परन्तु ओहि बीआसँ उत्पन्न गाछ मनुष्यक नेत्रक अतिक्रमण कए सकए तकर कोनो टा उपाय नहि अछि । अहाँ जे बीज रोपने छी तकर फल अहाँकेँ वा अहाँक सन्तानकेँ कहिओ-ने-कहिओ, भोगहि पड़त । हे बलवान् हे धनवान्, हे गर्वी, अहाँ जकरा अति सामान्य व्यक्ति मानि तुच्छ बुझैत छी एक दिन ओकरे हाथेँ केहन-केहन काज सिद्ध भए सकैत अछि से अहाँ नहि जनैत छी । बंगाल, बिहार आ उड़ीसाक सूबेदार एक सामान्य साधुक प्रति अत्याचार कए ओकर परिणामसँ अपना केँ बचाए नहि सकल । सिख गुरु गोविन्द सिंह एक सामान्य मुसलमानक उपकार कएल, जाहिसँ ओ प्राण-संकटसँ मुक्ति पओलनि । अस्तु, छोडू एहि बड़का-बड़का ऐतिहासिक घटनासभकेँ । बाघसिंहक ओहि ठाम चौकीदारी करबाक कारणेँ रतनपुरक जाहि डोमकेँ मंगराज फँसा कए जहल पठबओने छलाह । घटना-चक्रक घुमलासँ आइ हुनका ओकरहि हाथेँ लांछित होअए पड़ि रहल छनि ।

रतनपुर मौजेक डोमसभ जखन प्रथम दिन मंगराजकेँ जहलमे देखलकनि तँ "आएल जाए बन्धु, आएल जाए मालिक, आएल जाए ससुर महाशय" कहि-कहि उपहासपूर्वक हुनका प्रणाम कएलकनि । कोनो पैघ लोक जखन जहल अबैत अछि तँ पुरना बन्दीक सरदार किछु पएबाक आशासँ ओकरा तंग करैत अछि । मंगराज जखन रतनपुरक लोकक संग तेल परए जाथि तँ उपरसँ लात-मुक्काक बरखा होअए लगैत छलनि ।

जाह, एकटा गप्प तँ बिसरिए गेलहुँ । फूसि गबाहीक देबाक आरोपमे गोबरा जेना केँ एक वर्षक सश्रम कारावासक सजाए भेटलैक ।

दिन ककरो बाट तकैत बैसल नहि रहैत अछि, निरन्तर समान गतिएँ प्रवहमान रहैत अछि । मंगराजकेँ कोल्हु पेड़ैत देखि दिन अटकल नहि । कहबी छैक, सुखक दिन घोड़ा चढ़ि अबैत अछि, आ दुखक दिन हाथी चढ़ि जाइत अछि । अहाँ जे कही, दिन अपन काज नीक जकाँ बूझैत अछि । ओ आठ पहरमे पलो भरि अड़ैत नहि अछि । एक-दू-तीन गनैत मंगराजक जहलक अवधि दू मास कटि गेल ।

ओ जाहि बैरकमे सुतैत छलाह तकर मरम्मतिक प्रयोजन भेलैक तँ ओ दोसर बैरक मे आनल गेलाह । जहलक एक-एक बैरकमे माटिक आठ-आठ टा चवुतरा बनल रहैत अछि । रातिमे एही पर कम्बल बिछा-विछा कए बन्दीसभ सुतैत अछि । संयोगवश रतनपुर मौजेकं छओ डोम, गोबरा जेना आ मंगराज ई आठ व्यक्ति एकहि बैरकमे पड़लाह ।

चारि दिन बितलैक कि मंगराज पर एकटा भारी संकट आबि पड़ल। आइ-काल्हि । कटकक दरगाह बजारमे जे एकटा पागलखाना अछि, से पहिने नहि छल । पहिने बताहो सभ जहलेमे राखल जाइत छल । मंगराज जाहि कोठलीमे रहैत छलाह ताहिसँ सटले पागल-घर छलैक । ओहिमे एकटा प्रचंड बताह रहैत छल । ओ राति भरि सुतैत नहि छल । "गए सारिया, गए सारिया, हमर ओ छओ बिगहा आठ कट्ठा ! छओ बिगहा आठ कट्ठा !" इत्यादि किदन-कहाँदन गबैत खन भोकाड़ि पाड़ि-पाड़ि कनैत खन हँसैत रहैत छल । ओ मंगराजकेँ देखितहिँ हुनका हबकबा लेल दौड़ि आवए । सिपाही-पहरूदार सभ ओकर धर-पकड़ करैत छल । ओहि दिन अकस्मात् दौड़ल-दौड़ल आएल आ मंगराजक नाक हबकि पड़ाए गेल ।

आइ जहलक फाटक पर भारी कलमल मचल अछि । दू टा मरीज पड़ल अछि । एकटा जे अबतबमे छल आइ भरि गेल । दोसराकेँ देशी डाक्टर आ कम्पाउन्डर धो-पोछि पट्टी बान्हि देलक अछि ।

डाक्टर साहेब नओ बजैत आबि शवकेँ देखल आ ओकर अंग-प्रत्यंगक परीक्षा कएल । जहलक दरोगा रजिस्टर देखि बाजल:

लाश-९७७ नम्बर बंदी, गोबरा जेना ।

मरीज-९५७ नम्बर बंदी, रामचन्द्र मंगराज । मरीजक अंग-अंग यत्र-तत्र फूलल अछि । नाकक पूड़ा फाटल, जाहिसँ शोणित अविरल बहि रहल अछि । कौखन-कौखन शोणित बोकरिओ रहल अछि । डाक्टर साहेब आपसी मारि-पीटकेँ रोगक कारण मानल ।

बड़ जाँच-पड़ताल भेल । बड़ हल्ला-गुल्ला भेल । मुदा निर्णय नहि भए सकल जे के मारलकैक । मरीजमे बजबाक शक्ति नहि छलैक । केवल एतबे ज्ञात भेलैक जे काल्हि दोपहर रातिमे पहरा परक सिपाही किछु धमाधम-धमाधम सन शब्द सुनने छल जेना कि ओ अपन बयानमे कहलक । छओ गोट डोम गबाही देलक जे दूनू बन्दी मे लाठी-लठौअलि भेल रहए ।

मामिलाक जाँच समाप्त भेल । डाक्टर साहेब आदेश देलनि, रोगीक बचबाक संभावना कम छैक, तेँ ओकर संबंधी चाहथि तँ उपचार लेल गाम पर लए जा सकैत छथि । थाना द्वारा साहेबक आदेश गोविन्दपुर गाम पहुँचाओल गेल ।

धानक बखारी पेनी धरि पोछि-पाछि बेटा सभ साफ कए देने रहथिन । ओ सभ अपन बापकेँ नीक जकाँ चिन्हैत रहथि । ओ जँ घुरि अएलाह तँ बुझू कल्याण नहि । बुधिआर

लोक कतहु विपत्तिकेँ नोति आनए । ''आत्मानं सततं् रक्षेत्'' ई नीति-वचन ककरा नहि ज्ञात होएतैक ?

बुढ़बा हरबाह मुकंदा बड़ संकटमे पड़ल । ओ जेना-तेना दू टा बाछा आ चारि-पाँच गोट छोट- छीन समान बेचि-बिकिनि किछु टाकाक ओरिओन कएलक आ एक खरखड़िया लए निछोह कटक दौगल ।

उपसंहार

तीन मास पहिने जतए मलिकाइनि तुलसी-चौरा लग पाड़लि छलीह तीन मास बाद ठीक ओही ठाम ठीक ओहिना उत्तर मुहेँ मंगराज सेहो एक पुरना पटिआ पर पाड़ल छथि । हाथ-गोड़ कठुआए गेल छनि । आँखिमे पिपनी नहि खसैत छनि । एकटक ऊपर ताकि रहल छथि । शिवा मोर आ कार्तिक नायक जे दू वैद्यय लागल रहथिन से काल्हि राति जबाब दए चलि गेलाह । आब गोपिया ताँती हाथ लगओलक अछि । गोपिया ताँती, उर्फ गोपी कविराज, बड़ नामी आ कुशल वैद्य अछि । भरि परोपट्टाक लोक ओकरा चिन्हैत छैक । दिन-राति कखनहु फुरसति नहि भेटैत छैक । भोरे तौनी डाँड़मे भिड़िओने, कान्ह पर लाल अँगपोछा रखने, काँखतर औषधंक बटुआ लटकओने आ हाथमे मकुआबला डेढ़हत्थी लेने कारनीकेँ देखए बिदा भए जाइत अछि । बटुआमे बहत्तरि जड़ी-बूटीक बड़िआसभ पृथक्-पृथक् लत्तामे सैतल राखल रहैत अछि । गोपीक पीसा नामी वैद्य छलाह । हुनकर औषध रोगीक देहमे चमकी पाथर जकाँ लागि जाइत छलैक । हुनकर हाथक तैआर औषध गोपी आइ धरि जुगुता कए रखने अछि ।

गोपी रोगीक ओछाओनक दहिना कात बैसि बड़ी काल नाड़ी देखैत रहल । तखन उपर ताकि, आँखि मुनि, दाँत पर दाँत बैसाए व्याधिक अनुमान कएलक । मुकुन्दा कविराजक मुह टुकुर-टुकुर तकैत रहल । पुछलक,"की देखलिअनि, कविराज ?" कविराज गंभीरतासँ स्थिर भए बैसि निदान कहए लागल, "अएँ की कहैत छैक जे कण्ठाश्लेष्मा प्रणयिनि जने किम्पुनर्दुरसंस्थे—अर्थात् कंठमे श्लेष्मा आबि गेने प्राण जे अछि से जाइत अछि, आ ओहो जँ दूर चल गेल तँ से फेर घुरि कोना आओत । बेश, दूर चल गेल अछि तँ जाए दिऔक । हम अनका जकाँ कोनो अनभिज्ञ कविराज नहि छी । देखिहेँ व्याधिकेँ हम अँगपोछाक खूँटमे बान्हि लैत छी ।" ई कहि कविराज अँगपोछाक खूँटमे गीरह बान्हि लेल ।

मुकुन्दा पुछलक, "रोगीक कोनो-कोनो अंग फूलल किएक जाइत अछि?" कविराज कहल," अएँ कहैत छै जे 'स्वर्णादष्टगुणं शोथम् ।' मतलब जे कफक तँ गुणे थिक शोथ अर्थात् फूलब । फुलैत छैक तँ फुलए दहक, कोनो चिन्ता नहि । कस्तूरी पेटमे पड़िताहिँ सभ ठीक भए जएतनि । कस्तूरी-तिलक पेटमे जाएत आ तिलक कएल जाएत ।" कविराज मुकुन्दासँ नगद चारि आन कैञ्चा लेलनिआ बटूआसँ पओन तोला कस्तूरी बहार कएल् ।"आब एकर अनुपान (औषधक सङ्ग मिलाए खएबाक वस्तु) चाही । कविराज

कहल,''शास्त्रानुसार-मुस्तकं कटुका रात्री पिप्पली च.... । अर्थात् रातिमे सूँठि, पीपरि, मोथा आ कुटकी ।'' मुकुन्दा पुछलक, ''ईसभ कतेक कतेक चाही ?'' कविराज कहल, ''अनुमानविशेषेण करोति विविधान् गुणान् अर्थात् अनुमान विशेष अर्थात् अधिक कए देलासँ दोहरी मारिजकाँ दूना गुणकारी होइत अछि ।''

एम्हर कविराज रोगक व्याख्या आ औषध व्यवस्था करैत रहलाह, ओम्हर रोगीक हाल बिगड़ि गेल। श्वास क्रमशः तेज भए गेल । दूनू आँखिक कोरसँ दू ठोप बून नोर खसल । मंगराज चारि दिनसँ पड़ल छथि । आकाश दिस टकटकी लगओने छथि । कौखन-कौखन आँखि कनेक मुना जाइत छनि तँ सपना देखि चेहा उठैत छथि आ बड़बड़ाए लगैत छथि— छओ बि--ग-- हा ! स्वर क्षण-क्षण क्षीण होइत होइत आब किछुओ सुनि नहि पड़ैत अछि । एक रत्ती आँखि झँपैत छथि कि आकाशमे भयाओन मूर्ति देखाए लगैत छनि—विशाल मूर्ति, केस छिड़िआएल, वड़का-बड़का दाँत मूर जकाँ चमकैत आ दू-दू हाथक जीह, मुहबओने हुनका खएवा लेल दौड़ल आबि रहल अछि । मंगराजकेँ होइत छनि जेना केओ स्त्री ताँती-टोलमे भगिया ताँतीक ओसारा पर लटाइ नचा रहलि अछि । ओही स्त्रीक मूर्ति पलभरिमे भयंकर आ विकराल रूप धारण कए एहि विकट अवस्था पर पहुँचल अछि । ओएह मूर्ति कर्कश स्वरमे कहैत अछि—हे, हमर छओ-बि-ग-हा--आ-ठ-कट्-ठा ।

एक बेर फेर मंगराजक आँखि झपाएल । देखलनि, कोनो भयंकर नरकंकाल दिगंत मे देह नुकओने, जेना हुनकहि गिड़बा लेल मुह बओने अपलक देखि रहल हो । ओ नीक जकाँ चिन्हाएल । ई मूर्ति ओकर छल, जे अपन खेत छिना गेला पर अनशनसँ सोँठि भए प्राण त्यागने छलि । इहो देखएलनि जे भगिया-सन हजारक हजार बताह घोर करिआ मेघसँ बाहर भए-भए आकाश-मार्गे आबिरहल अछि; सभक हाथमे तरुआरि आ लोहंगड़ छैक । फेर प्रतीत भेलनि जेना सभटा लोहंगड़ एकहि बेर हुनक चानि पर बजरि रहल छनि । मंगराज चिचिआ कए पड़ाए चाहलनि,मुदा देहमे सक्क नहि छलनि । बकारो नहि फूटि रहल छलनि । विवश भए ओ ओहि अशरण-शरण पतितपावन भगवानक पवित्र नाम अपन हृदयक भितरे-भीतर स्मरण करए लगलाह । देखि पड़लनि अनंत आकाशमे सूर्यमंडलोसँ अत्यन्त उपरका लोक मे रत्न-सिंहासन पर केओ ज्योतिर्मयी शांतिमयी आश्रयदायिनी स्त्रीमूर्ति विराजमान अछि । पहिनहु इएह मूर्ति कष्टक समय मंगराजक ओछाओन लग बैसि हुनक देह अपन कोमल हाथएँ सोहरबैत छलि । ई विमानवासिनी लावण्यमयी मूर्ति ओही पूर्व मूर्तिक प्रतिच्छाया थिक । आब ई मूर्ति आँगुरक संकेतसँ मंगाराजकेँ अपना लग बजाए रहल छनि । मंगराजक आत्मा ओही मूर्तिकेँ लक्ष्य कए चलि देलक । मंगराजक हबेलीमे शब्द भेल—हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल ।

117079
9.12.04

फकीर मोहन सेनापति (1843-1918) भारतीय वाङ्मयक प्रतिभासम्पन्न अक्षरपुरुषक नाम थिक । प्रथम स्वाधीनता संग्रामक समय ओ तेरह वर्षक छलाह । विदेशी शासन-व्यवस्थाक विरोधमे खदकैत आ गुम्हरैत जनमानसक तापक निकटसँ कएल अनुभवक साक्षी हुनक समग्र साहित्य अछि ।

फकीर मोहन सेनापतिक उपन्यास *छओ बिगहा आठ कट्ठा* हुनक कालजयी कृतिमे महत्त्वपूर्ण अछि । उपन्यासक विषय-वस्तु, भाषा आ चित्रित चरित्रक जड़ि ततेक तरधरि छैक जे ओहि पर बनल सिनेमा पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त कएलक । मिदनापुरक जमिन्दार शेख दिलवारक ओड़िसा क्षेत्रक सेवक रामचन्द्र मंगराज यमदूत जकाँ लगान ओसूलि, अपन मूर्ख मालिककेँ ओएह रुपैया ऋणस्वरूप दए स्वयं मालमाल होइत छल । मंगराजक प्रपंच आ आतंकसँ परोपट्टामे केओ अबंच नहि रहल । सुधंग तांती दम्पतिक कारुणिक अन्त भेल । मंगराज अपन पापकर्मे जहल गेलाह । पश्चात्तापक प्रचण्ड ज्वालामे झरकैत मंगराजक अन्तो ओहनहि होइत छति । पाप-संगिनी चम्पा अपनहि विश्वासपात्रक हाथेँ कुटनी बनैत अछि ।

फकीर मोहन सेनापतिक कुशल कलमसँ एक करुण कथानक हास्य व्यंग्यक शैलीमे चित्रित भए, मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक बनि गेल अछि । उपन्यासक समाज आब नहि भेटत । ओ सामाजिक अध्ययन-विवेचनक विषय भए गेल । मुदा, मनुष्यक स्वभावक मौलिक तत्त्व आ मूल्यक वर्णन जाहि उत्कृष्टताक संग भेल अछि, भारतीय साहित्यक चरम उत्कर्षक प्रतिमानक रूपमे *छओ बिगहा आठ कट्ठा*'क गुणवत्ता अक्षुण्ण रहत ।

फकीर मोहन सेनापतिक सर्जनात्मक प्रतिभासँ उड़िया भाषा-साहित्यक विभिन्न विधा समृद्ध भेल अछि । ओ उड़िया साहित्यकेँ चारिटा काव्य ग्रन्थ, चारि टा उपन्यास, एकटा कथा संग्रह, आत्मजीवन चरित्र लिखि आत्मकथा साहि हेतु ओ उड़िया भाषा साहित्यमे एक विराट मान्य रहताह ।

अनुवादक रमानन्द झा 'रमण' मैथिलीक छथि । कालक झोंझमे नुकाएल साहित्यिक मणि-माणिक्यकेँ ताकि आ झाड़ि-पोछि, आजुक पाठकक समक्ष आनब हुनक रचनात्मक सक्रियताक उल्लेखनीय विशेषता थिक । मौलिक लेखनक संग अनुवाद कय गोट प्रकाशित छनि ।

Library
MT 891.451 3 Se 55 C
IIAS, Shimla
00117079

ISBN 81-260-0800-0